Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

चैतन्यामृत रसिया

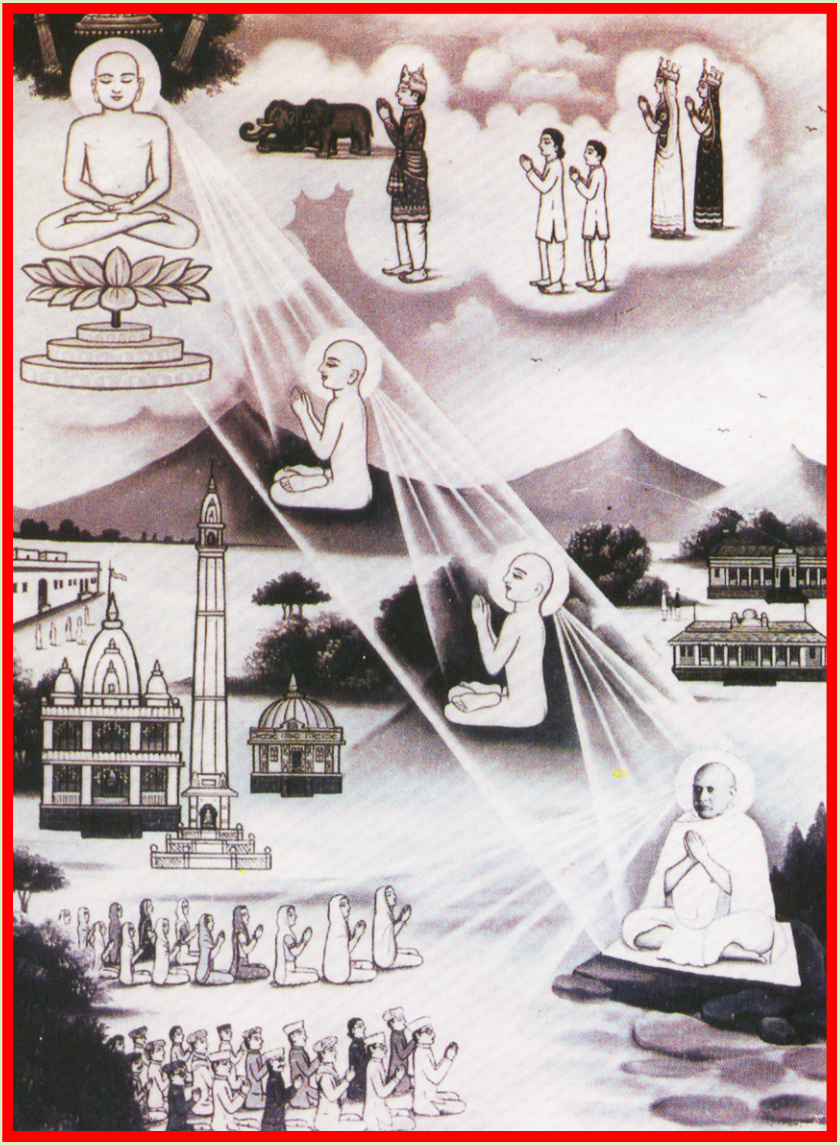

पूज्य शान्ताबेन

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

ॐ

अनन्त चतुष्टय विभूषित
णमो अरिहंताणं
अनंतज्ञान अनंत आनंदमय अशरीरी पद प्राप्त
णमो सिद्धाणं
परम रत्नत्रय एवं विशिष्ट ज्ञान प्राप्त
णमो आइरियाणं
परम रत्नत्रय विभूषित द्वादशांग के ज्ञाता
णमो उवज्झायाणं
परम रत्नत्रय विभूषित परम आत्म-समाधि प्राप्त
णमो लोए सव्व साहूणं

पंचपरमेष्ठी भगवंतों को बारम्बार नमस्कार

धन्य हैं वे अरहंत सिद्ध भगवान जो अपनी पूर्ण शुद्धता प्रगट करके कृतकृत्य हुए हैं, उनको बारम्बार नमस्कार हो।

आचार्य–उपाध्याय–साधु भगवन्त भी अपनी पूर्ण शुद्धताके नजदीक पहुँच गये हैं अतः उन्हें भी बारम्बार नमस्कार हो।

श्री पंचपरमेष्ठी भगवंतों की भक्ति आत्मार्थिता का विशेषरूप से वृद्धि करनेवाली है।

श्री सिद्धस्वरूप की प्राप्ति के लिये अपने उपयोग को बारम्बार अविनाशी ध्रुव पद में लगाने योग्य है। पंचपरमेष्ठी का सच्चा स्वरूप अपने आत्मा को जानने से ही जाना जाता है।

प्रथम श्री देव–शास्त्र–गुरु का आदर–बहुमान आवे तभी जीव पात्र हो जाता है। शास्त्रस्वाध्याय और वैराग्य से मिथ्यात्व का रस मंद पड़ता

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

है। आत्मार्थी को जैसे बने वैसे शास्त्र स्वाध्याय, भक्ति–वैराग्य की वृद्धि करने लायक है। प्रत्येक आत्मार्थी को सभी के प्रति उपेक्षा भाव ही रखने योग्य है।

साधक की तीव्र झंखना

हे सिद्ध भगवान! आप सिद्ध हो गये और हमारी सिद्धता के लिये आप साध्य बनें–ऐसी भावना भाते हुए हम सिद्ध होकर पूर्ण हो।

हमारी आत्मा आपके जैसी सिद्ध हो जाय और अशरीरी होकर व्याधि रहित हो जाय। जन्म–मरण रहित हो जाय। एक ज्ञान से ज्ञायक के आनंद अनुभव स्वरूप ये ही होओ। हे सिद्ध भगवान! हे नाथ! आपने जो प्रगट किया वो हमें शीघ्र प्रगट हो–ये ही हमारी झंखना।

श्री जिनेश्वर की दिव्यध्वनि

श्री जिनेश्वर देव की वाणी महाभाग्य और महापुण्योदय से मिलती है अतः अब अविच्छिन्नधारा–तीक्ष्णधारा से ज्ञान में ले लेना चाहिये, अब प्रमाद नहीं करना, यह प्रमाद चोर खड़े हैं। प्रमाद का आश्रय नहीं लेना वरना स्वभाव का आश्रय करके जिनेश्वरदेव के मार्ग का आश्रय करना चाहिये।

मोहशत्रु पर अतिदृढ़ता से प्रहार करना। दृढ़ता में अपने चैतन्य आत्मा की श्रद्धा तीव्रता से करना कि जिनेश्वर का मार्ग यही है दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

''उपयोग को चैतन्य की ओर मोड़ना ही असिधारा है।''

अनंतबार जिनेश्वरदेवकी वाणी को पाया परन्तु तुमने अपने स्वभाव का पुरुषार्थ किया नहीं, असिधारा से यही पुरुषार्थ करना चाहिये कि

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

मोह–राग–द्वेष पर उपयोग को पटकना चाहिये। वो तूने नहीं किया। अन्दर स्वभाव में उपयोग को लगाना अन्दर में एकाग्र करना। बाहर उपयोग दौड़ता है उसे वापस पलटकर निज की ओर लगाना तब मोह–राग–द्वेष क्षय हो जाते हैं।

अनादि से तूने ये कार्य किया नहीं है अब तेरे पुण्य से ये सब प्राप्त हुआ है। अतः ये कार्य कर ले यही बाकी रहा है। इसके करने से तेरा संसार अल्पकाल ही रहेगा–भवसागर का किनारा सामने दिखेगा उसका भी अन्त आ जायगा और तुझे स्वरूप की प्राप्ति होगी—इसप्रकार से जिनेश्वर की वाणी में आया है।

''जिनेश्वर तणी वाणी जाणी तेणे जाणी छे।''

महापुरुष का योग मिलना–ये महाभाग्य है उनकी तत्त्वरस से भरपूर भरी हुई बात सुनने को मिलना वो भी महाभाग्य है। हमने उनकी वाणी में कहे हुए तत्त्व को ग्रहण किया ये तो महा–महा भाग्य है। अहो! गुरुदेव ने अपने ऊपर परम-परम उपकार किया है। श्री जिनेन्द्रदेव का अद्भुत स्वरूप समझाया, इतना ही नहीं परन्तु साक्षात श्री जिनेन्द्रदेव से भेंट करवाई। बनारसीदासजी कहते हैं कि ''कहत बनारसीदास अलप भवस्थिति जाकी–सो जिनप्रतिमा प्रमाणी जिनसारखी''।

हम ऐसे साक्षात् जिनेश्वरदेव के चरणों में आये। दिव्यध्वनि में आये हुए भावों से शास्त्रों की रचना हुई। चारो अनुयोग में सूक्ष्म भावों को अनोखी रीति से, अपूर्व रीति से समझाया। निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरुओं का स्वरूप अनोखी रीति से समझाया। इसप्रकार से हमें श्री वीतरागी देव–शास्त्र–गुरु का स्वरूप पू. गुरुदेव ने अत्यंत करुणा करके हृदयके भावों को खोलकर बताया है। उन गुरुदेव का धन्य उपकार किसी भी काल में भूलें–ऐसा नहीं है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

भगवान सर्वज्ञ देव की वाणी में क्या आया? इसके लिये पात्र जीव आतुर है–ऐसी जिज्ञासा से चातकवत् आतुर है। जैसे चातक मेघ की राह देखता है, वैसे ऐसी ही जिज्ञासा से मुमुक्षुता से आत्मार्थी तैयार होता है, पात्र जीव वो ग्रहण करता है–ऐसे जीवों के लिए भगवान की वाणी में ऐसे भाव आते हैं। वैसे ही भाव गणधरों की वाणी में भी हैं। आचार्य परम्परा में भगवान की वाणी आती है। कुन्दकुन्द आचार्य, अमृतचन्द्राचार्य आदि सारे मुनिराजों ने शास्त्र की रचना की है, ऐसा लगता है कि खास करके अपने गुरुदेव के लिये ही की है!। ये सभी शास्त्र दिगम्बर आचार्यों के शास्त्र हैं। उनमें कितने भाव भरे है, वो वांचन करके ग्रहण करके भाव निकालकर माल ग्रहण करके अपने को इन शास्त्रों में इतना माल भरा है ऐसे भाव बताये हैं। गुरुदेवने पढ़ना सिखाया, विचारना सिखाया, खाना सिखाया, आनंद लेना भी गुरुदेव ने सिखाया। इतना सारा माल का खजाना तेरे में भरा है। पैतालीस वर्षो में थोक में–माल हमें दिया है उसकी आनंदपूर्वक आराधना करनी, उसका चिन्तवन–मनन करना, सतत आराधना करनी। आचार्यदेव वह माल अपने गुरुदेव के लिये रख गये हैं। जैसे हाथ पकड़कर जगाते हैं वैसे अपने को जगाया है। कहा है कि ये दिगम्बर मार्ग ही सत्य मार्ग है।

श्रुतानन्दी ज्ञानगंगा बहानेवाले श्री गुरुदेव के चरणों में भक्तिरूप से नमस्कार हो।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

धन्य श्री मुनिराज की वैराग्यदशा

भगवान श्री वीतराग देव तो गंभीर हैं, परन्तु आचार्य भगवान भी 'सागरवर गंभीरा', ऐसे गंभीर होते है, रोम रोम में गंभीरता भरी है। सभी बात स्वयं में समा देते हैं। उपसर्ग आये उसका कोई डर नहीं। अनंती समता धारण करके बैठे हैं। ''जैसे हाथी पर कंकड़।'' सहजरूप से समता को धारण कर लिया है। अनेक गुणों के धारक आचार्य शासन के नायक कहलाते हैं।

उपाध्याय :–पढ़ते और पढ़ाते। उनके वचन सुनते ही मिथ्यात्व और कषाय नष्ट हो जाते हैं, ऐसे अमृतवचन उनके होते हैं। पढ़ते और पढ़ाते अन्य को एकदम शांति होती है। अतिशययुक्त वचन पुण्य प्रभाववाले और गुण प्रवर्तक हैं। संघ में धर्मप्रभावना होती है, धर्म की वृद्धि होती है। ऐसे योग्य देश–काल को जाननेवाले हैं।

साधु :–धर्मप्रवर्तक साधु, इनके गुरु तो भगवान ही होते हैं, अन्य कोई नहीं। अंगपूर्व के जानकार जो आचार्य में होते है वे सभी गुण होते हैं। गंभीरपना है, मुद्रा से लगता है कि ये संघ के महा नेता है। धीर गंभीर हैं ऐसे विचक्षण होते हैं, गुणवान होते हैं, पुण्यशाली होते हैं, बुद्धिशाली होते हैं, चारित्रवान–शीलवान होते हैं, मुद्रा से ही भव्यजन समझ जाते हैं कि ये महा समर्थ आचार्य हैं। ऐसा लगता है कि शरीर से ही आचार्यादि मुनिराज जानने में आ जाते हैं। पूरा संघ उनको स्वीकार करता है। चारों संघ के प्रति वात्सल्य होता है। उपशांत, धैर्यवान इत्यादि गुरुपद के योग्य होता है। आत्मध्यान की कैसी सुंदरता और कैसा दिखाव लगता होगा? ऐसे आचार्यदेव के दर्शन करने का भी सुअवसर कब प्राप्त होगा? आज वर्तमान में भी ऐसे समूह विचरते होंगे। बहुत

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शुद्ध......शुद्ध.....शुद्ध.....ऐसे भावलिंगी मुनिराज के संग में रहने को तो नहीं मिला परन्तु उनके दर्शन भी नहीं मिले, ऐसे पंचमकाल में आ गये, प्रभु! भाव से नमस्कार करते हैं हमारे भाव आप के चरण में है, अब हमारा द्रव्य आपके चरणों में पहुँच जायगा।

वन में विचरते है, कोई चिंता ही नहीं, इस देह से भिन्न होकर वन में सभी एकत्रित होकर बैठे हैं—ऐसी अपरिग्रही दशा, ऐसी अकषायदशा, कैसी वीतरागी दशा, ऐसी जगत से निरपेक्षदशा प्राप्त करे तब वीतरागता प्राप्त होती है। स्वयं ही विचारते है कि अब विलंब करने जैसा नहीं है। विलंब करने का समय नहीं है।

ध्यानादि में प्रयत्न करके धीरे-धीरे संन्यास की ओर जाना ये ही मेरा कार्य है। ऐसा निश्चय करना कि मुझे समाधि में लीन होना ही है। ये देह तो अलग होने वाला ही है। अतः भक्तप्रत्याख्यान विधि से मुझे समाधिपूर्वक देह को छोड़ना–इसमें मेरा कल्याण है। मेरी स्मृति तरुण ताजी रहे, ये निर्जरा हो, मेरा मन जरा भी विचलित न हो ऐसी आराधना विशेष बढ़े ये सल्लेखना धारण करना। रत्नत्रय की भावना वृद्धिगत होवे ऐसी सरस बात है।

महामुनिराज स्वयं ऐसी सल्लेखनाकी भावना करते हैं। जिसे सुनने पर सुननेवाले को भी सल्लेखना की भावना में वृद्धि हो, ऐसा बल मिलता है। चारित्र की रक्षा की है। संयम पाला है, शिष्य बढ़ाये हैं अब मैं सल्लेखना में प्रवेश करता हूँ। इससे मेरे सम्यक्त्व आदि की प्रतीति निर्मल रहे—इस तरह आगे बढ़ता हूँ, सभी कर्म क्षय हो जावे ऐसी इच्छा है।

जगत को धर्म सन्मुख प्रवर्तन करनेवाले महामुनिराज की जय हो। शरीर को चलाते हुए समाधिनगर पहुँचावें यही–भावना।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उन आराधक संतो की जय हो।

महामुनिराज जो प्रतिज्ञा करते हैं उस अनुसार यदि आहार मिले श्रावक भक्ति भाव से द्वार–प्रेक्षण करे तथा उनके घर पर यदि कलश हो, महिला कलश लेकर घर के बाहर खड़ी हो तदनुसार यदि आहार दे, रसरहित आहार की ही अधिक भावना हो—ऐसे दंडसहित आहार लेते है। कैसी निस्पृहता है।

आत्मा के स्वभाव का आनंदरस इतना अधिक बढ़ गया। यह केवलज्ञान की भूमिका है, मुनिराज तो केवलज्ञान की तलहटी हैं। केवलज्ञान प्राप्त होगा या पा ही गये है इतनी अधिक ध्यान में लीनता होवे महातपस्वी ऐसी दशा को प्राप्त हुए है। वनजंगल में विचरने वाले मुनिराज को चिदानंद का रस, ज्ञायक का रस बढ़ गया है अतः शरीर का रस घट गया है, शरीर के प्रति उपेक्षा हो गई है यदि वाघ–सिंह शरीर को खाएँ तो भी आर्तध्यान के परिणाम नहीं होते परंतु शुक्लध्यान में लीन होकर केवलज्ञान को प्राप्त करते हैं ऐसी भूमिका है। ऐसी दशा धन्य है। ऐसे मुनिराज जहाँ विचरते होंगे वह देश भी धन्य है। वह गाँव भी धन्य है! वह काल भी धन्य है!

वास्तव में ऐसे सच्चे तपस्वी ही सच्चे गुरु हैं। वे पाँचो इन्द्रियों की आकांक्षा से निवृत्त हैं, किसी प्रकार की लोलुपता, तृष्णा, किसी आकांक्षा से रहित निराकुल अतीन्द्रिय आत्मा के स्वरूप को प्राप्त हुए है।

* चैतन्यधारी महापुरुष जो सिद्ध बनने के कामी हैं, वे ही आत्मा की पूर्णता को प्राप्त करने के कामी हैं। अन्य वस्तु के प्रति उदासीनता है, लगनी एक आत्मा को ही प्राप्त करने की है 'रात–दिन आत्मा के ही उपयोग में लीनता रहती है। गुरुदेव कहते हैं कि केवलज्ञान प्राप्त करने की भूमिका हो तो ही मुनिपना होता है। निर्ग्रन्थ दशा ये भूमिका है

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

इस भूमिका में ही केवलज्ञान प्रगट करते हैं ऐसे पुरुषार्थ की लगनी– ये ही धुन है। आत्मा में ही इतना अधिक रस, इतनी अधिक मिठास लगी है कि अल्पसमय में ही कृतकृत्य होंगे ही।

✻ पू. गुरुदेव बारम्बार फरमाते थे कि मुनिदशा में उपयोग अन्तर्मुहूर्त में अन्दर जाता है और अन्तर्मुहूर्त में बाहर आता है इतनी ज्यादा उग्रदशा है, ज्ञान–दर्शन–चारित्र की उग्रता हो गई है ऐसी उग्रता कब हो? कि जब स्वरूप स्थिरता की लगनी लगी हो तब कृतकृत्यपना प्रगट किया है इसमें ही सुख–शांति लगती है।

✻ राजकुमार सुपार्श्वनाथ एक दिन बनारस में महाराज सुप्रतिष्ठित के राजमहल के पास गंगा नदी के किनारे गये। वहां राजकुमार सुपार्श्वनाथ को जल–क्रीड़ा करने का मन हुआ और वे नौका में बैठकर मित्रों के साथ जलक्रीड़ा करने लगे। वहाँ एक देव ने देखा कि अहो! इन बाल तीर्थंकर के दर्शन करूं और वह नौका के पास एक मगरमच्छ का रूप धारण कर मानो बाल तीर्थंकर की परिक्रमा देने लगा। कुछ समय पश्चात् मगरमच्छ नौका के सामने आकर सिर ऊँचा कर दोनों हाथ जोड़कर दर्शन करने लगा व उसके संग नदी के अनेक जीव प्रभु के दर्शन करने लगे और नौका के चारों ओर प्रदक्षिणा देते हों—ऐसा दृश्य लगने लगा। इसी तरह ज्ञानी ऐसा विचारते हैं कि ये जाननेवाला तत्त्व मैं हूँ। ये आत्मा में ही हूँ। दूसरा कौन जाने? बस उपयोग उस ओर मोड़ना।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय अनुभवी मगरमच्छ सम्यग्दृष्टि जीव को भगवान को देखकर इतना अधिक विनय आता है कि ये तो अनुभवी जीव है।

पुराण में आता है! श्री शांतिनाथ भगवान का दीक्षा कल्याणक :—

महाराज शांतिनाथ चक्रवर्तीका ७५ हजारवाँ जन्मदिवस मनानेका था

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

तब सज–धजकर दर्पण में स्वयं का रूप देख रहे थे कि अचानक एक आश्चर्यचकित करने वाला दृश्य देखा, उसमें एक चक्रवर्तीका रूप और एक मुनिराज का रूप दिखा। बस, अब चक्रवर्ती को वैराग्य का निमित्त मिल गया और तभी उन्हें संसार की अनित्यता और अशरणता का बोध हुआ और स्वयं केवलज्ञान की साधना के लिये जिनेश्वरी दीक्षा लेने के लिये तैयार हो गये।

समाधिस्थ मुनिराज समाधि मरण के लिये योग्यकाल, योग्यक्षेत्र, योग्यमुहूर्त देखकर निर्यापक आचार्य मुनिराज के सानिध्य में जाते हैं। निर्यापक आचार्य मुनिराज क्षेमकुशलता पूछते हैं कि रत्नत्रय की आराधना वर्त रही है ना? आनंद की विशेषता होवे इसके लिये महान महोत्सव मनाते हैं।

पू. बेन कहती है कि ऐसे मुनिराज के समूह में वास करें ऐसा प्रसंग धन्य है, ऐसा अपूर्व अवसर कब आयेगा? कैसी भावनावाले एवं कैसी सेवा करने वाले! धन्य अवतार उन समाधिस्थ मुनिराज को कोई विघ्न न आए और सर्वप्रकार से समाधान हो, ऐसे होंशियार कुशाग्र बुद्धिवाले–मुनिराज हैं। उन्हें निर्यापक आचार्यदेव ऐसी भक्ति से तत्त्वज्ञान की रुचि हो जाय इस प्रकार आचार्यदेव समझाते हैं। आचार्यदेव स्वयं सेवा करने लग जाते हैं। धन्यकाल–धन्यघड़ी......धन्य अवतार!

समाधि करनेवाले मुनिराज एक हैं और उन्हें संबोधन करनेवाले मुनिराजो का संघ है। समाधि करनेवाले मुनिराज स्वयं आचार्यपद पर थे उस आचार्यपद को छोड़ कर–स्वयं के संघको छोड़कर मरण नजदीक जानकर दूसरे संघ में समाधि करने आए हैं। अतः निर्यापक आचार्यदेव दूसरे मुनिराज से कहते हैं कि चलो हम भी उनकी सेवा करें। कितने सरस काल! कितने सरस भाव! मुनिराज कितने सरस लगते होंगे?

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

"मृत्यु का महोत्सव शुरु किया है।" धर्मस्तंभ जैसे ४८ मुनिराज का संघ है उनमें चार मुनिराज द्वार पर बैठे होते हैं कारण कि दूसरे लोग आ जायें तो मुनिराज की समाधि न बिगड़े अतः आने वालों को समझाते हैं रोकते हैं। कैसी अच्छी बात! इस पंचमकाल में मुनिराज की श्रद्धावाले मिलें ये भी भाग्य है। ऐसा समाधिमरण करना सर्वश्रेष्ठ है।

पूज्य गुरुदेव ने ऐसा मुनिमार्ग बताया अतः उन गुरुदेव का परम उपकार है। गुरुदेव की वाणीरूपी देह जीवंत है, वे सजीवन मूर्ति हैं। उनकी वाणी के वचनों से निज आत्मा की ऐसी आराधना करनी। आज का दिन गुरुदेव की समाधि का दिन है। सभी को भगवान कहकर कौन बुलायेगा? गुरुदेव ने तत्त्व की रेलमछेल कराई है। मुनिपद प्राप्त करने की भावनावाले, स्वयं सर्वज्ञपद प्राप्त करने के लक्ष से, **'पूर्णता का लक्ष से शुरुआत'** करने वाले को सर्वज्ञदेव के प्रति बहुमान और भक्ति आए विना रहती नहीं।

पूज्य गुरुदेव की समाधि के पश्चात् पूज्य बेन ने भगवती आराधना शास्त्रजी का स्वाध्याय आद्योपांत ब्रह्मचारी बहनों के साथ किया। जिससे ऐसी समाधि हो ऐसी खूब भावना भाते थे। और अन्त में भी ऐसी भावना पूर्वक समाधिमरण सल्लेखनापूर्वक किया। जिन्हों ने नजरों से देखा है उनको उसका अनुभव है।

समाधिस्थ मुनिराज के पास लायक जीव ही जा सकते है। बहुत आहार किया, बहुत पानी पिया, अब तो इस आत्मारूप अमृत में लीन होकर वेदना पर विजय प्राप्त करो। स्वाधीन होकर वेदना सहन करो तो दुख नहीं लगेगा क्योंकि वे ज्ञायक में लीन होते है ज्ञाता-दृष्टा हूँ अतः मुझे आहार पानी से क्या प्रयोजन?

महा मुनिराज को ऐसा संघ अपने गुणोंका समूह ही दिखता है,

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सर्वोत्कृष्ट तप, समाधानरूपी तप, वैराग्य, उससे जिसको समाधान वर्तता है, वे क्षपकश्रेणी चढ़ते हैं। मुनिराज एक समय में सब कर्मों को नष्ट कर डालते हैं, आत्मा के स्वरूप का ध्यान ही वास्तव में स्वाध्याय है, स्वाध्याय ही सच्चा तप है, उसमें सब कर्मों का क्षय होता है। अमृत की डकार आती है। विधि सुनते-सुनते ही आत्मा में से अमृत आता है। विधि भी आति मीठी लगती है। तत्त्व की श्रद्धा करके रत्नत्रय की शुद्धता कर लीन हो जाए, सभी से ममता छोड़कर संयम के सागर से सल्लेखना करना। अंतर–बाह्य शुद्धिपूर्वक सल्लेखना को प्राप्त करो।

हे मुनिराज! गुरु को पता है कि उनक शरीर की स्थिति ऐसी है। आराधना की भावना करो, सम्यक्त्व की आराधना करो, संसार दुःख को धारण करनेवाले शरीर का वमन करो, सम्यक्त्व की आराधना करो, सम्यक्चारित्र को उज्ज्वल करो, द्रढ़ होवे ऐसा निरंतर उद्यम करो। चारित्र–ज्ञान–वीर्य सभी के प्रवेश करने का द्वार सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दर्शन रूपी आभूषण द्वारा सभी श्रृंगार शोभित होते हैं। परमसुख का दातार सम्यग्दर्शन ही है।

* मुनिराज के गुणों को याद करते करते आत्मा के गुण याद आ जाते हैं। यात्रा करने तीर्थक्षेत्र में जाये तो भगवान के गुणों का स्मरण होता है। जहाँ से भगवान मोक्ष पधारें, मुनिराज मुक्ति पधारें वे मुनिराज गत काल में यहीं विचरण करते थे, यह याद करते ही मुनिराज का पद मुझे प्राप्त हो, जिससे तीर्थयात्रा जाने का बहुमान आता है। तीर्थ अर्थात् तिरने का स्थान, गुरुदेव तो पुकार पुकार कर कहते थे कि तिरने का कारण तेरे आत्मा में है। तीर्थों में भाव कोई भिन्न ही आते हैं। जिस भूमि में क्रोडी क्रोडी मुनिराज मोक्ष पधारे हों वह क्षेत्र धन्य है, वह काल भी धन्य है, अपना आत्मा भी धन्य बनता है। सम्पूर्ण समाधिस्थ परिणामी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्माओं को धन्य है, बारम्बार नमस्कार है, बिलकुल ऐकान्तवासी सर्वसंग परित्याग स्वरूपी महा समाधिस्थ हुई आत्माओं को भी बारंबार धन्यता है।

महामुनिराज का स्वरूप समझानेवाले परम उपकारी गुरुराज को बारंबार वंदन हो।

卐 卐 卐

परम कृपालु गुरुदेव की महिमा

✽ परम कृपालु गुरुदेव का परम उपकार है। पू. गुरुदेव ने आत्मा का अपूर्व स्वरूप समझाया है। वह स्वरूप उनके प्रताप से अनुभवपूर्वक समझ में आया। आत्मा का स्वरूप साक्षात्कारपूर्वक समझ में आया। ज्ञान–आनंदादि अनंत गुण के वेदनपूर्वक समझ में आया। उससे भवचक्र का अंत आ गया। उन श्री परम कृपालु गुरुदेव के चरणों में अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार हो।

इस काल में पू. गुरुदेव अलौकिक पुरुष थे, युग पुरुष थे, गुरुदेव जैसे महाशक्तिशाली पुरुष होना बहुत दुर्लभ है। अन्तर में श्रुतज्ञान की बहुत बहुत शक्ति और वाणी में भी प्रभावना शक्ति। श्वेताम्बर में देवचन्दजी कह गये हैं **तत्त्वरसिक जन थोड़े ही हैं** परन्तु अभी गुरुदेव के प्रताप से तत्त्वरसिकजन बहुत दिखाई देते हैं वह गुरुदेव की कोई अनुपमता है। गुरुदेव ने ज्ञायकदेव को हथेली में आंवले के समान प्रत्यक्ष बताया है। ज्ञायकदेव स्वयं हाजराहजूर है। ज्ञायक के सामने नजर की तो ज्ञायक देव स्वयं साक्षात दिखाई देता है। ज्ञायकदेव का स्वरूप गुरुदेव ने अपूर्व रीति से बताया है। उस मार्ग पर हम चलें और सिद्धपद को शीघ्र प्राप्त करें। पू. गुरुदेव का भेदज्ञान तो इतना अधिक तीक्ष्ण

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

था कि जिसको वो तीक्ष्ण धारा लगे उसके मिथ्यात्व का चूरा चूरा हो जाय। पू. गुरुदेव की सुवास सम्पूर्ण भारत भर में फैल गई। भेदज्ञान वही सच्चा धर्म है वही सच्चा तिरने का उपाय है। अन्य कोई है ही नहीं। गुरुदेव ने ढोल पीटपीट कर नगाड़े बजाये। भेदज्ञान द्वारा आत्मा का अमृत सरोवर उछाला अमृतरस पीया व हमें अमृतरस पिलाया। पूज्य गुरुदेव का आत्म-अनुभव उनकी वाणी में झलकता था। आत्मार्थी जीव गुरुदेव के निर्विकल्प अनुभव को पहिचान सकते थे आत्म अनुभव उनकी वाणी में तैरता था। वे तो प्रखर आत्मानुभवी पुरुष थे। उनके द्वारा बताई हुई श्री देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति और उनके द्वारा बताई हुई चैतन्य आत्मा की आराधना में नित्य जागृत रहना ये मुख्य प्रयोजन है।

ऐसे युगप्रधानी पुरुष 'गुरुदेव' को बारम्बार नमस्कार हो। जयवंत हो कहान गुरुदेव की वाणी तथा कहान गुरुदेव जयवंत हों।

卐 卐 卐

ज्ञायक देव में लीनता

ज्ञायकदेव (आत्म) की ओर उपयोग आरूढ़ होता है तब उसमें लीनता बढ़ते ही एकदम पर से हटकर स्वयं में लीनता होती है और अनंत गुण उछलते हैं अनंत आनंद तरंगे उछलती हैं। चैतन्य देव–चमत्कारी है वह साक्षात् अनुभव होता है, वेदन होता है, साक्षात् सिद्ध स्वरूप का अंश में अनुभव होता है। एक चैतन्यदेव का ही अनुभव होता है। रागादि–शरीरादि कोई भी भाव तब दिखता ही नहीं। अकेला चैतन्य देव ही अद्‌भुत अनंत गुण स्वरूप में वेदन होता है।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

'पू. बेन शान्ताबेन के हस्ताक्षर की कापी'

संवत १९९० राजकोट (इ.स. १९३५) पू. बेन को निर्विकल्पदशा में शुद्धात्मा कैसा जानने में आया उसका लिखित विवरण।

सं. १९९० में आश्विन कृष्णा चतुर्थी को शुक्रवार लगभग रात्रि को दस बजे एकदम ''उपयोग पर से हटकर ज्ञायक आत्मा में लीन हुआ तो अद्‍भुत आत्मा का निर्विकल्प अनुभव हुआ'' ''अचिंन्त्य आनंद का अनुभव हुआ'' चैतन्य का अनुपम स्वरूप अनुभव में आया।'' आत्मा के वास्तविक स्वरूप का अनुभव हुआ, सच्चा आनंद का अनुभव हुआ, साक्षात् चैतन्यस्वरूप अनुभव में आया, साक्षात् सिद्धस्वरूप अनुभवमें आया। अनंत अनंत गुण उछल गये'' अनंत गुण स्वरूप चैतन्य अनुभव में आया। सच्चा आनंद का अनुभव हुआ। वास्तविक समभाव स्वरूप समाधि स्वरूप ज्ञायक आत्मा अनुभव में आया। जाज्वल्यमान चैतन्य ज्योति जागृतिरूप दैदीप्यमान करती अनुभव में आयी'' साक्षात् ज्ञायक ज्ञायकरूप अनुपम परिणमन करता हुआ अनुभव में आया।

वाह! चैतन्य वाह! तेरा स्वरूप तो वास्तव में अद्‍भुत है। इस रीति से साक्षात् चैतन्य का अनुभव होने से ज्ञायक धारा दृढरूपे परिणमने लगी। उपयोग बाहर आते ही ऐसा हुआ कि जिसके लिये वेदन होता था, जिसके लिये प्रयत्न था वह स्वरूप प्राप्त हुआ। इस स्वरूप को प्राप्त होने पर ही आत्मा स्वयं की पूर्णदशा प्राप्त करके पूर्णता तक पहुँच सकता है।

जिस पुरुषार्थ से सम्यग्दर्शन प्राप्त हुआ वह ऐसी विशेषतापूर्वक प्राप्त हुआ है–इस सम्यग्दर्शन के फल में केवलज्ञान प्राप्त होगा, ऐसी अप्रतिहत धारा से सम्यग्दर्शन प्राप्त हुआ है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

પૂ. બેન શાન્તાબેનના હસ્તાક્ષર

૧૯૯૦ રાજકોટ સદર

પૂ. બેનને નિર્વિકલ્પદશામાં શુદ્ધાત્મા કેવો જણાયો તે તેમના જ હસ્તાક્ષરમાં વાંચો...

૧૯૯૦ ના ઓગસ્ટ ૫-૮-૯૦ ને શુક્રવાર
[illegible]
ના રાત્રે ૧૦ વાગ્યા લગભગ
"ઉપયોગ અંદર ઘુસતો જાય
આત્મામાં લીન થયો ને અદ્ભુત
આત્માનો નિર્વિકલ્પ અનુભવ
થયો" "પરમાનંદ આનંદ અનુભવાયો"
"ચૈતન્યનું અનુપમ સ્વરૂપ અનુભવાયું"
[illegible] સ્વરૂપ અનુભવાયું.

અતીન્દ્રિય આનંદ અનુભવાયો. અદ્ભુત
ચૈતન્યસ્વરૂપ અનુભવાયું. અદ્ભુત [illegible]
સ્વરૂપ અનુભવાયું. "[illegible]
[illegible]
"[illegible] અનુભવાયો"! [illegible]
અનુભવાયો, [illegible] સ્વરૂપ
[illegible] અનુભવાયો.
"[illegible]
[illegible] અનુભવમાં આવ્યો"
[illegible] અનુપમ [illegible]
[illegible] અનુભવાયો.

વાહ! ચૈતન્ય પ્રભુ! તારું સ્વરૂપ
તો અલૌકિક અદ્ભુત છે.
આ રાતે અદ્ભુત ચૈતન્યનો અનુભવ
થતાં [illegible]
[illegible], ઉપયોગ બહાર આવતાં એમ
થયું કે [illegible]
[illegible]
[illegible] થયું. આ સ્વરૂપ [illegible]
[illegible]
[illegible] રહ્યો છે.

મેં ગુરુકૃપાથી જ સમ્યગ્દર્શન
પ્રાપ્ત કર્યું તે એમના વિશેષના
[illegible] પ્રાપ્ત કર્યું છે ને સમ્યગ્-
દર્શનના [illegible] પ્રાપ્ત
થશે એમના અલૌકિક ધારા(?)થી
સમ્યગ્દર્શન પ્રાપ્ત કર્યું છે.

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

निर्विकल्प दशा में शुद्धात्मा की अद्‌भुत महिमा

संवत १९९० के
आश्विन कृष्ण चतुर्थी–
राजकोट

आत्मा के स्वरूप का लक्ष हुआ कि आत्मस्वरूप इस तरह का ही है—ऐसी निःशंकता आई। पश्चात् आत्मा के लक्ष में ज्ञान और ध्यान द्वारा आगे बढ़ते–बढ़ते आश्विन कृष्ण–चतुर्थी को शुक्रवार रात्रि दस बजे लगभग श्री सद्‌गुरुदेव की कोई अपूर्व महिमा से—पू. बेनश्री के समीप उनकी कोई अद्‌भुत कृपा से—

आत्मा के तथा जीवन के सर्वस्व आधार, सर्वस्व विश्राम ज्ञान खजाना देने में परमार्थ से परम उपकारभूत होनेवाले परमपद आराधक अतीन्द्रिय योगातीत अचिंत्य और अगम्य स्वरूप को गम्य करानेवाले प्यारे गुरुदेव! अहो भाव में वृद्धि करने वाले उन आत्मा को मेरा नमस्कार हो।

''आत्म उपयोग'' स्वयं के स्व स्वरूपनय की ओर ढलते ढलते सहजपने शीघ्रता से तीव्रता से उपयोग पर से ''छूट कर स्व स्वरूप में स्थिर होकर स्वयं का सहज निर्विकल्प स्वरूप अनुभव में आया, तब चैतन्य प्रभु जाज्वल्यमान ज्योति स्वरूप अकेला स्वयं के निजस्वरूप में रम रहे थे। निजानंद में डोल रहे थे, उछल रहे थे।

''वाह ! वाह ! वह स्वरूप तो कोई अद्‌भुत है''

उस स्वरूप का कोई अद्‌भुत महात्म्य आता है । वास्तविक आत्मस्वरूप तो ये ही है । निःशंकपने ये ही है ।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

यह प्रताप तो हैं श्री सद्‌गुरुदेव ! आपका ही है ।

परम कृपालु गुरुदेव का परम उपकार है। पू. गुरुदेव ने आत्मस्वरूप समझाया। वह स्वरूप उनके प्रताप से अनुभव पूर्वक समझ में आया। आत्मा साक्षात्कारपूर्वक समझ में आया। ज्ञान–आनंदादि अनंतगुणों के वेदनपूर्वक समझ में आया।

उन परम कृपालु गुरुदेव के चरणों में अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार हो।

इन महापुरुष के प्रताप से आत्मा ज्ञान में पकड़ाया। परन्तु उसके साथ ही ज्ञान की सत्ता पकड़नी चाहिये। सत्तास्वरूप पदार्थ स्वयं में ही है उसको ग्रहण करना। 'मैं मेरे से ही रक्षित हूँ' मेरी रक्षा कोई कर ही नहीं सकता। शरीर की रक्षा के लिये कोई आये परन्तु आत्मा की रक्षा कोई भी नहीं कर सकता।

पू. गुरुदेव के ज्ञान की सूक्ष्मता इतनी अधिक है कि अन्दर से सूक्ष्म सूक्ष्म भाव निकलते ही जाते है। श्रुतज्ञान की शक्ति बहुत अधिक है। उनकी वाणी का उपने को योग मिला ये अपना महाभाग्य है।

"किसी किसी काल में ही ऐसे महापुरुष जन्मते हैं ।"

संयोग जैसा बनता है, वह वैसा ही बनता है, उदय सभी भिन्न भिन्न प्रकार से वर्तते रहते हैं और ज्ञाता स्वयं उन सभी उदयों को जानता रहता है। जितनी विभाव परिणति है, वह भिन्न भिन्न अवस्था स्वरूप अस्थिर रूप से परिणमती रहती है। पर ज्ञाता का स्वभाव स्थिर होने से स्वयं जितने अंश में सहज स्थिर हुआ है, उतने अंश में वह स्थिररूपे परिणमता है और स्थिर–अस्थिर सभी को जानता ही रहता है। पुरुषार्थ द्वारा स्वयं

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ने जितनी स्थिरता प्रगट की है, और पुरुषार्थ की मंदता ये ही अस्थिरता शेष है, उसमें से स्वयं पुरुषार्थ करके जितना जितना स्थिर होगा वही स्वयं को सुखरूप है, शेष तो सभी उपाधिरूप है।

इस तरह भेदज्ञान होने पर ज्ञायक आत्मा पूरा लक्ष में आने पर पुरुषार्थ का दौर सम्यक् प्रकार से प्रारम्भ हुआ।

पुरुषार्थ की डोर हाथ में आई अर्थात् उपयोग को स्वरूप में लीन करने का प्रयत्न प्रारम्भ हुआ–भेदज्ञान हुआ। आत्मा लक्ष में आया पर अभी निर्विकल्प दशा प्राप्त नहीं हुई थी अतः उपयोग को स्वरूप में लीन करने का पुरुषार्थ करने के लिए लगनी लगी। रात–दिन ऐसा ही लगा कि जब तक निर्विकल्प दशा प्राप्त नहीं हुई तब तक कच्चापन है। जब निर्विकल्पदशा प्राप्त हो तब ही सच्चा सम्यग्दर्शन होता है, तब ही निश्चयदशा प्राप्त हुई कहलाती है।

लक्षगत की प्रारंभिक दशा होने से प्रयत्न सही ढंग से करना पड़ा, जब तक वह वास्तविक दशा प्राप्त न हो तब तक कहीं चेन नहीं पड़ता था। ज्ञायक को ज्ञायकरूप रखने के लिये प्रयत्न करते–करते २$\frac{१}{२}$ महिना लगभग प्रयत्न हुआ।

सविकल्प दशा

कारण हो वहां कार्य जरूर होता है मोक्ष का द्वार खुल गया, परन्तु सविकल्पदशा में संतोष नहीं मानना चाहिये। जैसे 'मैं' और 'तू' ज्ञान में स्पष्ट भिन्न भिन्न जानने में आते हैं, पश्चात् भी निर्विकल्पदशा के लिए बहुत ही प्रयत्न करना पड़ता है। ऐसे सुंदर सरस चैतन्यदेव के सामने विकल्प आते हैं, वे असुहाने लगते हैं।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पू. बेनश्री चम्पाबहिन के द्वारा पू. गुरुदेव को लिखा गया पत्र

“पू. शान्ताबेन को आत्मस्वरूप की प्राप्ति”

प्रभो! बहुत दिनों से कहने के भाव आते थे, आज भावना बढ़ जाने से लिखने के भाव हो रहे हैं।

शान्ताबेन को आपके पास में व्यवहारप्रसंग में आने का बना था, उनकी दशा आप स्वीकारना।

शान्ताबेन को अषाढ़ वदी अमावस से कोई अलौकिक पुरुषार्थ की धारा चल रही थी। उस पुरुषार्थ से आश्विन वदी चतुर्थी की रात्रि कोई अपूर्व फल आया है। अनंत अव्याबाध सुख को देनेवाला ऐसा ‘आत्मस्वरूप’ प्राप्त हुआ है। प्रभु! हृदय उल्लसित होने से लिखने में आया है। शान्ताबेन के प्रति राग से मुझे ऐसा नहीं लगा पर वास्तव में है। मैंने रागद्रष्टि से नहीं देखा है पर माध्यस्थ भाव से देखने पर निःशंकिता पूर्वक मुझे स्थिति बराबर लगती है। वहीं आपके समक्ष रखती हूँ। उस विषय में लक्ष देने से आपको भी ऐसा ही लगेगा—ऐसा मुझे लगता है।

प्रभु! हमारे विषय में आत्मा जानकर लक्ष देने की नम्र विनंती है। आपको जैसे और जब परीक्षा करना योग्य लगे वैसे कीजिये। उसके होने में हम अत्यंत उत्साहित हैं।

प्रभु! श्री समयसार पढ़कर तो अथाह उपकार किया है। आत्मा को बहुत लाभ हुआ है।

“पू. बेन शान्ताबेन की निर्विकल्पदशा के पूर्व की सविकल्प धारा”

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

मार्ग स्पष्ट हो जाता है। ख्याल में आ जाता है कि बस ये ही ''मैं ज्ञायक' ऐसा ख्याल में आने पर भी अब तक निर्विकल्प अनंत गुण की राशि ऐसे ज्ञायक का अनुभव नहीं।

निर्विकल्प होने के पश्चात् की सविकल्पदशा उसके जैसी ये सहज नहीं। परन्तु पुरुषार्थ से होती है। जिसका जैसा पुरुषार्थ।

तीव्र पुरुषार्थ से तुरन्त ही सविकल्प और तुरन्त ही निर्विकल्प होता है। किसी को लम्बा समय भी हो जाता है। लम्बे समय तक अखंड सविकल्पता रहे ही ऐसा नहीं कहा जा सकता, बारम्बार प्रयत्न करते करते पुरुषार्थ की उग्रता से निर्विकल्प दशा हो जाती है। अतः ज्ञायक के अंतःस्थल में से खूब महिमा आनी चाहिये।

पू. गुरुदेव की वाणी में और मोक्ष के मार्ग में अपूर्वता लगनी चाहिये। अपूर्व–अपूर्व लगता है। ऊपर-ऊपर वांचन विचार आदि से कुछ नहीं होता। अंतर में से भावना उठे तो मार्ग सरल हो जाता है। अधिक ऊहापोह हो तो मार्ग मिले ही, न मिले ऐसा नहीं होता, परन्तु जितना कारण दें उतना ही कार्य होता है। ऊपरी भावना नहीं परन्तु अंतर वेदना सहित भावना हो तो मार्ग खोजे ही।

कभी कभी शास्त्र पढ़े तो ऊपर-ऊपर पढ़ते हों ऐसा स्वयं को पकड़ में आता है और कभी कभी सहज ही सहज ही बहुत सरस भाव आते हैं।

ये तो क्षयोपशम धारा है न? अतः एक समान स्थिति नहीं रहती। सविकल्पदशा में मार्ग ख्याल में आने पर भी भवान्तर भी चले जाते है। जो पुरुषार्थ न करे तो 'करूं करूं—ऐसा होता है और वह बहुत पुरुषार्थ लगता है कि मैंने कितना पुरुषार्थ किया, परन्तु वह सब ऊपर ऊपर ही होता है। ये तो अंदर के वेदन से ही निकलता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

स्वप्न में भी कभी कभी आँख खोलने का बहुत प्रयत्न करे और उसे ऐसा भी लगता है कि मैं कितनी मेहनत करता हूँ, आँख खुलती नहीं, पर वह मेहनत झूठी होती है। आँख खोले तब सहज ही विना मेहनत खुल जाती है। ऐसा ही प्रयत्न जानना। ऐसा कहकर ऐसा नहीं कहना है कि प्रयत्न ही नहीं करना है पर उतावली नहीं करना। प्रयत्न तो करना ही, धीरज और शांति से करना। धीरज और शांति से मार्ग सहज ही प्राप्त हो जाता है, वस्तु सहज है।

धारणा में तो सच्चा निर्णय किया हो और उसमें और इस सविकल्प धारा में अंतर होता है। इसमें तो परिणति अंशतः निराली हो जाती है।

चित्त को व्यावृत्त रखना। प्रथम निर्णय होता है पर निर्णय के पश्चात् की इस दशा में तो इसको मार्ग ख्याल में आ जाता है–पुरुषार्थ की गति ख्याल में आती है, विकल्प होने पर भी विकल्प से भिन्न नहीं हुआ पर अंश में परिणति भिन्न हो जाती है। जब तक ऐसी दशा नहीं होती तब तक उसे अत्यंत बैचेनी होती है–कहीं चित्त नहीं लगता।

रात–दिन–खाते–पीते, सोते सभी में चैन नहीं पड़ता। यह तत्त्व क्या है? ये मैं ज्ञायक कैसा? ये दुःख कहाँ है? 'सुख कहाँ है? एक भी बात का यथार्थ ज्ञान क्यों ख्याल में नहीं आता। ऐसा उसे अंदर से खूब बैचेनी और दुःख का वेदन होता है।

ये सविकल्प–धारा होने पर भी इतनी अधिक बेचैनी नहीं होती; इसमें तो उसे मार्ग ख्याल में आता है अतः थोड़ा संतोष होता है परन्तु पुरुषार्थ निर्विकल्प होने के लिये उठता नहीं इसका दुःख होता है। वह भी सहज; यद्यपि निर्विकल्प होने के बाद सविकल्पता सहज होती है। और इसमें तो वस्तु का आधार नहीं मिला होने से पुरुषार्थ होता है।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्मार्थियों को मधुर संबोधन

श्री सिद्ध भगवान तथा अरिहंत भगवान की भक्ति अंतर में विशेषपणे प्रगट करने योग्य है।

आचार्य–उपाध्याय–मुनिराज पंचपरमेष्ठी भगवंतों की भक्ति आत्मार्थता पूर्वक विशेषरूप से बढ़ाने योग्य है।

कषाय की मंदतापूर्वक इन्द्रिय विजेता होकर साधर्मी वात्सल्यभाव बढ़ाने योग्य है। साथ ही आत्मा की रुचि वृद्धि करने योग्य है।

ज्ञान–आनंदादि अनंत गुणों का पिंड आत्मा है। आत्मा ज्ञान का पिण्ड है वस्तु है उस आत्मा को पर से भिन्न अस्तिपने अकेला शुद्ध चैतन्य मात्र आत्मा को ग्रहण करने के लिये खास प्रयत्न करना चाहिये।

जिन गुरुदेव के परमप्रताप से इस आत्मा ने स्वयं स्वयं के सत् स्वरूप को पहिचाना। स्वयं ज्ञायक स्वयं ज्ञान और स्वयं ज्ञाता तीनों स्वयं के एकरूप अभेदरूप होकर परिणमा। अनंत गुण उछल कर आत्मा प्रत्यक्षपने दिखे—ऐसा आत्मा के दर्शन होने से आनंद अनुभव में आया।

आत्मज्ञान की प्रबलता विशेषपने करने के लिये नीचे के कार्यक्रम का आचरण करना :—

देह से भिन्नपने के अनुभव के लिए प्रबल विचार करना, वह विचार दृढ़ रहे इस तरहका वांचन करना और उसी तरह का संग करना। *जितनी

* जीव प्रतिकूलता में तीव्र अशाता के उदय समय वीर्य विशेषरूप से जागृत रखता है, लेकिन अनुकूलता में पाँच इन्द्रिय के विषय सम्बधी रागरंग में फँस जाता है, इसलिए कहते है कि अनुकूलतामें किसी भी प्रकारके कष्ट उठाकर अनुकूलता में भी प्रतिकूलता उत्पन्न कर तब आत्म पुरुषार्थ आगे बढ़ेगा।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शक्ति हो उसके प्रमाण में देह की मुश्किल न हो तब भी खड़ी करना और उससे देह से आत्मा का भिन्नपना अनुभव करने का क्रम रखना और देह की मुश्किलें खड़ी की उसमें स्वयं की शक्ति से विजय प्राप्त करने में आनंद मानना। इस प्रकार से जो होगा तो अनुक्रम से शक्ति बढ़ते ही देह में अपनत्व से रहित प्रबल आत्मज्ञान की दशा प्राप्त होगी और साथ ही निर्विकल्पता भी प्राप्त होगी।

सत् संग : अर्थात् अनुभवी पुरुष और मुमुक्षुओं का संग।

सत् वांचन—जिसमें आत्मा का स्वरूप मुख्यरूप से वर्णन किया हो और सत्य समझ की विशुद्धि का और मुमुक्षुता की तीव्रता का पोषण हो—ऐसा वर्णन मुख्य रूप से होवे ऐसा वांचन होना चाहिये।

विचार—स्वयं की सत्य समझ की विशुद्धि में और मुमुक्षता की तीव्रता में जो जो कमियां दिखती हो उसे उन कमियों से रहित होने के लिए उपाय करने का चिन्तवन करना।

ध्यान—उस चिंतवन में आत्मवीर्य की अखंड स्थिरता रखना वह ध्यान।

किसी की जवाबदारी अपने सिर पर नहीं लेना, जीव स्वयं स्वयं को भोगता है। इस तरह का अनुभवपूर्वक का निश्चय विशेष दृढ़ रखना।

आत्मा की जिज्ञासा

तुम्हें आत्मा की जिज्ञासा बढ़ानी, मेरा आत्मकल्याण कैसे हो उसके विचार बारंबार करना।

पू. श्री गुरुदेव के व्याख्यान में से स्वयं के हितरूप वाक्य ग्रहण कर लेना, और गुरुदेव के प्रवचन रत्नाकर मोक्षमार्गप्रकाशक इत्यादि शास्त्र पढ़ना और उसमें से हितरूपवाक्य ग्रहण करके उस पर विचार करना चाहिये।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

चलते–फिरते काम की प्रवृत्ति में भी यह लक्ष रखना कि 'मैं तो जाननेवाला तत्त्व हूँ' इन सबको जानता रहता हूँ। ''वह जाननेवाला तत्त्व मैं ही हूँ'' बाहर के सभी कार्य उदय आधीन होते है। शरीर से जो कार्य हो उसका कर्ता भी मैं नहीं, शरीर उसका कर्ता है। शरीर रूपी पुद्गल का कार्य शरीर ही करता है। चेतन स्वभावी आत्मा–जड़ स्वभावरूप शरीर का कुछ कर ही नहीं सकता। जैसे म्यान तलवार से भिन्न है वैसे इस शरीररूपी म्यान से आत्मा चैतन्यज्योति अत्यंत भिन्न है। प्रत्यक्षपने भिन्न है, जैसे नारीयल की काचली से उसका मीठा खोपरा का गोला भिन्न है वैसे ही शरीररूपी काचली से चैतन्य गोला जागती ज्योत अत्यंत अत्यंत भिन्न है।

ज्ञानी तो चैतन्य गोले का ही अनुभव कर रहे है। ज्ञानी को देह से अत्यंत भिन्न आत्मा आत्मापने स्पष्ट प्रगट जाज्वल्यमान ज्योति का अनुभव निरन्तर परिणमित होता रहता है।

ज्ञानी को उदयधारा और ज्ञानधारा भिन्न ही निरंतर बहती है। दोनों धारा का भिन्न भिन्न अनुभव निरंतर होता है।

परमकृपालु गुरुदेव का परम उपकार है।

साक्षात तीर्थंकर देव तो साक्षात केवलज्ञान देनेवाले हैं। स्वयं की चेतना का स्वरूप पू. गुरुदेव के पास साक्षात अनुभव से समझ में आया वह परम कृपालु गुरुदेव का अत्यंत उपकार है। महाविदेह में श्री तीर्थंकरदेव तो साक्षात विराजमान हैं। उनके चरणों में अनंत अनंत भक्तिपूर्वक नमस्कार हो।

''आत्मा तो ज्ञायक स्वरूप है'' ज्ञायक स्वयं समता स्वरूप से साम्य स्वरूप है।

समयसार नाटक में से भी पू. गुरुदेव कहते थे कि

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

समता–रमता–ऊर्ध्वता, ज्ञायकता, सुख भास,
वेदकता चैतन्यता, ये सब जीव विलास.

चाहे जैसे प्रसंग में ऐसे सूत्र याद करना।

चाहे जैसे प्रतिकूल प्रसंग में भी आत्मा समता रख सकता है। वह समतास्वरूपी आत्मा मूल ज्ञायक स्वभाव है।

ऐसे ऐसे पू. गुरुदेव द्वारा कहे हर मूल सूत्रों का चिंतन करना, मनन करना, बारम्बार उनका मनन करना ये ही इस मनुष्य जन्म में आत्मा को हितरूप है अतः ये ही विचार बारम्बार करने योग्य है।

सभी गुणों की पूर्णपने आराधना करने की भावना करके पूर्णता प्राप्त करें ये ही भावना हो। अंतर से तैयारी की भावना रखनी। किस समय शरीर की स्थिति पूर्ण हो जाय, इसका त्याग तो होना ही है, परन्तु चैतन्य आत्मा की आराधना पूर्वक देह छूटे ये ही मनुष्यभव की सफलता है।

(१) देह से भिन्न आत्मा के अनुभव के लिये प्रबल विचार रखना चाहिये

(२) वह विचार दृढ़ बना रहे इसके लिए स्वाध्याय करना चाहिये एवं उसी प्रकार की संगति भी करनी चाहिये।

(३) अनुकूलता में शक्ति प्रमाण में जितनी प्रतिकूलता बन सके उतनी प्रतिकूलता खडी करना चाहिये और देह और आत्मा का भिन्न अनुभव करना। ऐसा क्रम जरूर रखना चाहिये।

(४) देह मे प्रतिकूलता लाकर स्वयं की शक्ति प्रगट करके आनंद उत्पन्न करना चाहिये।

✾ ✾ ✾

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्मा स्वयं जितना सहज स्वरूप से समभाव परिणाम से प्रगट परिणमता है वह ही आनंद है और विशेष विशेष समभाव स्वरूप से स्थित परिणमे, ऐसी भावना रहा करती है।

अहा! इस जीवन में जो सफलता प्राप्त करने योग्य है वह प्राप्त करना वह श्री सद्गुरुका ही प्रताप है। उन श्री सद्गुरु को बहुमान से बारम्बार वंदन हो, नमस्कार हो।

धन्य है वे आत्माए जो बाह्य लक्ष विशेषपने छोड़कर विशेष स्वरूप उपयोग सर्वथा पलटाकर सर्वथा प्रगट सहज स्वरूप से परिणमित होकर महा आनंदका भोग करते हैं ऐसे आत्माओं को धन्य है। बारम्बार धन्य है। ऐसे आत्माओं का जिनको दर्शन है उनको भी धन्य है। सहजस्वरूप स्थित दशा के आनंद को धन्य है।

''अहो–अहो मैं स्वयं को नमूं, नमूं, नमूं स्वयं रे,
अमित फल दानदातार की, जिससे हुई तुझे मिलाप रे।''

''श्री सद्गुरुदेव के प्रताप को धन्य है।''

अद्वितीय श्री गुरुदेव का सानिध्य इस जगत में हमें मिलने से, हमारे महाभाग्य से ये अमूल्य रत्न गुरुदेव हमें मिले हैं अब तो निरंतर उनके चरणों में वास हो।

जिंदगी की सफलता करवाए ऐसे सद्गुरुदेव को बारम्बार वंदन हो। हे गुरुदेव! आपने इस पामर पर अनहद कृपा की है।

आत्मा......आत्मा......करते हुए मुझे तो आत्मा की ही धुन बहुत जोरदार थी। जैसा सुना वैसा तुरंत ही अंदर में चैतन्य में परिणमन हो जाता था।

''पात्र ऐसा ही था और सामने देने वाले भी ऐसे ही थे।''

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

मेरे में ही मुझे मेरा विश्वास था इससे गुरुदेव के प्रवचनों का अनुसंधान व समाधान हो जाता था।

हम सभी महापुरुषों के दास हैं, इसलिये दास होकर रहना अच्छा लगता है। पुरुषार्थ इतना जोरदार किया कि फिर शरीर बिगड़ गया। पुरुषार्थ किया फिर नींद भी नहीं आती, खाना भी अच्छा नहीं लगता, आसो महीने में दीवाली आई तब शरीर एकदम कमजोर हो गया। अपने को शरीर का क्या काम है? ''जो करने का था वह कर लिया।''

'परम दिगम्बर महामुनिराज को
परम भक्ति से नमस्कार हो।'

पू. बेन शान्ताबेन

卐 卐 卐

आत्मा ऐसा पर से भिन्न हो जाता है कि जैसे पहाड़ पर बिजली पड़ते ही दो दरार हो जाती है, उसको रेण द्वारा फिरसे जोड़ा नहीं जा सकता, ऐसे आत्मा में भेदज्ञान प्रज्ञारूपी बिजली पड़ी, गिरी वो गिरी, पर से भिन्न हुआ तो अब फिर से पर के साथ एकत्व बुद्धि से एकमेक होता ही नहीं। पू. कानजीस्वामी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पू. बेन शान्ताबेन के हृदयोद्‌गार

* आत्मा ज्ञान का अवतार हूँ ज्ञान का पिण्ड है, समतास्वरूप है, आत्मा आनंद आदि अनंतगुण स्वरूप है। १.

* आत्मा स्वयं पर से निरपेक्ष स्वरूप है, पर की अपेक्षा आत्मा को कलंक रूप है। स्वयं स्वयं के गुणों से भरपूर है फिर पर की अपेक्षा उसमें कहां आती है? ऐसे निरपेक्ष स्वरूप को निहारते शान्ति, समता, आनंद उछलता है। २.

* जैसे सिद्ध भगवान सभी को जानते देखते है तो भी राग–द्वेष नहीं करते वैसे यह आत्मा भी सिद्ध स्वरूप ही है। जानना तेरा स्वभाव है, स्वभाव में राग–द्वेष का अभाव है। ३.

* ज्ञायक मन–वचन–काया की क्रिया में हर समय वह भिन्न ज्ञायकपने परिणमन करता है। राग–द्वेष के भाव विभाव परिणाम आत्मा की अशुद्ध परिणति में हैं पर वह गौणपने वेदन में आते हैं। ४.

* 'ज्ञायक मन–वचन–काया की क्रिया में हर समय परिणमन करता है। राग–द्वेष के भाव ज्ञायकदेव के वेदन में है ही नहीं। विभाव परिणमन आत्मा की अशुद्ध परिणति में हैं, परन्तु गौणपने वेदन में आते हैं। ज्ञायक का परिणमन मुख्यरूप से वेदन में आता है। ५.

* सच्चा आनंद और सच्चा सुख अपने चैतन्य में ही है। दूसरे अन्य कहीं भी नहीं है, अपने चैतन्य में सुख–शांति, समता, आनंद का वेदन होता है, वही अपूर्व है।'' ६.

* चैतन्यदेव की शुद्धता पूर्णता की ओर झुक रही है। स्वयं का ज्ञायक देव ज्ञान में प्रवर्तता है स्वयं के सामने ही मौजूद है। साक्षात

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

स्वयं झलक रहा है। निरंतर ज्ञायक देव का ज्ञायकपने परिणमन अनुभव होता है वही आनंद है। ७.

* आत्मा ज्ञान का अवतार है आत्मा स्वयं पर से निरपेक्ष है, निरपेक्ष स्वरूपी स्वयं ही है, पर की अपेक्षा रखना आत्मा को कलंक रूप है, स्वयं स्वयं के गुणों से भरपूर है फिर पर की अपेक्षा उसमें कहाँ है? ऐसे निरपेक्ष स्वरूप को निहारने पर शांति, समता, आनंद उछलता है उसमें राग–द्वेष होते ही नहीं वैसे ही ये आत्मा भी सिद्धस्वरूप ही है, जानना देखना उसका स्वभाव है। स्वभाव में राग–द्वेष का अभाव ही है। ८.

* सम्यग्दर्शन स्वयं ही महिमावंत है। श्रद्धा में पूर्ण द्रव्य आ जाता है। स्वयं ही ऐसे महिमावंत द्रव्य को देखे तो पर्याय भी महिमावंत हो जाती है—ऐसा चैतन्यपदार्थ ही महामहिमावंत है। उसके प्रति श्रद्धा करे, द्रष्टि में ले तो पूर्णद्रव्य आता है, अर्थात् उसकी पर्याय में महिमा आती है कि अहो! मैं ऐसा ही हूँ और ये ही मेरा शरण है, ऐसा पदार्थ मैं ही हूँ, पूर्ण सुख मेरे में ही है इस सुख की ही लीनता प्राप्त करनी है। ९.

* ज्ञायक को ग्रहण करना वही सम्यग्दर्शन है। जाननेवाले की ओर ही एक लगनी लगाओ तो अन्य विकल्प छूट जाते है। सम्यक् दर्शन प्राप्त होते ही मार्ग मिल जाता है मोक्ष के दरवाजे खुल जाते है। सम्यग्दर्शन प्राप्त होने पर भगवान की जाति में मिल जाता है। सम्यग्दर्शन प्राप्त होने पर झिलमिलाती जाज्वल्यमान ज्योति प्रगट होती है फिर चारित्रदशा का पुरुषार्थ प्रारम्भ होता है। १०.

* सम्यग्दर्शन धारण करने में प्रमादी न बनो। सम्यग्दर्शन उज्ज्वल हो, दृढ़ हो ऐसा निरन्तर उद्यम करो। सम्यग्दर्शनरूपी आभूषण हो तो

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ज्ञान–वैराग्य–तप–चारित्र शोभित होता है, अतः इसका अनुराग करो। ११.

* जिसे सम्यग्दर्शन प्राप्त हुआ उसने मोक्ष का बीज डाला! और उसे अवश्य मोक्षरूपी फल की प्राप्ति होगी ही। १२.

शुद्ध चिद्रूपोऽहं

* जैसे बालक को दूध मिलते ही आनंद होता है–वैसे मुझे ''शुद्ध चिद्रूप'' सुनते ही दूध मिले ऐसा आनंद होता है। ये पढ़ते ही धुन चढ़ जाती है। १३. (तत्त्वज्ञान तरंगीणी)

'शुद्ध चिद्रूप ये ही आनंद का मंदिर है।'

* अनुभव ये ही मोक्ष का कारण है, अनुभव से ही मोक्ष की धारा बहती है।'' १४.

* जिसे एक प्रतिकूलता में समाधान करना आता है उसे ऐसी अनंती प्रतिकूलता आने पर भी समाधान करना आता है। एक स्वयं का आत्मा ही समाधान स्वरूप है। १५.

* व्यवहार से बड़े पुरुषों का बहुमान–विनय करने से स्वयं के आत्मा का बहुमान आता है, जैसे धर्मचक्र मुख्य आगे आगे चलता है वैसे देवशास्त्रगुरु को मुख्य आगे रखे तो आत्मा के सन्मुख आगे बढ़े। १६.

* श्री देव–शास्त्र–गुरु के दर्शन की नित्य भावना रखनी और उनकी भक्ति की प्रधानता रखनी। ऐसा दृढ़ निश्चय बराबर रखना। इसमें ही स्वयं का हित है। १७.

* सच्चे आत्म–ज्ञान के और सच्चे आत्मकल्याण के संस्कार इस मनुष्य–भव में ही पड़ते हैं। यह मनुष्यभव आत्मकल्याण करने के लिये ऊँचा साधन है। १८.

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

* ऐसा उत्तम मनुष्यभव बहुत पुण्य से प्राप्त हुआ। उसमें भी ऐसे वीतरागी देव के द्वारा प्ररूपित सत्यधर्म का योग मिला और बहुत पुण्य से इस पंचमकाल में ऐसे सद्गुरुदेव का योग आत्मकल्याण के लिये मिला है। ऐसा महान पुण्य का उदय अत्यंत दुर्लभ योग अभी तो सुलभरूप हो गया है। तो सभी को यही रुचि और प्रेम अधिक अधिक बढ़े ऐसी भावना रखनी और बालकों में भी ऐसे ही संस्कार सींचना जरूरी है। १९.

* शास्त्रों के गहन अभ्यास से कठिन शास्त्र भी सरल और सुगम लगते हैं। इसीप्रकार ध्यान के सतत अभ्यास द्वारा ध्यान प्रथम थोड़ा अस्थिर हो परन्तु शीघ्र स्थिर होता है तब उसके चमत्कार प्रगट होते हैं। अतः शिथिल या हतोत्साही न होकर श्रद्धा सहित वृद्धि करना—ऐसा श्री जिनवाणी माता कहती हैं। २०.

* आत्मा की पहिचान के लिए रुचि खूब जोरदार प्रगट करे तो आत्मदेव अंदर से जागे बिना रहे ही नहीं। रुचि आत्मदेव को भी खूब आदर देती है तो आत्मदेव अंदर से जाग्रत होता ही है अतः सर्व मुमुक्षु जीवों को आत्मा की रुचि खूब ही बढ़ाना चाहिये।

* आत्मदेव जागृत होता है तब उसके आनंदकी कोई सीमा नहीं रहती। भवका अंत आ जाय और आत्मदेव जागृत हो। परसे भिन्न ही स्वयंकी ज्ञानज्योतिका अनुभव हो उसे आत्मदेव की पूर्ण प्राप्ति समीप ही है। "उसमें संशय है ही नहीं"। २१.

* शुद्ध उपयोग प्राप्त होवे तो शुद्ध उपयोग में बारम्बार लीनता करने का प्रयत्न करता है, उस शुद्धोपयोग का कोई हरण कर ही नहीं सकता। २२.

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

✻ उपयोग को स्थिर रखना—ये प्रसंग धन्य है, ये चैतन्य की कुशलता है–ये कुशलता महा कुशलता है, इस कुशलता में कोई कमी नहीं है। महा मुनिराज ध्यान में कैसे कुशल होते हैं। २४.

✻ स्वयं के चैतन्य को अन्तर्मुख देखे तो स्वयं को देख सके ऐसा इसका स्वभाव है। स्वभाव का अस्तित्व धरने वाला ऐसा अस्तित्व वाला–सत्तास्वरूपवाला द्रव्य हूँ। वह अकारण होने से स्वतः सिद्ध है। बहिर्मुख और अंतर्मुख प्रकाशवाला होने से स्वपर का ज्ञायक है। वह स्व को भी जानता है और पर को भी जानता है। २५.

✻ मरण समय कितनी पीड़ा और दबाव घबराहट होती है, वह शरीर को होती है, उस समय स्वयं आत्मा का पुरुषार्थ करके समाधि में वृद्धि कर सकता है। उस समय थकावट नहीं लगती–उस समय आत्म समाधि में लीन हो सकता है। शरीर को खड़ा होना हो तो कहाँ हो सकता है? परन्तु आत्मा उस समय पुरुषार्थ कर सकता है। २६.

✻ अंत समय अनंत मुनीश्वरों ने पुरुषार्थ किया और केवलज्ञान प्रगट कर लिया वहाँ थकान नहीं लगती आनंद की वृद्धि होती है। सहज स्वभाव प्रगट होता है और अनंत काल की थकान उतर जाती है। २७.

✻ उपयोग को आत्मा की ओर ढाल तो तुझे श्रम नहीं, श्रम रहित है। दूसरे सभी कार्यों में तो श्रम लगता है। आत्म पुरुषार्थ में श्रम नहीं, इससे आनंद है और सरल है। स्वयं के चैतन्य में जाने में अनंत पुरुषार्थ है। थकान तो शरीर को लगती है, आत्मा को लगती ही नहीं—ये शरीर तो जड़ है। २८.

✻ चैतन्य आत्मा चेतनास्वरूप है, इस शरीरादि से भिन्न है, बाह्य वस्तु से भिन्न है। ज्ञानी चैतन्यप्रभु को प्रत्यक्षपने देखते है, अनुपम नेत्रों से देखते हैं, जन्म–मरण रहित एक उत्कृष्ट स्थान है। सर्व प्रकार के

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

विशेषणों से रहित होकर आत्मा को आत्मा के द्वारा जाने वही आत्मा स्थित होता है। ''आत्मा मन-वचन-काय, कोई पदार्थ, कोई शास्त्र द्वारा जानने में नहीं आता। आत्मा आत्मा के द्वारा जानने में आता है, आत्मा स्वयं के ज्ञान द्वारा जानने में आता है। ज्ञान वही आत्मा है अतः आत्मा आत्मा के द्वारा जानने में आता है।

* जानने योग्य चैतन्य को जानने से सभी जानने में आ जाता है। इस जगत में जानने योग्य अन्य कोई पदार्थ है ही नहीं। चैतन्य आत्मा को जानने पर अन्य क्या नहीं जाना? २९.

* एक आत्मा को ज्ञान–दर्शन से देखा जाना, वहाँ कुछ बाकी नहीं रहा। सभी पूरा–पूरा जाना। अतीन्द्रिय ज्ञानस्वरूप आत्मा को स्वयं ने जान लिया, देख लिया, सुन लिया है, अनुपम आत्मा को पहिचान लिया है, उसको जानने पर सभी को जान लिया है। ३०.

* आश्चर्यकारी पदार्थ स्वयं ही है इसमें तू आश्चर्य कर कि ऐसा चैतन्य पदार्थ है। ऐसा मेरा स्वरूप है—ऐसा कोतूहल कर, इसमें आश्चर्य कर कि ऐसी चेतना मेरी है। वाह! ऐसा मेरा स्वरूप है। अनंत काल से ऐसे स्वरूप को मैं भूलकर बैठा था। सर्वज्ञदेव द्वारा–गुरुदेव द्वारा अपने ज्ञान द्वारा आत्मा के स्वरूप को जान! उसे जानने पर सभी को जान लिया अतः आत्मा के स्वरूप का ध्यान कर, और इस चैतन्य को सुन! सुन! अन्य को सुनना छोड़ दे। ३१.

* स्वयं के स्वरूप को जाग्रत रखने के लिए जो निरंतर प्रयत्नशील है वे ज्ञानी जीव धर्मात्मा जीव स्वयं के स्वरूप को जागृत रखने के लिये निरन्तर प्रयत्न में रहते है। उसमें आलस नहीं, उसमें प्रमाद नहीं आता। निरन्तर निष्प्रमादीपने जागृत रहकर पुरुषार्थरूपी तेल सदैव हरवक्त हरसमय डालते रहते हैं। इसकारण ज्ञानरूपी दीपक हमेशा प्रगट उद्योतरूप ही रहता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

है। प्रकाशपने ही रहता है। इन शास्त्रों में से आत्मा नहीं मिलता। हमेशा जागृत रूप से रहने की बात आत्मा में है। भगवान केवली में है। हमेशा प्रयत्नशील रहना उसमें निःशंकता है, उसमें स्वयं के स्वाद का अनुभव करता है। अनुभव से स्वयं का उपयोग हठता नहीं। भले ही निर्विकल्प उपयोग बारम्बार नहीं होता परन्तु भेदज्ञानरूपी ज्योति निरंतर जगमगाती है। ३२.

* अर्हंत को, श्री सिद्ध को नमस्कार कर इस प्रकार गणधर और आध्यापकों के सर्वसाधु समूह को (श्री प्रवचनसार)। श्री पंचपरमेष्ठी भगवंतो की भक्ति आत्मार्थता–विशेषपने बढ़ाने योग्य है। श्री सिद्धस्वरूप की प्राप्ति के लिये स्वयं के उपयोग को बारम्बार अविनाशी ध्रुवपद में जोड़ने योग्य है। पंचपरमेष्ठी का सच्चा स्वरूप स्वयं के आत्मा को जानने से जानने में आता है। ३४.

* यह आत्मा सिद्ध स्वरूप है। उसमें उपयोग को जोड़कर उसमें लगनी लगाना। ऐसे चिदानंद चैतन्य द्रव्य जैसा दूसरा कोई द्रव्य नहीं। आत्मा को जाना तब ही अरिहंतजी सिद्धदेव का सच्चा स्वरूप जानने में आता है। आत्मार्थी का ध्येय सिद्धपदकी आराधना का ही होता है। ३५.

* इस जगत में ऊँचे में ऊँचा 'ज्ञान' ही प्रधान है। ज्ञान का स्वभाव ही शाश्वत है। 'ज्ञान' कभी भी चैतन्य का साथ छोड़ता नहीं, साथ ही रहता है। इस जगत में जाननस्वभावी आत्मा सर्वश्रेष्ठ पदार्थ है। ३६.

* ''कषाय की मंदतापूर्वक इन्द्रिय विजयी होकर, साधर्मी वात्सल्यभाव बढ़ाना। सम्यग्ज्ञान होने से पूर्व के परिणाम में बाहर में उदासीनता होती है। आत्मा की प्राप्ति तरफ का रस बढ़ा है। उसके बाहर का रस घट जाता है। मुख्यपने, आत्मज्ञान, स्वरूप का चिंतवन वृद्धिगत हो ये ही नजदीक का कारण है। ३७.

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

श्रुतपंचमी (जेठ शुक्ल पंचमी)

आज धरसेन आचार्यदेव द्वारा दिये हुए ज्ञान को अपूर्व रीति से ग्रहण करके भूतबली मुनिराज तथा पुष्पदंत मुनिराज ने उसकी शास्त्रोक्त रचना करके उसका अंकलेश्वर में उत्सव किया। अतः आज के दिन का श्रुतपंचमी नाम दिया है।

धन्य है वे धरसेन आचार्यदेव भूतबली मुनिराज, पुष्पदंत मुनिराज जिन्होंने आत्मा के ज्ञान की आराधना करते करते साथ साथ में श्रुतज्ञान का भी इतना प्रचार किया।

धन्य है वे कुन्दकुन्दाचार्यदेव और अमृतचन्द्राचार्य देव जिन्होंने आत्मा के स्वरूप की कैसी मस्ती लगाकर कैसे सरस भाव श्री समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय इत्यादि शास्त्रों में भरे है। जिसे पढते आत्मा अनंत गुण स्वरूप उछलता है, असंख्य प्रदेश में आनंद–आनंद होता है।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्म अनुभव करने की विधि

आत्मा की लगन लगना चाहिए......इसके पीछे लगना चाहिए, दिनरात उसका चिन्तवन और विचार करके निर्णय करना चाहिये, जिसे सच्ची जिज्ञासा हो वो **आत्मा को ध्येयरूप** रखकर नये-नये अनके प्रकार से विचार करते है। शंका उठे तो उसका निर्णय करते जाते हैं कुछ विचार करके बाद आगे और क्या करना उसका स्वयं का ख्याल समझ में आता जाता है।

आगे बढ़ने पर क्या होता है? तब बहुत ही गम्भीरता और प्रसन्नता से कहते हैं कि अहो! ये तो अनुभूति की बात है, उसको स्वयं को ही पता चलता है, फिर आगे मार्ग खुल जाता है। मोक्ष का मार्ग खुल जाता है। लेकिन इसके पहले बहुत पुरुषार्थ करना पड़ता है। ये ऐसी चीज नहीं है कि ऐसे ही अपने आप अंदर प्रकट हो जाये। इसका तो दिनरात निरन्तर पुरुषार्थ करना चाहिए। लगनी लगानी चाहिए।

अन्तर में लगन और आत्मा के हित के लिए खटक हो तो पुरुषार्थ भी करे। मैं ज्ञायक हूँ, मन-वचन-शरीर सभी से भिन्न ज्ञायक हूँ, ऐसा बारम्बार अलग अलग अनेक पहलू से विचार करके एक ज्ञायक का निर्णय करे।

वह पुरुषार्थ किस तरह से होता है? वो तो पुरुषार्थ करे उसे ही मालूम होता है। ऐसी बात स्वयं को पता लग जाती है। मैं स्वयं कोई अचिंत्य अद्‌भुत अपार महिमा वाली वस्तु हूँ ऐसा अन्तर में स्वयं को भासित होता है उसमें जितनी रुचि और प्रयत्नरूप कारण हो उतना कार्य होता है, कारण हो और कार्य ना हो ऐसा नहीं होता है।

प्रश्न : आत्मा का कैसा विचार करना?

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उत्तर : जिज्ञासु को खास एक ही प्रकार के विचार हो—ऐसा नहीं होता। किसी को कुछ विचार होते हैं तथा किसी को कुछ। विचार के द्वारा ज्ञायक आत्मा का निर्णय करे, ध्येय तो एक आत्मा ही होती है।

आत्मा को लक्ष में रखना उसकी महिमा के ही विचार करना कि आत्मा कितना महान है और मेरा हित कैसे हो? मैं आत्मा को कैसे पहचानूं! ऐसी रुचि बढ़ाने का प्रयत्न करना, किसी को तुरन्त हो जाता है, और किसी को धीरे धीरे होता है। परन्तु इस प्रकार की लगन और प्रयत्न हो तो उसे कार्य होता ही है। इसलिये हर समय रुचि बढ़ानी चाहिये और धीरज रखना चाहिये।

परम धीरज से ऐसा प्रयत्न करते करते एक क्षण जरूर आत्मा का अनुभव होता है। जल्दी ही होता है।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

"श्री कहान गुरुवर जीवन दर्शन"

''माताने स्वप्न लाध्यां ने झबकीने जाग्या उजमबा,
स्वप्ना ए मिठड़ा लाग्या ने दुदुंभी वाग्या उजमबा।।

उमराला की भूमि इतनी महान पवित्र है कि जहाँ पर उजमबा माता को कितने प्रकार के स्वप्न आये। तब विदेहक्षेत्र से च्युत होकर उजमबा माता के गर्भ में आये। (इ.स. २१ अप्रैल, १८९०)

स्वामीजी का जन्म १९४६ वैशाख सुदी दूज के दिन रविवार को एक छोटे से गाँव उमराला (सौराष्ट्र) में मामा के घर हुवा था।

आपका मूल गांव गढडा था। आपकी माताजी का नाम उजमबा तथा पिता का नाम मोतीचन्दभाई था।

आप चार भाई और दो बहनें थी। बड़े भाई दीपचंदभाई, दूसरे खुशालभाई, तीसरे भाई मगनभाई और चोथा नंबर था गुरुदेव का। बहनें गुरुदेव से बड़ी थी और उनको गुरुदेव के प्रति बहुत ही प्रेम था।

गुरुदेव कहते थे कि हमारे घर के (मेड़ी) ओटले के उपर जो खिड़की थी उस पर मेरी बहन मुझे लेकर बैठती थी तब मैं दो साल का था।

माता को भी ऐसा लगता था कि मेरा 'कानुड़ा' बहुत तेजस्वी है। आपका शरीर सुंदर और रूपवान था उंचाई तथा गठीला बदन था। मुद्रा सौम्य और वैराग्य झलकता था। स्वभाव से आप निस्पृह थे। बुद्धिशाली तो इतने थे कि पाठशाला में पढ़ने गये तब सबसे पहले ''सिद्धोवर्ण समाम्नाय'' शब्द शिक्षकने सिखलाया (ये शब्द मोक्षमार्ग प्रकाशक पेज नं. ११ पर है) तीक्ष्णबुद्धि होने से स्मरणशक्ति भी तेज थी, कि एक बार में ही सब याद रह जाता था।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

माताजी कहते थे कि आप बचपन से ही बहुत विचक्षण थे, 'ज्ञान'का प्रेम भी बहुत था। कानाका बचपन सबसे अलग था—ऐसा पड़ोसी कहते थे. 'पुत्र के लक्षण पारणे में' बचपन से ही अध्यात्म की धुन थी। १३ वर्ष की उम्र में छट्ठी क्लास पास की थी।

माता-पिता का वियोग

११ वर्ष की उम्र हुई तब गुरुदेव को माता का वियोग हुआ। १३ वर्ष की उम्र में गुरुदेव को पिताजी का वियोग हुआ और लौकिक पढ़ाई से मन उठ गया था।

१७ वर्ष की उम्र में पालेज में कुंवरजीभाई (बुवा के लड़के) के साथ भागीदारी में व्यापार किया। दुकान पर भी अध्यात्म की पुस्तकें ही पढ़ते थे। कभी–कभी बड़ौदा नाटक देखने जाते थे। वहाँ आपको सती अनुसुया का नाटक देखकर वैराग्य आ जाता था और रात को नींद नहीं आती थी। इस नाटकमें सती अनसूया अपने पुत्र को पालने में झुलाती–झुलाती गाती कि बेटा तू शुद्धोसि, बुद्धोसि, उदासीनोसि, निर्विकल्पोसि, ये बात गुरुदेव को बहुत प्रिय लगती।

परणी मारा पियुजी साथे के
बीजानां मिंढोळ नहीं रे बांधु रे.....

इसके उपर पूज्य गुरुदेव श्री का अध्यात्म

परणी मारा आतमदेवनी साथ के
हवे रागनां मिंढ़ोळ नहिं रे बांधु रे.....

जब गुरुदेव नाटक देखने जाते थे तब कहते कि हमें इस नाटक की पुस्तक भी दो ताकि आप क्या बोलते हो वो हमें पता लगे। इस तरह १२ आनेकी पुस्तक हाथ में रखकर नाटक देखते और उसमें मजा आता।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

फिर एकबार रात्रि में पालेज में राम–लक्ष्मण और सीता का नाटक देखने गये। गुरुदेव कहते कि–असली राम–लक्ष्मण हो ऐसा ही लगता था। और उनका वैराग्य देखकर गुरुदेवने एक पंक्ति कड़ी स्वयं बनाई थी कि—

'शिवरमणी रमनार तुं, तुं ही देवनो देव;

ये स्त्री तो तेरी नहिं लेकिन शिव रमणी से शादी करना है।

पांच वर्ष के बाद व्यापार करते–करते उनको ऐसा लगा कि ये व्यापार मुझे नहीं करना. मुझे तो मेरी आत्मा का व्यापार ही करना है। व्यापार करते समय पालेज में कोई साधु–संत आते तो व्यापार छोड़कर उनके साथ चले जाते! जब पर्युषण आते तब खुद प्रतिक्रमण करते और भजन गाते। लोग उन्हें भगत के नाम से बुलाते थे। पर्युषण में कुल चार उपवास करते। पर्युषण में पू. गुरुदेव लोगों को ललकार कर कहते थे कि **'जुओ रे जुओ केवा व्रतधारी' 'देखो रे देखो कैसे व्रतधारी'** स्तवन गाते थे। साधु संतो के परिचय में आने के बाद उन्हें दीक्षा लेने के भाव हुए। तब आपने अपने भाई से कहा कि मुझे शादी नहीं करनी है। व्यापार धंधा तथा कुटुंब–परिवार के प्रति उदासीनता आई। मुझे सच्चा धर्म ही चाहिये। जब शादी के लिये मना किया तब खुशालभाईने उससे कहा कि—तू संस्कृत का अभ्यास कर। अभ्यास करने के लिये गारियाधार गये और वहाँ संस्कृत का अभ्यास करवाने के लिये संस्कृत के शिक्षक घर पर आते थे। थोड़े दिन संस्कृत का अभ्यास किया। पंद्रह दिन बाद खुशालभाई खबर लेने आये तो पूछा कि तुमने क्या किया, तब गुरुदेव ने जवाब दिया—मुझे इसमें कोई रस नहीं और रोने लगे कि मुझे जो चाहिये वो उसमें मुझे नहीं मिलता, इसलिये मुझे नहीं सीखना, तब खुशालभाई उनको उमराला ले गये।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

दुकान में व्यापार करते तब बम्बई माल लेने जाते थे, तब उन्होंने ८०० क्विंटल चावल खरीदे, वही उनकी अंतिम खरीदी थी। वो शुकनवंत चावल अक्षय पद की प्राप्ति के सूचक थे। उसके बाद व्यापार छोड़कर दीक्षा के भावों की धुन होने से गुरु की खोज में निकले। बहुत खोज करते-करते बोटाद संप्रदाय के हीराचंदजी महाराज उन्हें पसंद आये। उसका कारण कि वे सरल स्वभावी और शांत प्रकृति के थे। उनके पास पहले ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा लेने गये, तब गुरुने उनसे पूछा कि बड़े भाई की आज्ञा ली है? तब गुरुदेव ने कहा कि मैं स्वतंत्र हूँ, मेरे ऊपर किसी का प्रतिबंध नहीं है।

उसके बाद २४ वर्ष की उम्र में संवत १९७० (ईस्वी संवत १९०५) के मगशिर सुदी नौ रविवार के दिन दीक्षाग्रहण करने का निश्चित हुआ। धूमधामपूर्वक हाथी के ऊपर बैठकर दीक्षा लेने का तय किया। हाथी के ऊपर चढ़ते समय उनकी धोती फट गई तब स्तब्ध हो गए और बोले कि यह क्या अपशकुन हो रहा है, उनके मन में ऐसा हुआ कि मैं दीक्षा ले रहा हूँ पर ये मार्ग सत्य नहीं है। ये इस बात का सूचक हैं। कि साधू निर्वस्त्र ही होते है और ऐसा विचार किया कि मैं सत्यधर्म की खोज करूँगा और तभी से हर एक शास्त्र में खूब बारीकी से संशोधन किया। दीक्षा लेने के बाद गुरुदेव ने एक दिन छोड़कर एक दिन उपवास किया। निवृत्ति लेकर सत्य को खोजने के लिए पूरा दिन शास्त्र स्वाध्याय करते थे। सबसे पहले स्थानकवासी के सभी शास्त्र पढ़े। उसके गुरु दीक्षा लेने के एक वर्ष बाद खुशालभाई मिलने आए, उनको देखकर हीराजी महाराज से पूछा कि हमारे कानजी महाराज कितने दुबले हो गए हैं तब गुरुने कहा कि उन्हें मुझसे भी पहले मोक्ष में जाना है, इसलिए बहुत प्रयत्न करते हैं और खाते-पीते भी नहीं है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कहानगुरु ब्रह्मचर्य में इतने शूरवीर थे कि कोई स्त्री उनके पास नहीं जा सकती थी, ऐसा उनका प्रभाव था ।

गुरुदेव ने उनके गुरु से कहा कि अरे! इन पात्रों को रंग करना, सुखाना, इसमें तो बहुत समय लगता है। यह अच्छा नहीं लगता था। ये क्या है? स्वाध्याय छोड़कर ये सब करना? तब हीराजी महाराज गुस्से में बोले कि पात्र बिना के साधु ढूंढ लाओ। तब कानजी महाराज को हुआ कि पात्र बिनाके साधु भी कभी होते होंगे? ऐसा सुनकर पात्र बिनाके साधुकी खोज करने लगे।

संवत १९७१ के वर्ष में वेजलका में रात्रि के समय एक स्वप्न आया कि पूरा आकाश शास्त्रों से भरा हुआ है और शास्त्र लिखे हुए पटिये उतरते हुए देखे। वे बताते हैं कि सोनगढ़ में परमागम मंदिर बनने का संकेत है। और वीर निर्वाण २५०० में ये स्वप्न साकार हुआ।

सम्प्रदाय में रहकर मुझे ही निर्णय करना पड़ेगा कि सत्य वस्तु क्या है? वहाँ शास्त्र पढ़ते-पढ़ते शास्त्र में आया कि प्रतिमाजी है, तब गुरु को बताया कि ये क्या है? तो गुरुने कहा कि अपन लोग प्रतिमाजी को नहीं मानते। इसलिए कहान गुरुने कहा यह क्या? अंदर मानना कुछ और बाहर में मानना कुछ, नहीं....नहीं....नहीं. ये भी सत्यपना नहीं। यह श्रद्धा ही गलत है यह मार्ग सच्चा नहीं।

धीरे–धीरे सूक्ष्मता से वस्तु का स्वरूप शास्त्र के द्वारा जाना तब हीराजी महाराजने कहा कि तुम सभा में पढ़ो, तुम्हे पढ़ते–पढ़ते तर्क उठेंगे और तुम्हारा ज्ञान खिलेगा। गुरु की आज्ञानुसार १९७४ में भरी सभा में प्रवचन देना शुरु किया। १९७४ के चैत्र वदि अष्टमी को आप के गुरु हीराजी महाराज का देह विलय हुआ।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सवंत १९७७ में वांकानेर में ॐकार नाद का आभास हुआ और पूर्व भव के राजकुमार का स्वप्न आया तथा मैं तीर्थंकर हूँ ऐसा आभास हुआ, ऐसे स्वप्न बहुतबार उनको आते थे।

सवंत १९७८ में वैशाख वदि अष्टमी को विंछिया मैं वड़ के पेड़ के नीचे स्वाध्याय करते थे, उसमें फिर से ॐकारनाद सुनाई दिया और साथ में साड़े बारह करोड़ बाजों की ध्वनि सुनाई दी।

तर्कवादी होने से उनका स्वभाव ऐसा था कि तर्क की कसौटी पर सच्ची उतरने से पहले कोई बात मानना नहीं। इसलिए सत्य की प्राप्ति की जिज्ञासा उग्र से उग्र होती गई। उनकी ख्याति विस्तृत होने से समाज के टोले के टोले आते थे, परन्तु अंतर में यह खटक रहती थी कि मुझे जो चाहिए वह यह नहीं। सच्ची भावना हो तो फलती ही है। तीव्र जिज्ञासा जागी, लगन लगी और न मिले? मिले ही।

सवंत १९७८ में फाल्गुन मास में दामनगर में दामोदर सेठ ने **'श्री समयसार'** हाथ में दिया तब गुरुदेव बोले कि सेठ **''ये तो अशरीरी होने का शास्त्र है''** पूज्य गुरुदेव ने कहा कि ओहोहो! ये समयसार तो अशरीरी दशा प्राप्त करने का शास्त्र है। पूज्य गुरुदेव के ज्ञान में इतन सारी श्रुतलब्धि प्रकट हो गई कि उनके ज्ञानचक्षु सभी शास्त्रों को पहचानना सीख गए कोई गुरु भी नहीं थे, कोई सत्‌गुरु भी नहीं थे परन्तु पिछले भव की इतनी योग्यता थी कि स्थानकवासी–श्वेतांबर शास्त्र पढ़े और जब दिगम्बर शास्त्र हाथ में आये तब उन्हें ऐसा लगा कि ये शास्त्र ही सच्चे हैं और ये शास्त्र ही अशरीरी दशा प्राप्त करा सकते हैं। ऐसी द्रष्टि ज्ञान में खिल गई और वास्तव में आगम की परीक्षा की तथा आगम की सच्ची श्रद्धा की कि यह आगम सच्चे हैं।

अहाहा! जो चाहता था वह मिल गया। अपूर्व आनंद हुआ। उससे

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पहले १९७७ में बोटाद में श्री समयसार मिला था पर तब पढ़ा नहीं। ''अहो! आज मुझे पात्रा विना के गुरु मिल गये जिस गुरुकी खोज में था वे ये कुंदकुंदाचार्य देव मुझे मिल गये।'' खाली समय में गांव के बाहर तालाब के पास बैठकर एकांत में समयसार का स्वाध्याय करके पूरा पढ़ा। तभी से पर्याय क्रमसर–क्रमबद्ध होती है ऐसा अंदर से आया।

पूज्य गुरुदेव को समयसार की बहुत महिमा आती तब बोलते कि अहो! अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों से भरे हुवे इस परमागम के एक–एक शब्द में पद्यमें तथा वाक्यों में ''अपूर्व चैतन्यरस को ज्ञाननेत्र से देखा है और घुंट घुंट कर पिया'' और सभी शंका का समाधान हो गया। और सभी शास्त्रों का मर्म समझमें आने लगा। उसके बाद प्रवचनसार मिला। उसमें आत्मा का अनुभव ही वस्तु है ऐसा जाना। संवत १९८२ में मोक्षमार्ग प्रकाशक मिला और पढ़ते–पढ़ते ऐसी धुन लगी कि खाना–पीना कोई भी प्रवृत्ति अच्छी नहीं लगती थी। सं. १९८२ में वीरजीभाई वकील रहस्यपूर्ण चिट्ठी पूज्य गुरुदेव को जामनगर से दामनगर देने आए पर मिली नहीं।

सं. १९८४ में अमरेली में रहस्यपूर्ण चिट्ठी मिली। सं. १९८४ में द्रव्यसंग्रह भी पढ़ा। सं. १९८४ में मोक्षमार्ग प्रकाशक का सातवा अधिकार पढ़ते–पढ़ते वो खूब अच्छा लगा। तब शास्त्र साथ में नहीं रखते थे इसलिये सातवाँ अधिकार चांदनी में छत पर बैठकर पेन्सिल से अपने हाथ से लिख लिया और साथ में पढ़ने को ले लिया। दामोदर सेठ के वहाँ दिगंबर शास्त्रों का भंडार था और अनेक शास्त्रो से कबाट भरी हुई थी। लाईब्रेरी का शौक था। अमरेली में हंसराज भाई कामाणी थे। उन्हें पुस्तक खरीदने संग्रह करने का शौक था। पू. गुरुदेव पैदल चलकर जाते थे तब रास्ते में जिस गाँव में दिगम्बर शास्त्र हो उस गाँव में चातुर्मास

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

करते थे। ताकि सभी शास्त्र पढ़ सकें। जिस गाँव में जाते हाँ प्रवचन नहीं करते और शांति के लिये नदीकिनारे एकांत में बैठ कर शास्त्र पढ़ते। वे चिन्तन और दोहन द्वारा तत्त्व समझा तथा तत्त्व में से अपने आत्मा का ही रटन किया। १९८६ के साल में पूज्य गुरुदेव अमरेली पधारे। तब चातुर्मास में व्याख्यान (प्रवचन) में श्री समयसारजी पहली बार पढ़ा और कहा कि मुझे इसमें बहुत आनन्द आता है तथा सुनने वालों को भी बहुत आनंद आता था अतः उन्होंने पूज्य गुरुदेव को विनती की कि साहेब यही समयसार ही पढ़ना चालू रखो। अमरेली में कोई विरोध करनेवाला भी नहीं था। इसलिये किसी तरह का भय नहीं था। ये गाँव पू. शांताबेन का होने से वहाँ बाहर से बहुत से लोग आये थे। तथा पूज्य गुरुदेव के साथ नारणभाई के होने से तत्त्व की रेलमछेल चलती थी। तब गुरुदेव को बहुत ही उल्लास था, और नारणभाई के साथ तत्त्वचर्चा करने के उनका समय आनंद से वीतता था। और पूज्य शांताबेन भी तत्त्वचर्चा सुनकर उछल जाते थे।

अमरेली से पूज्य गुरुदेव वींछीया पधारे वहाँ दोनों बहनें (पू. शांताबेन तथा पू. चंपाबेन) का संगम हुआ और महाविदेह में से बिछुड़ी त्रिपुटी यहाँ फिर से मिली।

सं. १९८७ में (इ.स. १९३१) पोरबंदर में चातुर्मास हुआ था। वहाँ भी पू. शांताबेन गये। पू. गुरुदेव की वाणी में आया भेदविज्ञान–सम्यग्दर्शन बिना सभी व्यर्थ है। इस तरह गुरुदेव की वाणी पहले से ही पुरुषार्थ प्रेरक थी।

सं. १९८८ (ई.स. १९३२) में जामनगर चातुर्मास के लिये पधारे। वहाँ भी वीरजीभाई वकील के माध्यम से दिगंबर शास्त्र पढ़ने को मिल गये।

सं. १९८९ तथा १९९० दोनों समय राजकोट में चातुर्मास हेतु

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पधारे। राजकोट समाज को पू. गुरुदेव के प्रति बहुत प्रेम था और वहाँ के लोग बुद्धिमान होने से अध्यात्म शास्त्र पढ़ते थे। इसलिये गुरुदेवश्री ने निर्णय किया कि हमें यही परिवर्तन करना है। ऐसा निर्णय करने का भाव सं. १९८७–८८–८९ और १९९० में दृढ़ निर्णय किया कि बस अब मुझे परिवर्तन करना जरूरी है। तब पोरबंदर वाले देवीदासभाई धेवरीया राजकोट में थे। पू. गुरुदेव ने उनसे कहा कि मुझे परिवर्तन करना है, अंदर में कुछ और बाहर में कुछ यह मुझसे सहन नहीं होता और वह मुझे बहुत ही खटकता है इसलिये मैंने परिवर्तन करने का निर्णय किया है। तब देवीदासभाई बोले करो–करो मैं आपके साथ ही हूँ। वे बहुत ही प्रमोदी थे। उन्होंने बाहर से कुछ सुना तो था कि गुरुदेव परिवर्तन करना चाहते हैं, पर जब तक पू. गुरुदेव ने खुद नहीं कहां तब तक उनके मानने में नहीं आया।

वर्ष १९९० में तो तय ही कर लिया था कि इस साल तो परिवर्तन जरूर करना ही है। उस समय दोनों बहनें वहीं थी, इसलिए पूज्य गुरुदेव ने उनसे भी यह बात कही। फिर दोनों बहनें चली गई।

लेकिन पूज्य गुरुदेव को जो खास बात कहनी थी वह रह गई। उन्होंने नानचन्द काका से कहा कि शान्ताबेन कहाँ है ? काका ने कहा कि साहेब, पूज्य बहन तो अमरेली गए। वहाँ से निकलकर ‘नानचन्द काका अमरेली आये और पूज्य बहन को कहा कि बहन! आपको गुरुदेव याद कर रहे थे! गुरुदेव ने कहा कि मुझे थोड़ी बात करनी है। तब बेनने काका से कहा कि चलो हमें अभी ही राजकोट चलना चाहिए क्योंकि पूज्य गुरुदेव कभी–कभी ही बहनों से बात करते! इसलिए तुरन्त ही दूसरे दिन फिर राजकोट गए और काका ने पूज्य गुरुदेव से कहा कि साहेब शान्ताबेन आये है तो कब मिलने आयें ? पूज्य गुरुदेवने १२

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

बजे बुलाया। हम वहाँ गए और गुरुदेव के पास बैठे तब गुरुदेव ने कहा कि सुना है ना? जी हाँ, पर आपके मुख से सुनें तो ज्यादा अच्छा है। ''बहुत परिवर्तन करना है तो तुम गुस्से तो नहीं होंगे ने? पूज्यबेन बोले कि नहीं साहेब, भड़के ऐसा नहीं है। परन्तु आप जो करेंगे वही हमारे लिए सत्य ही है। हमें आपके ऊपर इतना विश्वास है कि आप जो करेंगे वह हमारे कल्याण का कारण है। पूज्य गुरुदेव ने कहा कि मैं तो कहीं भी चला जाउंगा, मैं तो जंगल में भी चला जाऊँ तब पू. शांताबेन बोले कि अरे गुरुदेव! आप जंगल में चले जाएंगे तो हमारा क्या होगा? साहेब हम जंगल में कहाँ भी जाएंगे? मैं तो कहीं भी चली जाऊँ मेरा तो कोई ठिकाना नहीं। पूज्य बेन के ऐसे प्रश्न से गुरुदेव को बहुत प्रसन्नता हुई और ऐसा बोले कि 'जहाँ हम वहाँ तुम'' तब पूज्य बेन ने कहा कि अब भले ही आप जंगल में भी चले जाओ। ऐसा सुनकर तो वे बहुत खुश हो गई और उन्हें साष्टांग नमस्कार किया। हमने पहले से ही आपको गुरु की तरह स्वीकार किया है, आपकी वाणी वही हमारा जीवन है।

एक स्थानकवासी महाराज को पूज्य गुरुदेवने पूछा कि आप लोग प्रतिमाजी को क्यों नहीं मानते? शास्त्र में तो प्रतिमाजी है। वो महाराज बोले कि कुछ बोल नहीं सकते, स्थानकवासी शास्त्र में ही आता है कि अकृत्रिम प्रतिमा से पूजा होती है ऐसा ही आता है। तब गुरुदेव बोले कि अन्दर में कुछ और बाहर में कुछ ये तो मायाचारी हुई ये बात अंदर में बहुत खटकती थी।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

परिवर्तन से पहले लिखा हुआ पूज्य गुरुदेव का निवेदन :

पूज्य गुरुदेव को परिवर्तन करना था तब ऐसी भावना व्यक्त की कि धर्म की विशाल स्थिति को मैं यहाँ प्ररूपित नहीं कर सकता। इसलिये मेरा मन विचलित होता है। इसलिये यह निर्णय लिया है।

ओम शान्तिः ओम शान्तिः

श्री परम सहज स्वरूप जिनेन्द्र वीतरागाय नमः

निवेदन :

वर्तमान स्थिति का परिवर्तन :—इसमें मेरे आत्म–हित की विशेष वृद्धिकी संभावनाएँ मुझे नहीं लगते। संवत १९८९ के पर्युषण में परिवर्तन करने की विशेष वृत्ति लगी। वैसे तो सं. १९८७ से ही सामान्यरूप से विचार आते थे। उसका कारण धर्म की विशालता का स्वरूप बाहर रखने में हिचकना पड़ता था। वह चित्त में आघातरूप लगता था। उसी प्रकार बाहर की अनेक मन की संकुचितता के कारण जिस स्थिति में हूँ उसमें विरुद्धता न होतो। ठीक, इस प्रकार से कितना ही समय बिता। संवत १९८९ के साल से निवृति लेनी। प्रतिबंध कम करने के लिये बारम्बार विचार आते थे। उसमें से १९८९ के बाद तुरन्त ही निवृति लेकर कहीं विशेष रुकना उसके बहुत ही विचार आते पर कहीं रुकना नक्की नहीं होता था। फिर यह विचार हुआ कि १९९० में राजकोट रहना। पश्चात् निर्णय पर आना। अब....मेरा हित वर्तमान स्थिति में विशेष वृद्धि रूप नहीं लगने से परिवर्तन होता है। मुझे इस सम्प्रदाय में दीक्षित हुए २१ वर्ष हुए। इसमें मेरी यथाशक्ति से सूत्रग्रन्थ पढकर, विचार कर जानकर मुझे इस प्रकार अनुकूलता महसुस हुई अतः यह परिवर्तन है (पूज्य गुरुदेव के हस्ताक्षर की कापी)

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव के प्रति राजकोट के मुमुक्षुओं का अति प्रेम होने से एक मुमुक्षुभाईने तो परिवर्तन कराने के लिये मकान भी ले लिया था। जब चातुर्मास पूर्ण होने को आया तब गुरुदेव भक्तों से कहने लगे कि मुझे अब परिवर्तन करना है। ये बात फैल गई, इस प्रकार स्थानकवासी में यह बात पहुँचने पर बहुत विरोध हुआ। और चातुर्मास पूर्ण हुआ। कार्तिक सुदी १५ के दिन प्राणजीवन मास्टर ने ऐसा गीत गाया कि

"उमराला से ॐकार निकला है कानजी,
राजकोट के रोम खड़े हो जाय कानजी॥"

इस प्रकार ललकार कर गाया। फिर जब ज्ञात हुआ कि स्वामीजी मुँहपती छोड़ने वाले हैं, तब उन्हीं प्राणजीवन मास्टरने बहुत विरोध किया। अतः गुरुदेव ने कहा कि अब यहाँ राजकोट में रहने जैसा नहीं है। देखते–देखते जहाँ अनुकूल द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव होगा वहाँ रहूँगा। भावनगर प्रस्थान किया, पर भावनगर तक नहीं पहुँचे। चलते–चलते उमराला आया और वहाँ रुक गए और कहा कि यहाँ हमें विचार करना है कि कहाँ जाना है? उमराला में सभी स्थानकवासी के श्रेष्ठियों का सम्मेलन हुआ। उसमें दामोदर सेठ राजकोट के सेठ चुन्नीलाल नागजी वोरा वगैरह सभी प्रमुख लोग आये और कहा महाराज! हमारी एक विनंती है कि आप समयसार पढ़ो, प्रवचनसार पढ़ो सभी पढ़ो–व्याख्यान में दिगम्बर शास्त्र भी पढ़ो ! परन्तु यह मुँहपट्टी रखो। महाराज साहेब ने कहा कि मेरे को इसीसे हर्ज, विरोध है। मेरे को दूसरी कोई बाधा नहीं, इसी कारण से मैं स्थानकवासी साधु गिनाऊँगा, मेरे को कोई स्थानकवासी साधु माने, मैं स्थानकवासी को मानता ही नहीं। और मैं स्थानकवासी साधु हूँ ही नहीं—"मैं तो ब्रह्मचारी हूँ।" मुझसे अन्दर से कुछ और बाहर से कुछ बोलना ऐसा असत्य मुझसे नहीं होगा। इसलिये मुझे मुँहपट्टी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ही पहले छोड़नी है। सभी श्रेष्ठी गण नाराज हुए और बोले कि महाराज आप को आहार नहीं मिलेगा आहार! पूज्य गुरुदेव ने कहा कि यह शरीर रहने वाला होगा तो आहार मिलता रहेगा। नहीं तो देखा जायेगा। उस समय पूज्य गुरुदेव के बड़े भाई खुशालभाई बैठे थे, वे बोले कि श्रेष्ठियों! आप को इस प्रकार बोलने की कोई जरूरत नहीं। ये तो मेरे भाई हैं, मैं जीवनपर्यंत इनका पोषण करूँगा। यहाँ मेड़ी (अहाते) उपर पढ़ेंगे और वहाँ से मैं सुनुँगा। तुमको किसी को रोटी नहीं मिले—ऐसा बोलने की जरूरत नहीं है। उसके बाद सभी श्रेष्ठि रोये कि आपके कारण हमारा स्थानकवासी संघ ऊपर उठा है। कानजी स्वामी के कारण स्थानकवासी संघ इतना ज्यादा आगे आया है। आप हमारे स्थानकवासीयों को लात मारकर जाते हो तो, उसकी क्या किंमत है?

पूज्य गुरुदेव ने कहा—मुझको जो अन्दर से लगता है वह कहता हूँ। मुझे तो कुन्दकुन्द आचार्यदेव के शास्त्रों से लगा कि यही सच्चा है और यही सत्य है ये ही मुझे प्रगट करना है। मैं अन्दर में आराधना उसकी करूँ और बाहर में उपदेश दूसरे का दूँ ऐसा मेरे से नहीं होगा। किसी को आना हो तो आये, किसी को सुनना हो तो सुने, नहीं सुनना हो तो न सुने, सभी रोते रोते चले गए।

पूज्य गुरुदेव जहाँ जहाँ चौमासा करते वहाँ वहाँ पूज्य शान्ताबेन और उनके मासीजी दूधीबेन वगैरह बहनें भी जाती। तब गुरुदेव के परिवर्तन की बात आयी कि किस गाँव में रहना और परिवर्तन करना ऐसा गुरुदेव सोचते थे। तब दूधीबेनने पूज्य शान्ताबेन से कहा कि हमारे गाँव में एक भी स्थानकवासी का घर नहीं है तो अपन विनंती करेंगे। तब पूज्य शान्ताबेन ने खूब उत्साह और प्रमोद से कहा—तुम्हारे भाई को पत्र लिखो और कहो कि महाराज साहब को विनंती करे कि साहब! आप हमारे गाँव में पधारे।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

परिवर्तन के सम्बन्ध में पूज्य बहिनने लिखे हुए पत्र

१६ फरवरी, १९३५ गुरुवार
अमरेली.

धर्मप्रेमी भक्तिवंत दुधीबेन और हरगोविंदभाई,

सत्पुरुष के प्रति बहुत भक्ति भरा हुआ पत्र कल पढ़ा, वो पढ़कर बहुत ही आनंद हुआ। सदी में सत्पुरुष के प्रति भक्ति होना वो आत्मा के महान कल्याण का कारण है। दूधीबेन की भक्ति तो थी ही, पर भाई हरगोविंदभाई की भक्ति देख हम दोनों बहनें बहुत खुश हुई। अन्य समाज में गिनाते थे फिर भी सत् पुरुष के प्रति भाव उल्लसते हुए लाभ लेने में समाज आड़े नहीं आता। सत्पुरुष प्रति सच्ची भक्ति, उल्लास वास्तव में ये ही मनुष्य जीवन की सफलता है। आपका पत्र आने के बाद हमने मगनभाई को खबर दी है, पूज्य महाराज साहब को भी खबर दी है। वहाँ से खबर आएगी तो आपको बताएंगे और सोनगढ़ कब आएंगे वो भी बताएंगे। आपने लिखा कि मैं पूज्य साहब पधारें उनके पन्द्रह दिन पहले देश में आ जाऊंगा। इसलिए जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी आने का रखना और तुम देश में आओ तब यहाँ अमरेली एक दो दिन आने का रखना तब अपनी सब बातचीत हो जाय। जब आओ तब हमारे यहाँ ही उतरने का रखना। हरगोविंद भाई वगैरह सभी पूज्य साहेब के पधारने से एक दो दिन पहले आएँ तो भी चलेगा। विस्तार से सब खबर मिलने के बाद पत्र लिखूंगी। हम दोनों बहनों की तबियत अच्छी है।

लिखित—
शान्ताबेन के यथायोग्य वंदन

❀

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

शनिवार–वांकानेर

सत्पुरुष के चरण सेवन की निरंतर इच्छा रखनेवाले दूधीबेन
वांकानेर से लिखि शान्ताबेन का यथायोग्य

एक महिना हुआ और बहिन श्री और मैं जामनगर से यथायोग्य आये हैं। परम पूज्य कृपालुदेव वांकानेर थे। यहाँ ग्यारह दिन रहकर महा सुद बीज को यहाँ से विहार करके थान पहुँचे है और वहाँसे आजकल में चोटीला जाएंगे। तुम्हारा बम्बई से लिखा पत्र जामनगर में कस्तूरबेन पर था, वह कल मिला है।

बहन दूसरा आपको बहुत खुशहाली के साथ लिखना है कि जामनगर से गाँव में पू. साहब पधारे थे तब मैं और पूज्य बहिन श्री गई थी। तब कुछ वातचीत पूज्य साहब के साथ हुई। इसमें पूज्य साहब ने एकबात ऐसी कही कि जोरावरनगर गाँव में मुझे बराबर अनुकूल लगता नहीं कयोंकि जोरावरनगर के ऊपर वढ़वाण और काँप उन दोनों गाँव में स्थानकवासिओं का बड़ा जथ्था (समूह), उसके कारण जोरावर में शांति नहीं रहेगी। ये दोनों बड़े शहर में कितने ही साधु और आरजा को दुःख का कारण बने। इसके लिए कौन सा गाँव अनुकूल हो ऐसी पूज्य साहब ने हमको बात कही इसलिए ऐसा सोचते हुए हमें एसा लगा कि प्रभु, सोनगढ़ गाँव सब तरह से अनुकूल है, क्योंकि वहाँ आगे–पीछे कोई स्थानकवासी के बड़ा गाँव नहीं, और उस गाँव में कोई स्थानकवासी का घर नहीं है, तथा उस गाँव के हवा पानी भी बहुत अच्छे है इसलिए शारीरिक और मानसिक सभी तरह से शान्तिवाला गाँव सोनगढ़ माना जा सकता है। तुमने मुझे जो पहले बात कही थी ये बात भी मैंने साहब को की है कि दूधीबेन एकबार कहते थे कि मेरे भाई हमें कहते थे कि

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जो पू. साहब यहाँ पधारें तो हम अपना घर रहने के लिए देंगे। इस तरह दूधीबेन एकबार मुझे कहते थे। ये सब बात करने से पू. साहब को ऐसा लगा कि सोनगढ़ गाँव अपने लिए सभी तरह से अभी तो अनुकूल है। वहाँ चारित्र विजय का आश्रम है इसलिए सभी तरह से अच्छा है। ऐसा जानकर पू. साहबने सोनगढ़ तरफ जाने का निर्णय किया और उस तरफ विहार किया है। वढवाण से मगनभाई, दासभाई और त्रंबकभाई यहाँ दो तीन बार आ गए। उन्होंने वढवाण में पूज्यसाहब को पधारने की बहुत विनती की कि साहब जोरावर नहीं तो कांप के वास में एक दूधरेज गाँव है वहाँ पधारो। तो पू. साहब ने उनको मना किया और कहा कि सोनगढ़ में ही रहने का अभी सोचा है। अब चोटीला से वींछीया ओर वहाँ से उमराला जाकर सोनगढ़ पधारेंगे। वहाँ आते हुए लगभग महिना तो सहज होगा। अब मगनभाई यहाँ आए थे उनके साथ बातचीत हुई कि पू. साहब को वहाँ पधारते भले एक महिना लगे परन्तु अपने को उसके पहले मकान वगैरह की (सुविधा) तैयारी रखनी चाहिए। तो मगनभाई ने कहा कि आठ दिन में अपने को सब तैयारी रखनी है। और उमराला पूज्य श्री पधारें, वहाँ अपने को सब खबर देनी कि साहब सोनगढ़ में सब तैयारी मकान वगैरह की है। अब, आपको यह बताना है कि तुम्हारे भाई का मकान है वह गृहस्थ के मकान के साथ रहे कि एकान्त में अथवा तो उस मकान में पू. साहब दो महिना चार महिना या तो साल दो साल कदाचित रहें तो तुम्हारे भाई को कोई तकलीफ तो नहीं है न? वैसे कितना टाईम उस मकान मे रहना है ये तो अभी तय (नक्की) नहीं है। अभी तो दो तीन महिने के लिए चाहिए। ये तो तुम्हारे मन के भाव क्या हैं वो जानने के लिए लिखा है। पू. साहब को रहने हाँ कहे तो उसमें किसी भी तरह से उनका मन दुखना नहीं चाहिए। उत्साहपूर्वक भाव से जो उस मकान में रहने की हाँ कहते हों

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

तो तभी अपने को वह मकान चाहिए। नहीं तो दूसरा मकान किराये से लेने की सुविधा हो जायेगी। एक सप्ताह बाद मगनभाई, दासभाई सब तैयारी देखने सोनगढ़ आएंगे, जिससे तुम तुरन्त देश में आने का रखना। बहन ! तुम्हारी बहुत दिन की भावना सफल हो गई है और अपूर्व लाभ और खुशी का समय आया है। ऐसा लाभ मिलना बहुत मुश्किल है, इसमें कितना लाभ है ये सब आपके भाई को बताओ। और उस समय देश में तुम्हारे भाई आये तो अच्छा ऐसा हमको लगता है। अभी एक दो महिने हरगोविंद भाई जो आ जाये तो ज्यादा सुविधावाला होगा। पू. साहेब सोनगढ़ में ही फेरफार करेंगे ये अभी तय नहीं है। वहाँ जाने के बाद क्या अनुकूलता रहेगी उस हिसाब से सब नक्की होगा। मैं और बहिनश्री भी कल अमरेली जानेवाले है, और अभी तो वहीं रुकने का है। ये सब बात तुमको रूबरू सामने कहने के भाव थे। इस सब प्रकार से अपने भाई को पूछ कर आप कब देश में आवोगे और भाई कब आएँगे ये सब विगतवार जानकारी अमरेली मेरे पता पर तुरत खबर करना। तुम्हारा कागज आने के बाद मुझे मगनभाई को बताने का है।

ये सब बात तुमने मुझे पहले कही थी जिससे मुझे विचारने से ठीक लगने से पूज्य साहब को कहा। तुम्हारे पुण्य अभी खिले हैं। और भावनाओं का परिणाम आने का काल आ गया है इसलिए सब सही ठीक उतर गया है। तुम्हारे पुण्य के कारण ये सब हुआ अतः ये हाथ से तुमको कागज लिखते हैं। नहीं तो आत्मदशा के कारण ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं होती।

मेरी और पूज्य बेनश्री की शारीरिक स्थिति साधारण रहती है। एकदम अच्छी नहीं।

इस पत्र में जितने जवाब मांगे है उसमें से कोई भी भूले बिना

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

विचार के भाई को पूछ कर सब विस्तारपूर्वक से जवाब अमरेली तुरत ही लिखना।

लि. सद्गुरुना शिष्य.

अमरेली का पता
शान्ता को देना
मणीलाल जेचंद खारा
गोखलाणावाला
मु. अमरेली

卐

हरगोविंदभाई ने दोनों बहनों को लिखा पत्र

भक्तिवंत पूज्य दोनों बहनों के चरणों में वंदन.

हमारा अहोभाग्य है कि आपने ऐसा उत्तम सम्बोधन भरा पत्र लिखा, ये जानकर बहुत आनन्द होता है।

हमारे गाँव सोनगढ़ में पूज्य साहब जी आए और हमारे ही घर में वे रहें ऐसा सुअवसर जलदी आए। हमारे ही घर में वे विराजें ऐसी हमारी अंतरंग भावना है और हम जरूर आठ दिन पहले सोनगढ़ पहुँच जाएंगे, उसके पहले उमराला गाँव में पूज्य साहब को विनती करने जाएंगे।

ऐसे महापुरुषों के जहाँ चरण पड़ें वो हमारी भूमि भी धन्य हो जाएगी। और आगे भविष्य में तीर्थधाम बन जायेगी।

जरूर पधारो जरूर पधारो साहेब.

ली. हरगोविंदभाई मुम्बई

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

१० मार्च १९३५ रविवार

अमरेली

सन्त पुरुषों की सेवा की सदा इच्छा रखने वाले भक्तिवंत दूधीबेन

आपका पत्र उमराला से लिखा भायाणी के साथ मिला था। पूज्य उपकारी कृपालु गुरुसाहेब शुक्र या शनिवार को सोनगढ़ पधारने वाले थे, तो अब पू. प्रभु श्री वहाँ सोनगढ़ सुख शांति से पहुँच गये होंगे। वहाँ सोनगढ़ में कितनी स्थिरता है वो बताना और पूज्य प्रभुजी के शरीर में अब सभी प्रकार से सुख शान्ति होगी। बाकी कोई नवीन समाचार हो तो बताना। शांतिभाई को कहना कि यहाँ हम को सभी प्रकार से विगतवार जानकारी दें। तुम्हारे जानने में जो आया हो वो बताना। वहाँ कितनी स्थिरता है? पू. साहब का स्वास्थ्य कैसा है वगेरे समचार बताना। यहाँ पू. बेनश्री की तबियत अच्छी है। ये शरीर भी अच्छा है।

पूज्य प्रभुश्री को हमारा भक्तिभाव से वंदन हो.

पत्र का जवाब तुरत ही देना.

ली. बेन शान्ता का

यथायोग्य वंदन

卐

परिवर्तन बाद का पत्र

भक्तिवंत बहेन दूधीबेन

आपका पत्र मिला। श्री कृपालु गुरुदेव के वेष में परिवर्तन चैत्र सुद तेरस को हुआ ऐसे समाचार आपने बताये (दिये) यह जानकर आनंद हुआ है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

परम पूज्य कृपालु गुरुदेव सुख शान्ति में विराजते होंगे। उन श्री को हमारा अत्यन्त भक्तिभाव से वंदन पहुँचे।

आप और हरगोविंदभाई पूज्य साहब की आज्ञा के अनुसार व्यवहार रखते हो वो बहुत अच्छा और लाभरूप है। अभी भी ऐसा ही वर्तन रखना विशेष लाभदायक है।

पूज्य गुरु साहब कब तक निवृत्त रहेंगे और कब से पढ़ना (व्याख्यान) शुरु करेंगे वो बताना। लोग वहाँ कौन कौन दर्शन के लिए आते हैं ये बताना।

हरगोविंदभाई वगेरे पूज्य साहब के प्रति प्रेम भक्ति से अच्छा लाभ लेते हैं। तीनों काल के लिए सत्पुरुषों के प्रति प्रेम भक्ति लाभरूप ही होती है—यह वस्तु स्थिति है।

परिवर्तन शान्तिपूर्वक हो गया ये बहुत अच्छा हुआ है। पूज्य साहब की शारीरिक स्थिति अच्छी होगी।

हमारी दोनों बहन की तबियत साधारण रहती है।

लि. सत्‌की छाया इच्छनार
बेन शान्ता का यथायोग्य

卐

संवत १९९१ (१९३५) के फाल्गुन वद ३के दिन पूज्य गुरुदेव सोनगढ़ पधारे। और दो चार मकान देखे और सोनगढ की पोस्ट ओफिस के पास हरगोविंदभाई के मकान में रहे। दो तीन दिन के बाद सोनगढ़ में रहनेवाले हीराभाई दामाणीने पूज्य गुरुदेव को विनती की कि साहेब हमारा मकान देखो आपको कैसा लगता है। पू. गुरुदेव खुद अकेले शाम को देखने गए। उनको बहुत अच्छा लगा ये तो अच्छा है और यहाँ कोई

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

स्थानकवासी का घर नहीं, इसलिए अपने को तो यहीं परिवर्तन करना है। ये स्टार ओफ इन्डिया का मकान देखते ही मन शांत हो गया। और हमको ऐसा लगा कि अब हमको हमारा घर मिला। यहाँ एकान्त और खूब शान्ति है। तब पूज्य गुरुदेवने कहा कि खुशालभाई, हरिभाई भायाणी, प्रेमचन्दभाई तथा दोनों बहनें आप सब मकान देख आओ। सभी को देखकर अच्छा लगा! वो मकान बाँस की जालीवाला था। बंगला जैसा था। सब ने कहा कि साहब यहाँ अपने को बहुत शान्ति रहेगी। बस अब सब विकल्प छोड़ो मुझे तो यहीं रहना है। उसके बाद दोनों बहनों से कहा कि आप दूसरे गाँव चले जाओ। आप होंगे तो सभी बहुत टीका करेंगे। तब समाचार पत्र में बहुत विरोध आता था इसलिए जाने को कहा। और फिर दोनों बहनें अमरेली चले गए। बाद में जब विरोध शांत हुआ तब दोनों बहनें आ गयी।

पूज्य गुरुदेव के साथ उनके चार गुरुभाई आये थे। (१) जीवराजजी, (२) राज्यपालजी, (३) कसदचन्दजी, (४) जीवणलालजी। ये सब स्टार ओफ इन्डियाना के बंगले में आ गए। और पूज्य गुरुदेव ने तय किया कि अच्छे दिन और अच्छे वार को परिवर्तन करेंगे। तब बोले के दिगम्बर प्रतिमाजी तो साक्षात नहीं पर भगवान का फोटो तो लाकर दो। तब भावनगर से हरिभाई भायाणी ने श्री पार्श्वनाथ भगवान का फोटो लाकर दिया और चैत्र सुदी तेरस मंगलवार को महावीर भगवान का जन्म कल्याणक के दिन भगवान श्री पार्श्वनाथजी की तस्वीर के सामने मुँह पट्टी का त्याग किया, और कहा कि इस झूटे धर्म का मैं त्याग करता हूँ और कहा कि मैं खोटे धर्म का त्याग करता हूँ। आज से मैं दिगम्बर धर्म अंगीकार करता हूँ। मैं मुनि नहीं, पर ब्रह्मचारी श्रावक हूँ।

पूज्य गुरुदेव ने कहा कि अपन भी बड़े अक्षरो में अखबार में छपा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

दो कि कानजीस्वामी ने स्थानकवासी का चिन्ह मुहपट्टी का त्याग किया है। और सत्य सनातन दिगम्बर धर्म को अंगीकार किया है। तब अखबार में बहुत ही विरोध आने से अपने मुमुक्षु समाज को लगा कि लोग अपने गुरुदेव का इतना अधिक विरोध कर रहे हैं तो अपने को उनका सामना करना चाहिए। तब पूज्य गुरुदेव बोले कि बिल्कुल नहीं, मेरा अभिप्राय है कि अपने को शान्ति रखनी और जवाब नहीं देना, ये ही अपना सिद्धान्त है। अपने आप ही ये लोग शान्त हो जाएंगे। पूज्य गुरुदेव स्टार ओफ इन्डिया में तीन साल ३ महिने ३ दिन रहे और सं. १९९४ में स्वाध्याय मन्दिर की जगह ली गई और स्वाध्याय मन्दिर की स्थापना हुई। तब से ही पूज्य गुरुदेव का मन स्थिर हो गया। और जैसे मूलस्थान में आये हों ऐसा लगा। स्वाध्याय मन्दिर में जिनवाणी की स्थापना वैशाख वदी ८ के दिन पूज्य बेन चंपाबेन के हाथ से करायी।

पूज्य गुरुदेव परिवर्तन करने के पश्चात् हीराभाई के बंगले में तीन साल, तीन महिने, तीन दिन रहे और उसके बाद स्वाध्याय मन्दिर में आए। रामजीभाई माणेकचन्दजी दोशी ने पूज्य गुरुदेव को कहा कि आपने परिवर्तन तो किया पर सोनगढ़ में ही रहना और दूसरे गाँव में न जाना– ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है हमारे राजकोट में आना ही पड़ेगा। इसलिए गुरुदेव ने कहा कि आएंगे। तीन साल बाद बाहर पहली बार निकल रहे हैं तो शत्रुंजय की यात्रा करके, भगवान के दर्शन करके, फिर बाहर निकलेंगे। यात्रा करने निकले तब गान्धीजी की लड़ाई चलती थी। जिसमें रामजीभाई, बेचरभाई वगैरह पकड़े गए। इसलिए गुरुदेव बोले कि अपन यात्रा करके सोनगढ़ वापस आ जाएंगे, वो सब पकड़े गए इसलिए अपने को आगे नहीं जाना। वे सब छूटेंगे उसके बाद जायेंगे।

पूज्य गुरुदेव संघ सहित पैदल चलते हुए शत्रुंजय की यात्रा करने

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

निकले। शत्रुंजय की यात्रा बाद वहाँ मन्दिर में दिगम्बर प्रतिमाजी के ऊपर शान्तिनाथ भगवान तथा पाँच पाँडव की प्रतिमाजी के दर्शन पहली बार किये। अहो! हो अपने को दिगम्बर प्रतिमाजी के दर्शन करने में कितना आनंद आता है। तब दोनों बहने एक दूसरे से बातें करती है कि अपने को कितना आनंद आता है कि अपन ने पूर्व में तो साक्षात् भगवान के दर्शन किए थे, पर अभी यहाँ भगवान का विरह हुआ। पर इस भव में भगवान की प्रतिमाजी के दर्शन भी नहीं? अपन ऐसे युग में जन्मे कि अपनेको प्रतिमाजी के दर्शन भी नहीं? ऐसी दोनों बहनें चर्चा करती थीं कि अपने राजकोट जाएंगे तब विचारेंगे कि अपने को क्या करना चाहिए कि जिनमन्दिर बने। ऐसी भगवान की बात पूज्य गुरुदेव के पास पहुँच गई। तब गुरुदेव ने कहा–बात तो सच्ची है, सभी भावना भाओ।

दोनों बहनें चर्चा करती हैं कि स्वाध्याय मन्दिर बना तब दो चार भाईयों ने मिलकर रूपए दिए थे। उस समय तेरह हजार में स्वाध्याय मन्दिर बना था। हमारे पास तो कुछ नहीं है तो फिर जिन मंदिर बंधवाने के रूपए कहाँ से निकालेंगे। यात्रा करके सोनगढ़ वापिस आ गए यात्रा करके सीधे राजकोट जाना था, परन्तु गए नहीं। एक महिने बाद रामजीभाई वगैरह जेल से छूटे तब राजकोट गए सं. (१९९५)

फिर दोनों बहनों ने विचार किया कि जिनमंदिर अपने को ही बनाना है। गुरुदेव तो कुछ बोलते नहीं। इसलिए फिर हम दोनों बहनों ने विचार किया कि यह नानालाल भाई बहुत उत्साही हैं।

हम उनके घर उतरे थे तब हमने विचार किया कि ये आदमी बहुत उत्साहित हैं। उनकी पत्नि जड़ावबेन भी बहुत उत्साही हैं, इसलिए हम दोनों बहनों ने एक गीत गाया—

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सोनगढ़ में मन्दिर बंधावो रे नानालाल भाई,
जिनेन्द्रों की प्रतिमाजी पधरावो रे नानालाभाई,
भक्तों का आनन्द मंगल करावो रे नानालालभाई

वे दोनों व्यक्ति (लोग) खूब सरल थे। ये गाया तब तो दोनों लोगों के रोम–रोम में उल्लास छा गया। कि अहोहो! अपने को मन्दिर बंधवाने को दोनों बहनें कह रही हैं? तो निश्चित अपन मंदिर बंधवाएंगे। ऐसा अपना सद्भाग्य कहाँ है? कि मन्दिर बनवाएं।

फिर नानालालभाई और जड़ावबेन पूज्य गुरुदेव के पास गए कि साहब! ''सोनगढ़ में हमको जिन मंदिर बंधाना है।''

इसलिए गुरुदेव ने कहा हमको नहीं रामजीभाई को कहो! मैं कोई बात में नहीं पड़ता हूँ। उसके बाद रामजीभाई को कहने गए। रामजीभाई ने कहा बहुत खुशी की बात है। जिनमन्दिर बनावो इसमें हम बहुत खुश हैं। हम तुमको मदद करेंगे।

राजकोट में पूज्य गुरुदेव दस महिने रहे। राजकोट समाज बहुत बुद्धिशाली था इसलिए पूज्य गुरुदेव का वहाँ से निकलने का मन ही नहीं हुआ। वहाँ से जैसे–तैसे करके, बड़ी मुश्किल से मनको मनाकर निकल करके सीधे गिरनार आए।

शत्रुंजय की तो यात्रा की। गिरनार गिरि में तो साक्षात् नेमिनाथ भगवान के दर्शन करने में इतने भाव आए–इतने भाव हुए...सहेसावन में हम बैठे और हम दोनों बहनों ने भक्ति करवायी तब सभी के इतने भाव आए कि गुरुदेव तो साष्टांग नमस्कार करने लगे। आ....हा...हा!! नेमिनाथ भगवान! अपनी ये तपोभूमि है। गुरुदेव को इतने भाव आए और साथ में भक्तो को भी इतने भाव आए कि ये नेमिनाथ भगवान की तपोभूमि है। गुरुदेव ने कहाँ कि आज की यात्रा सफल हुई। आज

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पुरे संघ की यात्रा सफल हुई।

वहाँ से पाँचवीं टूँक सब गए। वहाँ भी इतने ही भाव आए कि वहाँ भी भक्ति की खुब धूम मचाई। पूज्य गुरुदेव ऊपर अंगुलि बताकर कहते कि इस ही जगह पर नेमिनाथ भगवान सिद्ध स्वरूप में विराजते हैं और वे सिद्धों की महिमा गाते।

वहाँ से नीचे उतरकर जिनमन्दिर में खूब भक्ति करवाई। हमारा गीत गाने का प्रयोजन तो एक ही था कि सोनगढ़ में जिनमन्दिर बने। नेमिनाथ भगवान के प्रति खूब ही भक्ति भाव आते। तब नानालाल भाई भी हाजर थे इसलिए उनके भाव भी दृढ़ हो गए। अपन मन्दिर बनाओ, बनाओ, मन्दिर बनाओ। सोनगढ़ आए तब नानालालभाई ने कहा कि मन्दिर बनाने के लिए बड़ी जगह नक्की कर देवें। तब हम दोनों बहनों को हुआ कि 'हाश' अपनी भावना सफल हुई। अपने को किसी को कहना नहीं पड़ा। बार-बार कहना यह अच्छा नहीं लगता। चलो जिनमंदिर के लिए जगह बताओ और फिर शिलान्यास नक्की करते हैं। तब हम दोनों बहने बोली कि महाभाग्य की बात है।

स्वाध्याय मन्दिर की जगह ली तब ये सब जगह साथ में ही ले ली थी। उसमें से मन्दिर की जगह बतायी और एक पंडित को बुलाया और शिलान्यास हुआ। शिलान्यास के पाये में धूल खोदी और फिर से पाया वापस भरा। तब धूल खूब बच गई। इसलिए जो कारीगर आया था उसने कहा कि यह बहुत अच्छे शगुन हैं। पाया खोदा और धूल जो बचे तो ये अच्छा शगुन कहलाता है। ये सब बहुत शगुनवाला है तुम्हारे इसमें धर्म का बहुत ही प्रचार होगा। ये होना ही था तो कितना प्रचार हुआ। शिलान्यास श्रावण सुदी तेरस के दिन (सं. १९९६) में हुआ। फिर नानालालभाई की तबियत नरम हो गई इसलिए उनको ऐसा हुआ

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कि मैंने मेरे भगवान पधराए नहीं और मेरी तबियत नरम हो गई, इसलिए पूज्य गुरुदेव ने हमें आज्ञा की कि तुम दोनों बहने भगवान लेने जाओ और बेचरभाई यहीं रहे कि भाई की तबियत नरम है, इसलिए एक महिने में १०० कारीगर रखे और एक महिने में मन्दिर पूरा हुआ। उन्होंने कहा कि मुझे तो भाई की हाजरी में ही मन्दिर पूरा बनाना है, इतना भाई के प्रति बहुमान था।

हम दोनों बहनों को पूज्य गुरुदेव ने जयपुर से प्रतिमाजी लाने के लिए कहा कि वीतरागी प्रतिमाजी तो तुम ही परख सकते हो दूसरा कोई वीतरागी मुद्रा प्रतिमा की परख नहीं कर सकेगा। हमने साहेब को कहा जैसी आपकी आज्ञा। हम दोनों बहनें तथा नानालाल भाई की पत्नि जड़ाव बेन और उनके पुत्र आणन्दभाई इस प्रकार हम चार लोग जयपुर गए। हमको मालूम था कि मन्दिर इतनी जल्दी से बनाना है तो प्रतिमाजी का आर्डर देंगे तो कितने महिनें निकल जाएंगे। भगवान की कृपा से अच्छा हुआ कि हम जयपुर प्रतिमाजी वालो के यहाँ गए। उसके यहाँ गलियारे में सामने ही तीन प्रतिमाजी जो अभी सीमंधर भगवान, शांतिनाथ भगवान और पद्मप्रभुजी भगवान सामने होकर लाईन में बैठे थे। हमने कहा कि ये भगवान तो बहुत ही सुंदर हैं इसलिए अपन तैयार ही ले लेते हैं। नये बनवाने का तो टाईम ही नहीं है। फिर हमने तीनों भगवान का बहुत निरीक्षण किया तो शान्तिनाथजी की प्रतिमा में जरा दाग था, तो कहा कि यह तो लाखु कहलाता है। ये तो शकुन कहलाता है, सीमंधर भगवान तथा पद्मप्रभु भगवान के चेहरे में थोड़ा फेरफार करना पड़े— ऐसा था। इसलिए जयपुर में ४–५ दिन रुके। पोष महिने में जाने के कारण वहाँ ठंडी बहुत थी। वहाँ से प्रतिमाजी को सोनगढ़ लाने के लिए खोखे में पैक करवाया। किस प्रकार ले जाएंगे, १७ मन वजन है। उन्होंने कहा गुड्स में नहीं। फिर हमने कहा हम तो भगवान को अपने साथ

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ही लेकर जाएंगे। हम को गुड्स का भरोसा नहीं आता, पर छुट्टी मिले तो साथ में ले जा सकते है न? तो हमने कहा कि जब तक छुट्टी नहीं मिलती तब तक हम यही बैठे है। जब परवानगी मिलेगी तब जाएंगे। ऐसा करके हम तो बैठे। हरगोविंदभाई साथ में आए थे। उन्होंने खूब मेहनत की, और अजमेर गए इजाजत के लिए। और हमने अभी भोजन किया नहीं था और जवाब आया कि इजाजत मिल गई है और भगवान अपने साथ ही आयेंगे ऐसा सुन हम बहुत खुश हुए। भगवान को साथ में ही ले जाना है। फिर हमारे साथ भगवान की पेटी लेकर तैयार हो गए। हमारे साथ में दुसरे भाई चुनीभाई सेठ थे उजमबेन के पति। हमने मिलकर भगवान को चढ़ाया फिर हम ट्रेन में बैठे और अजमेर आए। वहाँ तो हमको किसी ने रोका नहीं कि जाओ। उसके बाद मेहसाणा आया वहाँ गाड़ी बदलना पड़ता था इसलिए फिर से भगवान की पेटी उतार दी, हमने कहा पेटी उतर जाय तो हम भी उतर जाएंगे। हम हमारे भगवान को छोड़कर नहीं जायेंगे। हमको गुड्स का भरोसा नहीं आता तो वह सब मजदूर बोले कि यहाँ से तो ऐसी कितनी ही पेटी जाती है तो तुम्हारे भगवान कैसे? हमने कहा हमारे भगवान अपूर्व है, हमको तो भगवान मिले ही नहीं थे ये पहले–पहले भगवान मिले हैं, इसलिए हम तो हमारे भगवान को साथ ही ले जाएंगे। छोड़कर नहीं तो वे ऐसे खुश हुए कि इन लोगों को भगवान के प्रति कितने अच्छे अमूल्य भाव हैं। हमको तो किसीका भी विश्वास नहीं आता। अनुमति नहीं मिले तो हम नहीं जाएंगे। तो वहाँ भी खुब मेहनत की हरगोविंदभाई, चुनीभाईने। तो वहाँ से अनुमति मिल गई। मेहसाणा से रात को रवाना हो गए। और रामजीभाई को तार कर दिया था। इसलिए सबको मालूम था कि सुबह मीक्ष ट्रेन में आएंगे। इसलिए सब स्वागत के लिए सोनगढ में ढोल–नगाड़ा लेकर सुबह स्टेशन पर आए। हमने तो कभी भी ध्वज, झंडे, कुछ

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

भी कभी देखे नहीं थे। ढ़ोल–नगाड़ा त्रांसा बाजा देखे नहीं थे। स्थानक में एक दिवार में देखा था परन्तु ऐसा कोई नहीं। ये सब देखकर इतना हर्ष और आनन्द आया। रामजीभाई सबको लेकर स्टेशन पर आए थे।''

पहले स्वाध्याय मन्दिर के आसपास कोई भी मकान नहीं थे। इसलिए मिक्स ट्रेन आती थी वह दिखती थी, इसलिए गुरुदेव ने कहा इस गाड़ी में दोनों बहनें भगवान को लेकर आ रही हैं। तब गुरुदेवने कहा—कि मुझे तीन लाइट जगमगाती हुई एकदम प्रकाश से दिखी तब मैंने नक्की किया कि तीन भगवान को लेकर बहने आ रही हैं मेरी नजर तीव्र जगमगाती लाईट पर गई और तीन भगवान बहुत ही सुन्दर हैं।

हम वहाँ से मुहूर्त दिखाकर आए थे कि गाँव में भगवान का प्रवेश करावेंगे। इसलिए मुहूर्त देखकर कहा कि महा सुद दूज को गाँव में प्रवेश करावें। हम आए अमावस के दिन इसलिए हमने कहा कि भगवान को स्टेशन पर रखने की व्यवस्था करो। कोई एक रूम में रखने की। महासुद दूज के दिन सब धूमधाम से गाते बजाते सामने स्टेशन गए और महासुद दूज के दिन भगवान को लाए। बेचरभाई को ये दिगम्बर धर्म जमता नहीं था। नानालालभाई को अच्छा लगाने के लिए करते थे। पर जब भगवान पधारे, स्वागत जोर–शोर से हुआ तब उनको ऐसा उत्साह आया कि आ...हा...हा...हा...ऐसे भगवान किसी दिन कभी देखे नहीं थे। वे तो गाड़ी में सारथी हो गए। सारथी होकर बैठ गए कि मैरे को ही बेलगाड़ी चला कर लानी है, और जहाँ स्वाध्याय मन्दिर में पेटी रखी और खोलने गए वहाँ हमने कहा कि पहले नीचे नहीं ऊपर से खोलो ऊपर से धीरे धीरे खोला गया। उसमें पहले भगवान सीमंधर का मुँह खुल गया। जहाँ पेटी खुली और घास हटाया तो सीमंधर भगवान की मुद्रा दिखी। वहाँ सब जने ऐसे खुश हुए कि छोटालाल रायचंद तो पृथ्वी पर से चार फूट ऊचे

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कूदे कि आ....हा...हा...ऐसे भगवान! और गुरुदेव तो एकदम स्थिर हो गए आ....हा....हा...नाथ! आपका विरह हमको था वो अब इन प्रतिमाजी के दर्शन कर शांति मानेंगे। आँखे बंद करके कहे कि आहाहा अपने को भगवान मिले। गाते बजाते स्टेशन से भगवान गाँव में पधारे, और भगवान का स्वागत स्वाध्याय मन्दिर के चौक में हुआ। और पूज्य गुरुदेव रहते थे उनके सामने के कमरे में भगवान को विराजमान किया। वहाँ भगवान एक महिने के लिए मेहमान कै जैसे रहे। गुरुदेव के पास में भगवान होने से अति उत्साह था। उनको ऐसे भाव होते कि आहार पानी से निवृत्त होकर भगवान के कमरे में जाकर बैठ जाते। भगवान के पास बैठ के अकेले अकेले भक्ति करते और बहुत खुश होते थे।

अमृतभरी मूर्ति निहारी रे उपमा घटे नहीं कोई
सीमंधर जिन आज नयनो से दिखे

ऐसी भक्ति गुरुदेव प्रतिष्ठा तक अकेले करते और कभी कभी दो चार भाई बैठते।

गाँव के लोग निकलते तो उन्हें बुलाकर बताते अरे नथु!! तुने भगवान देखे? तो कहा नहीं बाबा नहीं देखे! तो गुरुदेव कहते यहाँ आ मैं तुझे भगवान दिखाता हूँ। उसका हाथ पकड़कर कमरे में ले जाते और कहते देखो यह भगवान आए हैं तूने देखे थे? तो वह कहता ऐसे भगवान मैंने तो देखे नहीं है।

प्रतिष्ठा के समय कमरे में से भगवान को मंडप में विराजमान करते समय हमें डर लगता। मैं और बहन साथ में ही रहते जिससे भगवान को सम्भाल कर मंडप में ले जाय। तब गुरुदेव भी साथ साथ घूमते थे कि भगवान को बराबर ले जाओ। ध्यान से लेना। बराबर ले जाना। ऐसे सब भाव गुरुदेव को भी आते थे। हमारे लिए भगवान पहले पहले हैं इसलिए

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

हमको नया लगता है। ये लोग पेटी को धक्का दें तो हम कहते धक्का मत लगाओ, सब मजदूर भी खुश होते इसलिए हम सब मजदूरों को दो–दो रूपये देते। वो भी भगवान सम्भाल कर ले जाते और खुशी मनाते। अहा! आज तो भगवान मिले। ऐसे ही भगवान, ऐसी ही वीतरागी मुद्रावाले अपने भगवान हैं। अब भगवान का विरह हम भूल जायेंगे। सभी को इतना आनन्द आया कि कोई नाचने लगे कोई गाने लगें। ऐसे अच्छे भगवान। आंखो की कीकी पुतली करवाई तो सजीव जैसे लगते चैतन्य भूर्ति लगते थे। साक्षात भगवान हों ऐसे भाव लगते थे।

सब कहते थे कि यह कीकी पुतली कराई ये बहुत अच्छा किया। प्रतिष्ठाचार्य के लिए वहाँ रामचन्द्रजी का नक्की करवाया। हमको लगा कि सोनगढ़ में कौन करेगा? किसी को खबर ही नहीं थी कि प्रतिष्ठा कौन कराए? वहाँ हमको मिले थे तब पूछा कि पंडितजी आप प्रतिष्ठा करवाते हों तो उन्होंने हाँ कहा। हमारे सोनगढ़ में आओगे? तो उन्होंने कहा क्यों नहीं आऊंगा, हम आपको पत्रिका लिखेंगे (भेंजेगे) तो आइयेगा। इसलिए हमने पता ले लिया। हमने कहा कि दूसरे पंडितजी को नहीं बुलावें ना! तो उन्होंने कहा नहीं मैं ही आऊंगा, उनको उल्लास बहुत था इतना उल्लास कि पहले–पहले स्थानक को पलटने में वे ही काम में आएंगे ऐसा था। वो भी समझ गया कि सब मूढ जैसे हैं किसीको कुछ आता नहीं है। हम तो मेढे जैसे लगते, हमको किसी को कोई समझ भी नहीं पड़ती। उनको हम समाचार दिए तो वह एक महिना पहले आये और उसने कहा कि मुझे दर्जी, राजमिस्त्री (कड़िया), सुथार, मजदूर, लुहार चाहिए। हमने कहा ठीक हैं। पूरा प्रतिष्ठा का खर्चा नानालालभाई, बेचरभाई वगेरे तीनों भाईयों का था इसलिए हमने बेचरभाई को सब लिस्ट बनाकर दिया। तब बेचरभाईने कहा अरे तेरे लड़के कितने हैं? फिर तू इसका क्या करेगा वह कहता है मैं ले जाऊंगा। तो फिर कहा कि अरे

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

तेरे कितने लड़के है! तू इतना सारा लिखा के ले जा रहा है। तब उसने कहा कि मैं तो बालब्रह्मचारी हूँ, मेरे कोई लड़का नहीं है ये तो हमारा रिवाज है इसलिए ले जाऊंगा। एक महिना पहले यहाँ दर्जी को बिठाया। यहाँ तो कोई जानता ही नहीं था। शुभ तिथि को प्रतिष्ठा शुरु की। तो कोई जानता ही नहीं। उदक चन्दन बोलते उसमें कोई समझता ही नहीं। उदक चन्दन किसी दिन बोला नहीं कि सुना नहीं था इसलिए कोई–कोई तो इसकी नकल करते।

हम दोनों बहनों ने कहा कि कितने भाव से पूजा करते हैं, तो अपने को भी भाव से पूजा करनी चाहिए। हमको तो आती नहीं, इसलिए क्या करें? हमने आणंद भाई से कहा और पण्डितजी को कहा इन भाई के पास सब कराना और हमनें उनको सौंप दिया। आनन्दभाई भक्ति वाले थे, हमने कहा कि भाई के पास आपको जितनी पूजा करवानी हो उतनी करना। आणंदभाई पूरे दिन खड़े रहते। कलोलवाले भाई आये थे। सोमचंद अमथालाल वाडीभाई वगैरह पूरी मंडली बहुत अच्छी पूजा करते। साथ में बाजे तबले के ताल से करते, तब हमको ऐसा होता कि ये अच्छा होता है, पर हम कुछ समझते नहीं थे।

मंडप में अपन जैसे एक वेदी करते हैं वैसे पांच वेदी छोटी–छोटी अलग–अलग की–एक माता-पिता की, एक इन्द्र–इन्द्राणी, एक मंडल विधान की वेदी, एक भगवान विराजमान करने के वेदी, इस प्रकार पांच अलग–अलग वेदी मंदिर के चौक में की थी। सब वेदी में अलग–अलग काम करते थे। प्रतिष्ठा तो इतनी अच्छी कराते हैं कि जन्म कल्याणक होने का था तो अपने को मालूम नहीं पड़े। ऐसा कहते कि तुमको सबको सुबह जल्दी आनेका है। और रात को सब तैयारी कर लेते। हम सुबह जाते तब ऐसा लगता कि अरे! उसने यह कब तैयार किया। हम सब

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

को इतना आश्चर्य होता कि हम नाचने लग जाते के अहो.....हो इतना अच्छा करते है। भगवान के कल्याणक साक्षात् हो रहे हों ऐसे भाव हमको आते थे कि अपने सामने ही साक्षात् कल्याणक हो रहें हैं। गर्भ कल्याणक में नानालालभाई और जड़ावबेन बैठे तो इतने सुन्दर लगते कि ये गर्भ कल्याणक कितना अच्छा लगता है। इन्द्र भी उनके शोभित थे और उनके घर के भी सब बहुत सुंदर, सब पुण्यशाली ऐसे सुंदर थे कि लगता था साक्षात् इन्द्र उतरे हो। फिर जन्म कल्याणक कराया कि दूसरे से इन्द्र भी और इनके घरवाले भी ऐसे सुन्दर लगते।

फिर जन्म कल्याणक कराया, अब एक दूसरे से बातें करते हैं ऐसा तो कभी देखा नहीं। जन्म कल्याणक के दिन हमसे कहा कि सुबह साढ़े पांच बजे आना, इसलिए हम तो जाकर बैठे। वहाँ तो एकदम घन्टे बजने लगे। एकदम झालर बजने लगी। बेन्ड बाजे बजने लगे। तब सबको ऐसा हुआ कि यह सब क्या हुआ? इस तरह एकदम जय-जयकार होने लगा ये कितना अच्छा हमको तो सब नया लग रहा है पहली बार देखा तो सब बहुत ही नया लगता। हम सब पागल–पागल हो जाते। ऐसे करते करते पंच कल्याणक पूरे हुए और भगवान की प्रतिष्ठा मंदिर में करने का समय आ गया। जिन मंदिर में जहाँ भगवान पधारे वहाँ सब बहुत स्वागत करते। रामजीभाई बोले पधारो भगवान, पधारो भगवान! ऐसा एक साथ दस लोग बोलने लगे। ये सुनकर गुरुदेव भी बोले कि यही अपने भगवान है कि जिनका अपने को विरह था वे ही भगवान सामने आए। और गुरुदेव ने साष्टांग नमस्कार किया। साष्टांग नमस्कार तो किया और शरीर इतना ज्यादा काँपे और आँखो में से चौधार आसूँ बहे। और खड़े ही न हो सके इतने चौधार आसूँ बहे। तब साक्षात् सीमंधर भगवान याद आए कि अरे भगवान हम आपका विरह करके आये अब हम आपकी प्रतिमाजी में संतोष मानते हैं—ऐसा कहते हुए उनका हृदय भर गया

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

और अश्रुधारा बही। फिर रामजीभाई ने गुरुदेव को हाथ पकड़कर खड़ा किया। फिर भगवान को अन्दर वेदी में विराजमान किया इतने भावपूर्वक प्रतिष्ठा हुई। उसमें बुजारा बोए थे वो ऐसे ऊँचे होकर फैलकर बाहर आए तब रामचन्द्रजी (प्रतिष्ठाचार्य) ने कहा देखो ये शकुन है कि ये भगवान का धर्म बहुत फैलने वाला है। ये बात सही में सच्ची साबित हुई। भगवान की प्रतिष्ठा होने के बाद तो आनंद मंगल हो गया फिर गुरुदेव को बाहर गाँव जाने का हुआ तो गुरुदेव बोले कि एक साल तक मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि बाहर गाँव नहीं जाऊं और एक वर्ष तक खुद बाहर गाँव नहीं गए। मुझे भगवान की भक्ति करनी है। उसमें से भक्ति का प्रोग्राम चालू हुआ।

हमको आज्ञा करी कि तुम दोनों बहनों भक्ति कराओ और सब गायेंगे। ऐसा ये कार्यक्रम चला पर गाते गाते ऐसे भाव आए। ऐसे भाव से उछल जाये। ऐसे उत्साह आए कि उछल पड़े। एक सीमंधर भगवान की प्रतिष्ठा के बाद तो पूरा गुजरात–सौराष्ट्र वगैरह देश–देश में प्रतिष्ठा हुई। तो रामचन्द्रजी प्रतिष्ठाचार्य कहते थे कि देखो ये ही तुम्हारा शुभ शकुन बताता है।

उन्होंने समवशरण की रचना ऐसे लकड़ी के टूकड़े मंगवाकर की और एक एक लकड़ी में ध्वजा करके ये भूमि करी और बीच में गंधकुटी में भगवान विराजमान किए। सब भाई बहन तो ऐसे खुश हुए कि पैर में घूंघरूं बांधकर पेट पर ढ़ोलक बांधकर प्रदक्षिणा दी और क्या नाचे–नाचे, हम सब नाच उठे। सब को उत्साह इतना आया कि मानो साक्षात् भगवान के कल्याणक हुए हों ऐसा उत्साह था। ऐसा भाव आया कि अपन को भी रंग चढ़ जाए। रामचन्द्रजी शोभा श्रृंगार अच्छा करते। इसलिए बहुत भाव आते। नाथुलालजी शोभा–श्रृंगार कुछ नहीं करते पर बोलते अच्छा भाषा में मीठास थी। रामचन्द्रजी तो अकेले थे कोई उनकी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

मददगार नहीं था मात्र उनका एक आदमी था इसलिए बाद में बहुत थक गए थे। राजा-रानी के लिए कुरसी मंगाने पर सब कहते कुर्सी का क्या करोगे? तो वे कहते तुम उस समय देखना। तुम्हारी कुर्सी मैं लेकर नहीं जाऊँगा चौबीसों भगवान की तो प्रतिष्ठा होती है परन्तु सीमंधर भगवान की प्रतिष्ठा देखकर सभी को आश्चर्य हुआ। परन्तु प्रतापगढ़ में सीमंधर भगवान प्रतिष्ठित हैं, बहुत बड़े सीमंधर भगवान है।

प्रतिष्ठा तो हो गई, भगवान विराजमान हुए। पण्डित भी गए अब हर रोज नित्य नियम पूजा तो आती नहीं थी कौन सिखाये? पालीताणा के साकरचन्दजी मुनीमजी यहाँ आठ दिन रुके कि मैं सबको पूजा सिखाऊँगा। हम दोनों बहने मंदिर में ही रहती और वो जैसा कहते हम वैसा करते थे। प्रतिष्ठा के बाद हम पूजा करना तो सीखे पर अभी जो भाव आते हैं वैसे भाव नहीं आते थे। संस्कार बहुत खराब चीज है कोई भी खोटे संस्कार पड़े वह बहुत खराब है। उसमें सच्चा संस्कार डालने में बहुत पुरुषार्थ करना पड़ता है।

गुरुदेव ने मुहपट्टी तो छोड़ दी थी, पर रजोणो किसी भी तरह नहीं छोड़ते। ऐसे संस्कार थे कि रजोणा को छोड़े ही नहीं। हम सब को यही होता कि रजोणा क्यों रखा है फिर १९९९ के साल में सौराष्ट्र में घूमने लगे तो झालावाड़ वालों ने इतना सख्त विरोध किया कि लावो हमारा रजोणा! तो गुरुदेवने कहा ये ले तेरा रजोणा। ऐसे फैंका कि ले तेरा रजोणा (कपडे की पिछी) जीवराजजी महाराज की अभी मुहपट्टी छुटी नहीं थी। जीवणलालजी ने तो छोड़ दी थी। इसलिए स्थानकवाले कहते कि इन्होंने किस लिए मुँह पट्टी रखी है। इतने में उनकी मुहपट्टी भी उतार दी कि ले ये तेरी.....संस्कार बहुत खराब चीज है।

स्थानक के संस्कार के कारण पूजा में भाव नहीं आते। इसलिए

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

हम दोनों बहनों ने एक गुजराती पूजा रची। उसमें श्री समयसार की गाथा और श्रीमद्‌जी के पद ऐसा सब मिक्स करके एक गुजराती पूजा—सन्मार्ग दर्शी बोधी दाता कृपा अति वरसावते। ये पूजा रची। वो सभी को बहुत अच्छी लगी इसलिए हमको हुआ कि हाश! ये अच्छा हुआ। और हम दोनों बहनों ने दर रोज नियमित पूजा करायी, अर्थात् सब दुहराओ ऐसा करते-करते संस्कार पड़े, हिन्दी पूजा में कुछ समझाता नहीं, ये गुजराती पूजा रोज की एक एक ही करते। परन्तु कोई नया संचालन करने आए तो नई पूजा होय? तब नेमिचन्दजी पाटनी आये तब उन्होंने कहा कि नन्दीश्वर मंडल विधान भी होता है नंदीश्वर पूजा तो बहुत धूमधाम से होती है। धूमधाम से कहा ऐसा सुनकर हमारे रोम रोम खिल जाय इसलिए कहा कि हमें भी सीखाओ न? तब नेमिचन्दभाई सब कर देते। नंदीश्वर के मांडले के नक्शे वे लाए थे फिर नक्शे को बांधकर वैसे प्रमाण में पूजा करते। ऐसे करते करते पूजा सीखा। फिर बहुत रस आने लगा। बहुत समय तक सामूहिक पूजा चालु रही। फिर दूसरे गाँव में भी प्रतिष्ठा होने लगी। खराब संस्कारको हटाने में कितनी मेहनत लगती है। पहले से ही सत्यधर्म में जन्म होता तो कितना अन्तर होता।

गुरुदेव कितने समय तक पात्र छोड़ते ही नहीं थे। तब ब्र. दुलीचन्दजी, ब्र. छोटेलालजी, पूरणचन्दजी वगैरह आए और बहनों को कहा कि स्वामीजी ने पात्र क्यों रखे हैं? तब हमने बताया कि महेरबानी कर के गुरुदेव के पास जाओ और कहो कि पात्र क्यों रखे हैं? फिर ये तीनों गुरुदेव के पास गए। और कहा कि स्वामीजी ये लकड़ी के पात्र क्यों रखे हैं? यह तो श्वेताम्बर का चिह्न है। तब गुरुदेव ने कहा कि मुझे थाली में भोजन करना नहीं जमता है। तो कहा कि आप लकडी को छोड़ दो और स्टील का रखो। फावाभाई के लड़के को स्टील के पात्र बनाने का आर्डर दिया। और पातरा आ गए और स्टील के पातरा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

लेकर घर घर लेने जाते (वहोरवा)। ये तो वो का वो ही हो गया। झोली तो हाथ की हाथ में ही। हमको तो यही बात खटकती थी और सबको खटकती, पर छोड़े ही नहीं। संस्कार ऐसी ही चीज है। आदत होने के बाद जल्दी जाती नहीं है।

२०१३ के साल में यात्रा में जाने की भावना की। हम पहले करके आ गये थे। इसलिए हमने उत्साह बताया तो गुरुदेव ने कहा कि अपने को संघ सहित यात्रा को जाना है। बहनोंने तो पहले ही यात्रा कर ली थी।

एक दिन श्रावण महिने में वहाँ बैठे थे। तब गुरुदेव को स्वयं विचार आया कि अपन यात्रा करने चलते हैं तब रामजीभाई खीमचन्दभाई बैठे थे। तब हम दोनों बहनें बाहर गई थी तो कहा दोनों बहनों को बुलाओ। हम आए फिर बोले ये वर्ष पूरा होय तब अर्थात् दिवाली के बाद यात्रा के लिए निकलना है। हमने तो ऐसी खुशी बताई ऐसी खुशी बताई कि ओहो.....हो गुरुदेव आपका तो सुवर्ण वचन निकला। आपके सुवर्ण वचन फलीभूत हों। खीमचन्दभाई ने बहुत जोर से जयकार बुलवाया। गुरुदेव ने बोला कि अपने को दिगम्बर देश में जाना है तो कोई पातरा नहीं ले जाना चाहिये। तब हम को हुआ कि हाश! अच्छा हुआ। इतनी सारी जगह चलकर नहीं जा सकते इसलिए कार में बैठेंगे। अब तक तो चलकर जाते थे। फिर गुरुदेव बोले कि कार में बैटेंगे और थाली में खाएंगे। जो गुरुदेव ने बोला ये हम दोनों बहनों ने ये बात पकड़ कर रखी। हमने नक्की किया कि अब अपने को ये छोड़ना नहीं है हम को उन पातरा के प्रति बहुत चीड़ आती थी।

१३वें साल में बम्बई गए। वहाँ मगनभाई सुन्दरजी का घर था भीवंडी। वहाँ हम गए वहाँ से ही यात्रा शुरु हुई। मगनभाई को हमने

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कह रखा था कि सब रसोई तैयार करो और ले आने के लिए मत कहना। तुम गुरुदेव को कहना कि जीमने पधारो। तब मगनभाई, वजुभाई कहने आए कि गुरुदेव जीमने पधारो। चांदी की थाली में सब तैयार किया। आहार लेने बैठे और तभी से सुबह शाम दोनों टाईम थाली में भोजन करना चालु हो गया। तीन महिने हम सब जगह घूमे तब चांदी के बर्तन, जीमने बैठने का बाजोट साथ लिया, एक स्टशेन वेगन मोटर साथ में थी। उसमें हम सब लेकर निकले, कि गुरुदेव को कोई भी तकलीफ नहीं पड़े। यात्रा तो बहुत ही अच्छी हुई फिर सोनगढ़ आए। पहले सिहोर से सोनगढ़ आने के लिए रवाना हुए तब हमको ये हुआ कि फिर से यहाँ आकर थाली में ही जीमेंगे की क्या करेंगे? अब तो पात्र में भोजन किसी भी हिसाब से नहीं ले तो अच्छा। सोनगढ़ में तब बेचरभाई और हिंमतभाई पंडित को हम दोनों बहनों ने कहा कि चलो सिहोर जाते हैं और नक्की कर के आते हैं कि गुरुदेव थाली में ही जीमेंगे हमने बेचरभाई को कहा तुम बोलना आप सोनगढ़ पधारो। आपके लिए एक कमरे में रसोई करेंगे और एक कमरे में आप जीमना ऐसी व्यवस्था करी है। ऐसा सब बेचर भाई को सिखाया कि ये बोलने का काम तुम्हारा है हम सिहोर गए और बेचरभाई ने गुरुदेव से उसी प्रकार कहा तो वे इतने जोर से बोले कि कोई भी बेनो मेरे पास न आवे, हमने कहा साहेब कोई भी नहीं आएंगी। कोई भी बहने आएंगी तो मैं सब पात्रा फिर से ले लूंगा। ऐसा तो डर बता दिया के अरर.......उनकी आज्ञा और उनका मन जिसमें खुश रहे वैसा करना। उसका बराबर ध्यान रखना। व्यवस्था बराबर रखनी। ये हमारी दोनों बहनों ने काम हाथ में लिया। और हमने कहा कि आपको किसी भी बात की तकलीफ नहीं पड़ेगी। परन्तु आप थाली में भोजन लो। इसलिये उन्होंने स्वीकार कर लिया। तब यहाँ तो कोई ऐसा मकान था नहीं। हरिभाई के कमरे में रसोड़ा चालु किया। और

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जहाँ टेपविभाग है वहाँ एक रूम में जीमने का रखा। फिर तो दो महिने में तुरन्त जो अभी है वो रसोड़े और कमरा किया। कोई भी बाई या बहन सामने दिखती तो कहते बहनों नहीं...... हमने कहा कोई बहन नहीं जायेगी। थाली में जीमनें दो न। फिर ऐसा चलने लगा। हमको तो किसी भी प्रकार से पात्र छुड़ाना था कि जहाँ अपनने दिगम्बर धर्म स्वीकार फिर ये स्थानक का चिन्ह भी किसलिए रखना।

आलोचना बोलते तो वह भी स्थानकवासी के पर्यूषण पूरे होने पर बोलते। ये श्वेताम्बर रिवाज है कि आलोचना संवत्सरी पाँचम के दिन उनका आखरी दिन होता तब बोलते। ये संस्कार किसी भी प्रकार से जाते नहीं। आलोचना अपनी दिगम्बर की बोलते। पर अपने पर्यूषण का तो पहला दिन है। कितने समय तक तो पंचमी को ही आलोचना पाठ बोलते रहे, पर रामजीभाई कुछ बोल नहीं सकते थे। फिर बाद में धीरे धीरे छूट गया था।

यात्रा में जाते तब जहाँ जाने का होता वहाँ आठ बजे नौ बजे पहुँचते। इसमें हमारी मोटर बहुत धीमी चलती। सब पहुँच जाते हम देर से पहुँचते और तुरन्त तपास करके कि गुरुदेव का आहार कहाँ है। किसीने कुछ खाया नहीं हो कुछ पिया नहीं हो, पर गुरुदेव जहाँ उतरते हों वहाँ हम पहुँच जाते और तुरन्त भोजन देखने जाते। हम को डर लगता कि जो कोई उल्टा सीधा हुआ तो उनका मन पलट न जाय। इस तरह हमें इतनी मेहनत करके आहार दान ऐसा सिखाया। यात्रा में तो सब बराबर चला परंतु सोनगढ़ आने के बाद भी ऐसा चले ऐसी खूब दृढ़ता की।

मानस्तंभ में पहले झाड़ बोए थे, एक दिन एक आदमी वहाँ सब खोदकर एक जैसा करता था तो वहाँ बैठे बैठे गुरुदेव देखते थे फिर कहते कि अरे! ऐसा पाप कौन करता है। सब निकाल दो। हम तो कुछ बोले

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

नहीं, जैसा कहें वैसा निकाल दिया। और वजुभाई को हुकुम किया कि बगीचे जैसा टाईल्स में कर दो जिसमें बगीचा जैसा दिखे। झाड़ पून बोना और तोड़ना ये पाप के धन्धे हैं, ये सही बात थी।

गाँव-गाँवसे आदमी हमको पूछने आते कि हमारे पास इतने पैसे नहीं तो किस तरह मंदिर बनाएँ? और उनको कहते कि तुम एक कमरा भाड़े से लो और छोटी प्रतिमाजी पधरावो और इनके दर्शन पूजन करो। उसके प्रताप से बड़ा मन्दिर बन जाएगा बोटाद, वढ़वाण, सुरेन्द्रनगर, राणपुर ऐसे बहुत से गाँववालें ने उस तरह से किया जिससे मन्दिर की रचना हो गई। यहाँ हमको सब पूछने आते तो हम कहते कि पढ़ने से तो कुछ नहीं होगा। परन्तु साथ ही साथ एक छोटी बेदी भी बनाओ। और छोटी प्रतिमाजी विराजमान करो। सबसे पहले वींछीया में मन्दिर बना। वो सोनगढ़ में पहले बने हुए छोटे मन्दिर की नकल की थी। प्रतिष्ठा के समय हम दोनों बहनों को बहुत श्रम होता था कारण कि किसी को समझ में नहीं आता था। शरीर की शक्ति उस समय अच्छी थी। पंडितजी प्रतिष्ठा के हमको कहते थे कि तुमको विवाह के गीत आते हैं? तब हमने कहाँ हाँ। तो पण्डितजी ने कहा कि वैसे ही भगवान के गाओ। फिर हम सुबह परोढ़ीया गाते सूरज उगीओ रे केवडीयानी फण से के वेलणा भले वाया रे...इस प्रकार भगवान के गीत जोड़ जोड के गाते थे।

हर रोज भक्ति भी मन्दिर में चालू की उसमें स्तवन–मन्जरी, भजनमाला, स्तवनमाला, स्तवनावली में हमारी बहुत सी जोड़ी हुई भक्ति हैं। ये भक्ति करते–करते बहुत सुन्दर भाव आते थे।

श्री समयसारजी शास्त्रजी उपर पूज्य गुरुदेव के प्रवचन १ से ४ भाग जो बाहर निकले हैं वो पूज्य श्री चम्पाबेन तथा पूज्यबेन शान्ताबेन —ऐसा दोनों बहनों ने लिखा है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उस समय पूज्य गुरुदेव कहते थे कि दोनों बहनें व्याख्यान में बैठी होती है तो जिस प्रकार सिंह झपट्टा मारता है उस प्रकार गुरु की वाणी के ऊपर झपट्टा मार के सुनते थे।

हमको ऐसा रंग आता, ऐसा रंग आता कि पुजारी कहते कि बेन तुमको भगवान व पूजा के प्रति इतने भाव आते हैं, ऐसे दूसरों को नहीं आते,—तुम दोनों निकट भव्य हो जल्दी मोक्ष जाओगे। हम साफ सफाई भी खूब रखते। एक बार कोई बाई आई और भगवान ऊपर फूल चढाए। इतने में गुरुदेव को मालूम हुआ। गुरुदेव स्वाध्याय मन्दिर में बैठे थे और हम मंदिर में थे तो गुरुदेव मंदिर में आए कि यह सब क्या कर रहे हैं ? केसर–फूल कुछ करना नहीं अपन तो शुद्ध तेरापंथी हैं। बिल्कुल किसी को भी कुछ करने मत देना मात्र शुद्ध जल से अभिषेक करना बाकी कुछ नहीं। सुबोध प्रबोध ऐसा कोई शास्त्र पढ़ा था उसमें लिखा था कि देखो शुद्ध तेरापंथी आम्नाय में मात्र शुद्ध जल से अभिषेक करो। इसके लिए तुम किसी को भी चंदन–केसर के टीके लगाना फूल चढ़ाने मत देना। जैसी आपकी आज्ञा, जैसा कहोगे वैसा करेंगे। १९९७ के साल में भगवान की प्रतिष्ठा हुई। सं. २००३ में यहाँ विद्वत परिषद बुलवाई इसलिए सब दिगम्बर पंडित यहाँ आए कि देखें तो सही...। स्वाणी उत्साहित थे इसलिए उन्होंने सभी पण्डितों को बुलाया। और तब सारे पण्डित आए। उसमें पण्डित फूलचन्दजी ने गुरुदेव से कहा कि स्वामीजी आपका अध्यात्म तो बहुत अच्छा है लेकिन आपने भगवान की पुतली में कालारंग क्यूं लगाया ? यह हमारी दिगम्बर आम्नाय के विरुद्ध है, कोई दिगम्बर नहीं मानेगा, इसलिए गुरुदेव ने कहा कि पण्डित चेनसुखलालजीने कहा है इसलिए किया, गुरुदेवने पण्डितजी को कहा कि इसके लिए अब क्या करें ? तुम सब नाराज हो—ऐसा मुझे नहीं करना है हम दिगम्बर हैं और दिगम्बर समाज में मिलना है। इसका रस्ता आप

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

बताओ तब फूलचन्दजी ने पूछा कैसा रंग लगाया हैं, तो हमने कहा कि कच्चा रंग है–पक्का रंग नहीं है। फिर भी अभिषेक करते करते निकल जाए ऐसा करो, इसलिए पूजारी को आज्ञा दी कि धीरे धीरे घिस के पूँछ लो तो निकल जाएगा। उस समय सब पण्डित आए थे पण्डित फूलचन्दजी, पं. जगमोहनलालजी, पं. बंसीधरजी, पं. कैलासचन्दजी, पं. प्रकाशचन्दजी आदि।

वे सोनगढ़ से गए बाद में पं. चेनसुखलालजी से पूछा कि आपने ऐसा विरुद्ध किसलिए बताया? तो कहे कि मुझे मालूम नहीं मैने क्या किया।

उसके बाद सर सेठ हुकमचन्दजी आए उन्होंने भी कहा कि ऐसी कीकी क्यूं करवायी है? यह हमारी दिगम्बर आम्नाय के विरुद्ध है। गुरुदेव ने कहा कि यह बात पंडितजी फूलचन्दजी के साथ हो गई है रंग थोड़े समय में निकल जाएगा।

सर सेठ हुकमचंदजी के हाथ से प्रवचन मण्डप का शिलान्यास हुआ था और वे उसकी खुशहाली में हिन्दी आत्मधर्म प्रकाशित करने के लिए रकम दे गए थे।

मूल दिगम्बर पंडित तथा सेठियाओं सोनगढ़ के सन्त की सत्य–तथ्य भरी वाणी सुनने आए। आत्मा की बात सुनकर खूब प्रसन्न हुए।

वि.सं. १९९८में सबसे पहले सोनगढ़ में प्रौढ़शिक्षण शिबिर की शुरूआत हुई। उस समय बहुत पण्डित तथा मुमुक्षु लाभ लेते। हर एक श्रावण महिने में प्रौढ़ शिक्षण शिबिर चलती। तब देश देश के मुमुक्षु आते तब पूज्य गुरुदेव के प्रवचन का लाभ तथा शिबिर में तत्त्व का लाभ ऐसा लाभ लेकर मुमुक्षु दिन रात धर्म की चर्चा करते। पूज्य गुरुदेव की जन्म

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जयन्ती (वैशाख सुद २ दूज) के समय बालशिक्षण शिबिर रखते। तब सभी बच्चे दूर–दूर से आते। बालकों को देखकर गुरुदेव खूब प्रसन्न होते और कभी–कभी बच्चों से प्रश्न पूछकर उन्हें खुश करते।

सोनगढ़ से आत्मधर्म गुजराती, हिन्दी, सुवर्णसंदेश तथा सद्गुरुप्रवचन प्रसाद इतनी पत्रिका बाहर पड़ती। उसमें आत्मधर्म पढ़ पढ़कर देश देश से पण्डित तथा मुमुक्षु लाभ लेते।

(पाटनीजी, युगलजी, सोगानीजी), ये आत्मधर्म से आकर्षित होकर पूज्य गुरुदेव की वाणी का लाभ लेने सोनगढ़ आते थे।

तीर्थक्षेत्र की सुरक्षा के लिए पूज्य गुरुदेव को विकल्प आने से ट्रस्टीओंको बुलाकर बात करी। इसलिए ट्रस्टीओं ने श्री कुंदकुंद कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट की स्थापना महावीर निर्वाण २५०० वर्ष में की।

卐 卐 卐

गुरु दीवों गुरु देवता, गुरुवर गुण की खान,
गुरु बसे जो अन्तर में, तो हो जाये भव पार।

गुरु दीपक–उसका मतलब जैसे दीपक अन्धकार का नाश करता है और प्रकाश फैलाता है उसी प्रकार गुरु ने अंधकार का मतलब मिथ्यात्व का नाश करके और सम्यक्ज्ञान का प्रकाश फैलाया है। गुरु में अनंतानन्त गुणों की खान भरी हैं। ऐसे गुरुजन जिसके अन्तरमें अर्थात् गुरु ने जो कहे तत्त्व उनके अन्तर में ज्ञायक को पकडकर बैठे तो उनके भव का पार आ जाता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

'मुनिवर महिमा गुरु गाते संयमकी भावना भाते,
जिनेश्वर मार्ग में जाने से होंगे गुरु ध्यान के ध्याता।

गुरुदेव मुनिओं की महिमा करते करते खुद संयम की भावना भाते और बहुत बार गुरुदेव कहते कि कोई मुनिराज तो दर्शन दीजिये। आकाश में उपर देखकर मुनिराज के दर्शन की इच्छा बहुत होती। और जिनेश्वर के पंथ को पकड़ा है इसलिये थोड़े काल में जिनेश्वर स्वरूप हो जाएंगे।

पूज्य गुरुदेव ने समाधिमरण सहित संलेखना की अन्त में भावना भायी थी। गुरुदेव को ख्याल आ गया था कि ये शरीर का अन्तिम समय है। इसलिए अन्तर से बराबर जाग्रत थे। और अन्त में 'मैं एक ज्ञायक हूँ' ऐसे शब्दों का उच्चारण किया था।

ऐसे अनन्त उपकारी कहानगुरु के चरणों में कोटि कोटि वन्दन हो।

卐 卐 卐

कहान गुरुदेव का जन्म ही अपनी आत्मा को भवमुक्त करने के लिए ही हुआ है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्मधर्म अंक १५६ (''ब्रह्मचर्य अंक-दूसरा)

(आश्विन कृष्ण चतुर्थी के पूज्य गुरुदेव के प्रवचन के अंश)

मानस्तंभ में ऊँचे ऊँचे श्री सीमंधरनाथ विराजमान हैं। आश्रम मेंसे चलते फिरते भगवान के दर्शन होते रहते हैं।

अर्हन्त को श्री सिद्ध को नमस्कार करें इस तरह से
गणधरों को अध्यापकों को सब साधु समुह को
वो शुद्ध दर्शन ज्ञान मुख्य पवित्र आश्रम पाइये
प्राप्ति करूँ मैं साम्य की जिससे मुझे शिव प्राप्ति हो

समकिती गृहस्थपने में रहे तो भी वे वैरागी है–अन्तर्दष्टि मैं वैराग्य का परिणमन उसको हंमेशा होता रहता है। अज्ञानी को सच्चा वैराग्य होता नहीं है। मैं समस्त परभावों से भिन्न ज्ञायक स्वरूप हूँ। मेरा अवलम्बन लेने से ही मेरी मुक्ति है—ऐसा जानकर जो जीव स्वभाव के सन्मुख परिणमे वही सच्चा वैरागी है। ऐसा वैरागी जीव बंधन से छूटता है। जो जीव विकारी परभावों में लीन है वो बन्धता है और जो जीव विकार से विरक्त होकर स्वभाव में लीन होता है वो मुक्ति पाता है। ऐसा श्री जिनेन्द्र भगवान का उपदेश है।

परम पूज्य बालब्रह्मचारी महाप्रभावी श्री कहान गुरुदेव अनेक वर्षों से अधिकतर सोनगढ़ में रहते हैं और भव्यजीवों को आत्महित का अपूर्व मार्ग दर्शाते है। उनश्री के परम पावन उपदेश से आकर्षित होकर अनेक जिज्ञासु भाई–बहन सोनगढ़ में आकर रहते हैं। उसमें कम उम्र के भाई–बहन भी आत्महित की भावना से सोनगढ़ में रहते है। कितने भाई-बहनों को ऐसी भावना भी जागती है कि खुद का पूरा जीवन यहीं सन्तों की छाया में बीते।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सं. १९९८ में मुमुक्षु ब्रह्मचारी बहनों के लिए 'सनातन जैन ब्रह्मचर्य आश्रम'की स्थापना हुई।

पूज्य दोनों बहनों की पवित्र छाया में रहकर कितनी कुमारी बहनों की भी बाल ब्रह्मचारी रहकर सोनगढ़ में बसने की भावना थी। उसके परिणाम से सं. २००५ में कार्तिक सुदी तेरस को छः कुमारी बहनों ने आजीवन ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा ली और उस प्रसंग में सनातन जैन कुमारिका ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना हुई और उसके लिए लगभग रू. १२००० का फंड हुआ। परन्तु अभी बहनों के आश्रम के लिए कोई स्वतन्त्र मकान का बंदोबस्त नहीं हुआ था। तीन चार साल के दौरान और भी अनेक जिज्ञासु बहनें तैयार हुई। और वो भी ब्रह्मचर्य जीवन की भावना भाने लगी।

सं. २००७ में श्री सीमंधर भगवान के वार्षिक महोत्सव प्रसंग में कलकत्ता से श्रीमान वच्छराज जी सेठ (लाडनूवाले) उनकी धर्मपत्नी मनफूला देवी सहित पहेली ही बार सोनगढ़ आये। तब पूज्य गुरुदेव के अद्भुत प्रवचन सुनकर तथा सोनगढ़ में होती महान धर्म प्रभावना देख कर वे बहुत खुश हुए और विशेष उल्लास आने से सेठानी श्रीमती मनफूला देवी ने तुरन्त ही सोनगढ़ में विशाल जमीन खरीदकर लगभग एक लाख के खर्च से ''श्री गोगीदेवी दिगम्बर जैन श्राविका ब्रह्मचर्य आश्रम बनवाया।'' सं. २००८ के महासुद पांचम को बहुत उत्साहपूर्वक आश्रम का उद्घाटन हुआ। हाल पूज्य दोनों बहनों जैसी पवित्र आत्माओं की मंगल छाया में बाल ब्रह्मचारी बहनो सहित एक साथ तीस बहनें एक आश्रम में रहती है।

बहनों के मंडल का सुन्दर वातावरण, इस आश्रम का वातावरण उपशांत और आह्लादकारी है। श्री देव-गुरु की निकट छाया में ही ये

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आश्रम है। वहाँ से घूमते–फिरते देव-गुरु के दर्शन हुआ करते हैं और संध्या के समय तो मानस्तंभ सीमंधरनाथ की छाया आश्रम के ऊपर छा जाती है। ऐसे ये आश्रम में पूज्य बेन श्री चंपाबेन और पूज्य बेन शान्ताबेन निवृत्ति के काल में खुद का चिंतन मनन करते उसके बाद कोई समय भक्ति का उल्लास आने पर आश्चर्यजनक भक्ति कराते। कभी वैराग्य से भरी हुई कहानियाँ भी कहती। कोई बार परीक्षा भी लेते थे और बहुत सारे पाठ कंठस्थ कराते थे।

इसके अलावा वे कभी कभी गुरुदेव की महिमा गाते हैं। कभी तीर्थयात्रा का उमंगभरा वर्णन भी करती हैं। कभी प्रसंगोचित्त हितोपदेश भी देती हैं। आनंदपूर्वक उल्लास–उत्साहप्रेरित करती है। नये नये शास्त्रोंका अभ्यास भी कराती हैं।

दोनों पवित्र बहनों का जीवन धर्म रंग से रंगा है उनका जीवन ही ऐसे प्रकार का है कि उनकी निकट छाया में रहते हुए हरक्षण ज्ञान और वैराग्य के संस्कारों का सिंचन सहज होता है। उसके अलावा आश्रमवासी बहनें भी परस्पर वात्सल्यपूर्वक हिलमिल के स्वाध्याय भक्ति आदि कार्य करते हैं। कुटुम्ब छोड़कर बाहरगाँव से यहाँ आकर रहनेवाली बहनो को भी यह नहीं लगता कि हम बाहर गाँव से अकेले आए हैं। संतो की मधुर छाया में साधर्मी का एक नया ही कुटुम्ब यहाँ रचा गया है।

भारत भर में आश्रम तो अनेक चलते होंगे परंतु सन्तो की शीतल छाया में अध्यात्म के उपशान्त वातावरण में वात्सल्य के बहते झरने में चलता इस प्रकार का आश्रम तो यह एक ही है। मुलाकात मिलने के लिए बाहर से आनेवाले लोग भी आश्रम में प्रवेश करते ही वहाँ के शान्तिमय वातावरण से आश्चर्यचकित होकर प्रभावित हो जाते हैं।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

धर्म माताएँ पूज्य बेनश्री बेन
पूज्य बेनश्री चंपाबेन

इनका जन्म संवत १९७० के श्रावण वद दूज बढ़वाण शहेर में हुआ। पिताश्री का नाम जेठालालभाई और मातुश्री का नाम तेजबा। उस समय इस बालिका की तेज की खबर तेजबा को नहीं थी कि ये बालिका मेरी पुत्री की तरह हीं नही, परन्तु भारत के हजारो भक्त–बालकों की धर्ममाता होने के लिए अवतरी हैं।

कुछ समय तक वे करांची में रहे। उसके बाद १९८६ के सालमें मात्र सोलह साल की उम्र में वे पूज्य गुरुदेव के परिचयमें पहलीबार (वढ़वाण तथा भावनगर) आये। और पूज्य गुरुदेव की आत्मस्पर्शी वाणी सुनते ही उन वैरागी आत्मा को आनन्द स्वभाव की अद्भुत महिमा भरी बात सुनते ही उनको ऐसा हुआ कि अहो! ऐसा स्वभाव मुझे प्राप्त करना ही है। और ये दृढ़ निश्चयी आत्मा ने आत्ममंथन की सतत धुन जगायी और अल्पकाल में ही अपने मनोरथ को पूरा किया। मात्र १९ साल की आयु में अपूर्व आत्मदशा प्राप्त की।

पूज्य बेनश्री चम्पाबेन के हस्ताक्षर की नकल

सं. १९८९

वांकानेर, आनन्द का दिन

फागुन वद दसम को सोमवार दोपहर सामायिक में निज स्वरूप का अनुभव हुआ। अनन्तकाल से नहीं समझ में आया हुआ स्वरूप समझ में आया। आनन्दसागर उछल रहा था। वो स्वरूप आश्चर्यकारी और अद्भुत है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन शान्ताबेन

आपका जन्म सं. १९६७ के फागुन सुद ग्यारस को ढसाढोलरवा गाँव में हुआ। पिताजी मणीलालभाई और माताजी दिवालीबा। सं. १९८३ से वे पूज्य गुरुदेव के परिचय में (लाठी मुकाम में) आए। आत्मा की प्राप्ति के लिए ये वैरागी आत्मा रातदिन झंखना करते थे।

सं. १९८९ में परम पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास के समय राजकोट में जब बेन श्री चम्पाबेन आए और कुछ बातचीत हुई तब आध्यात्मिक जवेरी गुरुदेव ने चैतन्यरत्न का तेज परख लिया और शान्ताबेन को बात करी कि आपको ये बेन से परिचय करने जैसा है।

बस, एक तो संस्कार, आत्मा की तैयारी और फिर गुरुदेव की आज्ञा। फिर क्या कहने का हो! शान्ताबेन ने महान आत्म अर्पणता पूर्वक पू. चम्पाबेन से परिचय किया। पू. चम्पाबेन ने हृदय के गहरे गहरे भाव खोले और आत्मिक उल्लास दे देकर बाद में उनको ''अपने समान बनाएँ'' इस प्रकार आत्म प्राप्ति के लिए तरसते ये आत्मा ने भी आत्मप्राप्ति कर ली।

बस! दोनों साधक सखियों का मिलन हुआ। पूज्य गुरुदेव की छाया में दोनों बहने एक दूसरे के जीवन में ऐसे गुंथा गए जैसे कि श्रद्धा और शान्तिका मिलन हुआ हो। जैसे कि वैराग्य और भक्ति का मिलन हुआ हो। जैसे कि आनन्द और ज्ञान का मिलन हुआ हो।

उससे ८९ के साल से आज तक दोनों बहनें साथ ही हैं इनकी एकरसता देखकर जब कोई पूछता कि ''आप दोनों सगी बहनें हो? तब गम्भीरता से मुस्काते हुए वह कहती हैं नहीं, सगी बहन से भी ज्यादा है और सही में ऐसा ही है। इनके शरीर भले ही दो दिखते हैं पर दो

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

देह के बीच में आत्मा तो मानो एक ही हो ऐसा दिखता है। ऐसी इनके हृदय की एकता है।

परम पूज्य गुरुदेव को इन दोनों बहनों के प्रति पुत्रीवत् अपार वात्सल्य था। और ये दोनों बहनों के रोम–रोम में पूज्य गुरुदेव के प्रति अपार उपकार की जो भक्ति भरी हुई थी इसका वर्णन करने की कोई चेष्टा करना मात्र मेंढक के उछलने जैसा ही लगेगा। संक्षिप्त में इतना ही कहना बस होगा कि–पूज्य गुरुदेव के आत्मस्पर्शी अध्यात्मोपदेश को यथार्थरूप से आत्मा में ग्रहणकर पवित्र ज्ञान से और वैराग्य से विनय से और अर्पणता से, भक्ति से और प्रभावना से, सब प्रकारसे वे पूज्य गुरुदेव की और जिन-शासन की शोभा बढ़ाती थी।

पूज्य गुरुदेव कहते थे कि इस काल में ऐसी बहने होना ये मण्डल की बहनों का महाभाग्य है। जिनका भाग्य होगा वे उनका लाभ लेगे। इनका ज्ञान, इनका वैराग्य, इनकी अर्पणता, इनके संस्कार ये सब, लोगों को समझना कठिन है।

संवत् १९९१ में पूज्य गुरुदेवने प्रकट रूप में जब संप्रदाय का परिवर्तन किया और सौराष्ट्र में चारो ओर से विरोध के ढोलक बजने लगे। तब इन दोनों बहनों ने कहा कि–ये तो सब आठ दिन में बोलकर बैठ जाएगे। सब आठ दिन में ठंडा हो जाएगा। ऐसा कहकर जो हिम्मत दिखाई है, और जरूरत पड़े तो खुद के अंगत गहने भी वापर लेंगे यह कहकर जो अर्पणता बताई है, उसका वर्णन आज भी भक्तो के हृदय को रोमांच से हलचल पैदा कर देता है।

उसके बाद सं. १९९३ से लेकर आज तक तो बहुत सारे अद्भुत प्रसंग बने हैं। परन्तु इन प्रसंगो का वर्णन अवर्णनीय है।

अब तो परम पूज्य गुरुदेव के महान प्रभाव से हजारों जीव

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

भक्तिपूर्वक गुरुदेव के पावन उपदेश का अनुसरण कर रहे हैं। गाँव–गाँव में जिन मन्दिर और मंडल स्थापित हो चुके हैं। धार्मिक प्रवृत्ति भी दिनों दिन वृद्धिगत होती जा रही है। गाँव गाँव के मुमुक्षु मण्डल खुद का संचालन पू. बेन श्री बेन की सलाह सूचना के अनुसार कर रहे है। उनकी आज्ञा सभी भक्तजन प्रमोदपूर्वक शिरोधार्य करते हैं।

प्रतिष्ठा महोत्सव वगैरह विशेष प्रभावना के कार्य वे कैसी कुशलता और भक्ति से शोभित करते हैं। वह तो वे प्रसंग स्वयं नजरों से देखने वाले को ही ख्याल आते है।

पिछले कितने ही वर्षोंसे सोनगढ़ में श्राविका–ब्रह्मचर्याश्रम बना हुआ है। उसमें पूज्य दोनों बहने रहती हैं। वे आश्रम की अध्यक्ष हैं और पूज्य गुरुदेव के उपदेश से प्रभावित हुई अनेक मुमुक्षु बहनें खुद के गाँव और कुटुम्ब छोड़कर, आत्महित की भावना से पूज्य बेनश्री बेन की (दोनों बहने) शीतल छाया में खुद का जीवन बिताती हैं। पूज्य दोनों बहने, ज्ञान वैराग्य के सिंचन से उनके जीवन को बनाते हैं। इस घडतर के प्रताप से २० कुमारिका बहनों ने तो बालब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा ली थी। उसके बाद १४ बहनोंने फिर आठ बहनों ने उसके बाद ९ बहनों ने उसके बाद १३ बहनों ने ब्रह्मचर्यव्रत लिया। इस प्रकार कुल ६४ बाल ब्रह्मचारी बहनों ने प्रतिज्ञा ली थी।

‘‘जयवन्त वर्तो, उस काल के श्राविका–शिरोमणि दोनों धर्ममाताओं.......

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य श्री कृपालु गुरुदेव के मुख से निकले अमृतमय वचन

ये दोनों बहनों की ज्ञान की ताकत की तो क्या बात? ओहो! इनके ज्ञान की ताकत!! ये ज्ञान जब फटेगा.......तब फटाक करते खिल जायेगा. (क्षणभर में तो केवलज्ञान लेगा) दर्शन विशुद्धि तो है ये दर्शनविशुद्धि के उपरान्त ज्ञान की ताकत भी बहुत है ज्ञान की निर्मलता बहुत है।

व्याख्यान में नया न्याय आता है तब सुनते–सुनते इनकी आखों की चेष्टा पर से उनका उत्साह और विनय दिख जाता है। इनकी आखों की चेष्टा भी अलग जाति की जैसे जम गई हो।

अहो! शान्ताबेन!! इनके आत्मा की कैसी पात्रता!! और साथ में इनको पुण्य भी कैसा कि उसको ऐसे चम्पाबेन का योग मिल गया।

चम्पाबेन के साथ शान्ताबेन के अलावा दूसरा कोई भक्ति में मिल न सके–ये दोनों बहनें तो एक ही कहलाती इनके शरीर दो हैं पर आत्मा एक है।

एक शरीर में तो अनेक जीव होते हैं, परन्तु ये तो दो शरीर में एक जीव हैं!! इनका ऐसा अन्तर का मेल है।

卐 卐 卐

आत्मा का निर्विकल्प अनुभव होनेसे चैतन्य का अचिंत्य आनंद अनुभव में आता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेवने दोनों बहनों के सम्यग्दर्शन के लिए की हुई कसौटी

पूज्य बेनश्री चम्पाबेन और पूज्यबेन श्री शान्ताबेन को पूछे गए पाँच सुनहरे महत्त्वपूर्ण प्रश्न

पूज्य बहेनश्री और पूज्य बेन—दोनों को सम्यग्दर्शन का परिणमन हो गया। अपूर्व आत्मिक निःशंकता जगी, आनन्द का स्वसंवेदन हुआ और गुरु कृपा का फल होने से परमभक्ति पूर्वक पूज्य गुरुदेव के पास ये बात की।

संवत १९९१ सोनगढ़ पूज्य बेनश्री पूज्य बेन की पात्रता के लिए पूज्य गुरुदेव को पूरा विश्वास हो इसलिये उनके सम्यग्दर्शन की बात जो कि पूज्य गुरुदेव के मन में बैठी तो सही और उन्होंने अस्तित्व में तो ली, पर इसके पहले कुछ जीवों को भ्रमणा से सम्यक्त्व की कल्पना हो गई थी, उस कारण से पूज्य गुरुदेव ने खास दोनों बहनों की परीक्षा भी की।

लगभग एक साल तक हर एक प्रकार से जांच करके पूज्य गुरुदेव ने परीक्षा की। पर पूज्य बहेनों को तो आत्मा की निःशंकता ही थी। आत्मा खुद ही सम्यग्दर्शन का साक्षी था। इसलिए उनको तो संदेह, भय की उलझन नहीं होती थी। बाद में यूँ कहा कि ''अभी नहीं तो कालक्रम से समय आएगा तब अपने आप यह बात दिमाग में बैठेगी। पूज्य गुरुदेवने कहा कि ''ये बात बाहर (मेरे पास) आयी इसलिए अब सब खुलासा करना पड़ेगा। इस तरह बहुत ही लम्बे समय तक कसौटी काल चला।

बाद में पूज्य गुरुदेवने अंतिम कसौटी रूप पांच प्रश्न लिख कर

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

भेजे और इस प्रश्नों के जवाब दोनों बहनों को अलग–अलग बैठकर लिखने को कहा—परन्तु वो जवाब शास्त्रों की शैली से नहीं पर आत्मा के स्पर्श से देने थे। दोनों बहनोंने गुरु आज्ञा शिरोधार्य कर अंतरमें डुबकी लगाकर आत्मा के भावों को खोल खोलकर ऐसे चैतन्यस्पर्शी जवाब लिखे कि उनको पढ़कर गुरुदेवको भी आश्चर्य हुआ और दोनों बहनें कसौटी में से पार उतरी अर्थात् पास हुई!! गुरुदेवने धन्यवादपूर्वक उनकी श्रद्धा का स्वीकार किया।

इस कसौटी की पूर्णाहूति होने पर पूज्य दोनों बहनों को भी बहुत खुशी हुई और इस मंगलमय प्रसंग की हंमेशा यादगिरी के लिए पूज्य गुरुदेव ने खुद के हस्ताक्षर में जो पाँच प्रश्न लिखे वो चांदी की फ्रेम में उत्कीर्ण कराए।

ब्र. हरिभाई

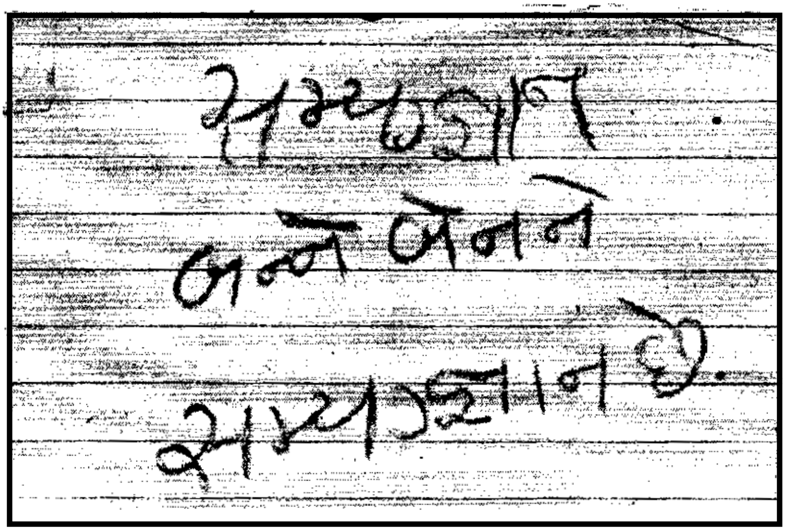

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ૐ

સહજ ચિદાનંદ

૧. અગુરુ લઘુની વ્યાખ્યા શી રીતે કરી શકો છો?

૨. જ્ઞાન સવિકલ્પ છે તો અનુભવ વખતે સવીકલ્પ કઈ રીતે છે તેની ઘટના કઈ રીતે છે.

૩. સર્વજ્ઞની વ્યાખ્યા તમારી ભાષાથી કેવી રીતે થઈ શકાય છે,

૪. બાળ વેદાંતાદિ કરતાં જૈનનું જુદાપણું મુખ્ય મુદા સહીત શું માન્યતામાં છે,

૫. આત્મ આનંદ અને નિર્વીકલ્પતામાં ભેદ અથવા કાળનું આંતરૂં શું છે,

તે પ્રશ્ન પાંચે તરત જવાબ આપ ને લખવા

સર્વાત્કૃષ્ટ પણું તમારી ભાષાથી કઈ રીતે કરો છો,

બન્ને એ જુદ જુદ લખવું.

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेवश्री ने दोनों बहनों से पूछे पाँच प्रश्न

सहज ॐ चिदानंद

(१) अगुरुलघु की व्याख्या किस प्रकार कर सकते हो ?

(२) ज्ञान सविकल्प है तो अनुभव के समय सविकल्प किस तरीके से ? उसकी घटना किस प्रकार है ?

(३) सर्वज्ञ की व्याख्या आप की भाषा में किस प्रकार हो सकती है ?

(४) दूसरे वेदान्त आदि के सिवाय जिन का जुदापन मुख्य मुद्दा सहित क्या मान्यतामें है ?

(५) आत्म आनन्द और निर्विकल्पता में भेद अथवा काल का क्या अन्तर है?

दोनों बहनें को अलग अलग लिखना है।

पूज्य बेनश्री चम्पाबेन द्वारा लिखे गये उत्तर—

(प्रश्न पढ़कर तुरन्त ही गुरुदेव की आज्ञा प्रमाण सबसे पहले ये प्रश्न का जवाब लिखा है।

(पूज्य गुरुदेव ने आत्म आनन्द और निर्विकल्पता में भेद या काल के अन्तर विषयमें पूछा)

उत्तर : (१) पाँचवे प्रश्न का बहन श्री चम्पाबेन द्वारा लिखा उत्तर—

निर्विकल्पता निर्विकल्प स्वभाव के द्वारा वेदन में आती है और आत्म आनन्द आनंद स्वभाव से वेदन में आता है। इसलिए दोनों में भेद है। आत्मा एकरूप अभेद है। जिस क्षणमें निर्विकल्पता प्रकट होती

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

है उसी क्षण आत्म आनन्द प्रकट होता है इसलिए दोनों के काल में अन्तर नहीं, इसलिये दोनों एकरूप अभेद है।

(पूज्य गुरुदेवने अगुरुलघु के सम्बन्ध में पूछा)

उ०–२ पहले प्रश्न का बहनश्री चंपाबेन द्वारा लिखा हुआ उत्तर)

शुद्ध परिणाम से परिणमा हुआ द्रव्य के अगुरुलघु स्वभाव के विषय में यह समझमें आता है कि स्वयं के स्वभाव से बाहर नहीं जाते–स्वरूप में रहकर द्रव्य के अनन्त स्वभावों में, कोई स्वभाव में दूसरे स्वभाव से (तारतम्यता रूप से) तथा एक स्वभाव के अंश में सहज स्वभाव से तारतम्यता रूप सहज परिणमन के कारण कोई गुण की विशेषता–कोई की हीनता और गुण के कोई अंश की हीनता, कोई की विशेषता रूप द्रव्य परिणमित होने से परिणमन बढ़ जाने के कारण गुण बढ़ गया ऐसा दिखता है, अंश बढ़ गए ऐसा दिखता है, परिणमन के घट जाने के कारण अंश घट गये ऐसा दिखता है। परिणमन स्वभाव कोई अद्भुत है। गुण पर्याय सर्व अभेद है। हीनाधिकता परिणमन होना वो द्रव्य का सहज स्वभाव है। विभाव परिणामी द्रव्य के परिणमन की हीनाधिकता पर-निमित्त के कारण होती है, उपादान रूप स्वयं स्वतन्त्र परिणमित होता है।

अगुरुलघु स्वभाव न्याय के तरीके से पूरा नहीं आता स्पष्ट रूप से नहीं आता। फिर भी जिस प्रकार से यथाशक्ति आया है उस प्रकार से लिखा है।

(पूज्य गुरुदेव ने अनुभव के समय ज्ञान की सविकल्प के बारे में पूछा)

उ०–३ दूसरे प्रश्न का बहन श्री चम्पाबेन द्वारा लिखा गया उत्तर—निर्विकल्पता के समय चैतन्य द्रव्य के भिन्न–भिन्न स्वभाव के

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अद्‌भुत–केली–स्वरूप तरंग उछल रही है। उसका वेदन उसका जानना वो ज्ञान की सविकल्पता है।

अनुभव के समय द्रव्य के अलग अलग स्वभाव का क्रियात्मपना तथा भिन्न भिन्न प्रकार से क्रियात्मकपना उस प्रकार परिणमन ज्ञान में सहज निर्विकल्पपने वेदन, वो ज्ञान की सविकल्पता समझमें आती है। एकरूप एकाकार वेदन होने पर भी अनेकता का वेदन वो ज्ञान की सविकल्पता है। वो अनेकता का वेदन ज्ञान के द्वारा जानने में आता है। वो ज्ञान का सविकल्पपना है। भेदरूप विशेष पर्याय को जाननेवाला ज्ञान है। निश्चय से द्रव्यपिण्ड अभेदरूप से परिणमता है। फिर भी भेद अवस्था से व्यवहार से परिणमता है।

(पूज्य गुरुदेवने 'वेदान्त से जैन का अलग पाया जाना' विषय में पूछा)

उ०–५ चौथे प्रश्न का बेन श्री चम्पाबेन द्वारा लिखा हुआ उत्तर– वेदान्त अकेली शुद्धता और अभेदता को मान्य रखता है, जिससे अखण्ड स्वभाव का ग्रहण होता नहीं। विभाव–परिणामपना सर्वथा नहीं स्वीकारने से स्वभाव में आने का प्रयत्न रहता नहीं।

वेदान्ती एकान्त शुद्धता को मानने से रत्नत्रय की परिणति को स्वीकार नहीं करते। अन्तर की साधकदशा उनको प्रकट नहीं होती। एकान्त शुद्धता स्वीकारते होने से दूसरी पहलू के तरफ अशुद्ध परिणति को सर्वथा स्वीकारते नहीं।

वेदान्त और जैन में मुख्य भेद

वेदान्त एकान्त से अभेदता तथा शुद्धता को मानता है वह यथार्थ नहीं है। जैन किसी अपेक्षा से भेद और अशुद्धता की मान्यता की अपेक्षा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सहित, अभेद दृष्टि तथा शुद्ध द्रव्य–दृष्टि को स्वीकारते हैं। उसमें शुद्ध दृष्टि की मुख्यता ये यथार्थ है। उसमें यथार्थ स्वानुभूति होती है चैतन्य का अनुपम स्वरूप प्रकट होता है।

वेदान्त की मानी हुई एकान्त शुद्धता वह यथार्थ नहीं है। उसकी मानी हुई एकान्त अभेदता वह यथार्थ नहीं। स्व और पर इस प्रकार दो द्रव्य होने पर भी–'जगत में दूसरे द्रव्य ही नहीं' ऐसी उनकी मान्यता है। पर्यायरूप भेद दृष्टि को स्वीकारते नहीं है। अथवा द्रव्य का परिणमन स्वभाव होने पर भी स्वीकारते नहीं है।

यथार्थ ज्ञान होने पर ही भेदज्ञान और शुद्ध परिणति प्रकट होती है। पर्याय को (वेदान्त) नहीं स्वीकारते ऐसे द्रव्य के अखण्ड स्वभाव का ग्रहण होता नहीं। द्रव्य और पर्याय दोनों पहलू का ग्रहण होता नहीं। इसलिये उसने मानी हुई एकांत शुद्धता सत्य सिद्ध नहीं होती।

(पूज्य गुरुदेवने 'सर्वज्ञ की व्याख्या' विषय में पूछा)

उ०–४ तीसरे प्रश्न का बेन श्री चंपाबेन द्वारा लिखा गया उत्तर।

स्व पर प्रकाशक स्वभाववाला ज्ञान, अपनी संपूर्ण तरंगरूप पर्याय में सहज परिणमित होकर, स्व–स्वभावमें स्वाभाविक तथा कुदरत के अनुसार परिणमता है, उसका नाम सर्वज्ञता।

बाह्य से परज्ञेयोंको जानने के बावजूद अभ्यंतरमें अपनी ही ज्ञानतरंगरूप पर्याय में परिणमन होता है। कुदरती ज्ञाता स्वयं कुदरत के अनुसार परिणमित होता है। बाह्य कुदरत दूसरे द्रव्य, अभ्यंतर कुदरत स्वयं संपूर्ण पर्यायमें प्रगट परिणमित होता है, जहाँ कोई भी अंश अधूरा नहीं है, जहाँ स्वलक्ष (स्व–उपयोग) पूर्ण परिणमित होकर ज्ञान का स्वपर–

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ज्ञायकपने पूर्ण परिणमित होना, उसका नाम सर्वज्ञता।

卐 卐 卐

पूज्य बेन शान्ताबेन द्वारा लिखे हुए उत्तर

प्रश्न पढ़कर तुरन्त ही गुरुदेव की आज्ञा अनुसार सबसे पहले इस प्रश्न का जवाब लिखा गया है।

पूज्य गुरुदेव :—'अगुरुलघु की व्याख्या किस प्रकार कर सकते हो?

उ०–१ पहले प्रश्न का बेन शान्ताबेन द्वारा लिखा गया हुआ उत्तर—

द्रव्य की जो हानि वृद्धि स्वरूप पर्याय परिणमित होती है तो भी वह मूल स्वरूप से हानिवृद्धि रूप नहीं होनेसे, उसमें जो एकाकारपना है वो अगुरुलघु स्वभाव है।

बाकी अगुरुलघु स्वभाव की विशेष स्पष्ट व्याख्या होने की ओर लक्ष पहुँचता नहीं। अनुभव में ज्ञान सविकल्प किस प्रकार है, उसकी जो व्याख्या आयी है उसमें अगुरुलघु स्वभाव की व्याख्या समाती है। पर उसमें से अगुरुलघु स्वभाव की व्याख्या विशेष स्पष्ट अलग करने की ओर लक्ष पहुँचता नहीं।

परम पुरुष श्री सद्गुरुदेव के ज्ञान का लक्ष्य जहाँ–जहाँ परिणमित होता है वो सब कामों में अथाह उपकार ही होता है। परम पुरुष श्री सद्गुरुदेव को और उनके परम उपकार को बारम्बार नमस्कार है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव—'ज्ञान सविकल्प है तो अनुभव के समय सविकल्प किस प्रकार है उसकी घटना किस प्रकार है।

उ०–२ दूसरे प्रश्न का बेन शान्ताबेन द्वारा लिखा हुआ उत्तर—आत्मा के निर्विकल्प अनुभव के समय ज्ञायक–ज्ञायक स्वरूप से प्रकट उपयोगरूप सहज परिणमित होता है। उस समय ज्ञाता द्रव्य में प्रकटपने कोई ''अचिंत्य और अद्भुतता से अलग–प्रकार के स्वभाव स्वरूप अलग–अलग अवस्था के अलग–अलग तरंगो और अलग अलग खेल स्वरूप कोई ''अद्भुततासे'' आत्म द्रव्य परिणमित हो रहा है। इन सब स्वभाव अवस्था और तरंगो को ज्ञान जानता है। वो ज्ञान की सविकल्पता है। अन्तर्मुहूर्त की अनुभव स्थिति में ज्ञायक द्रव्य में उपर लिखे अनुसार अलग अलग प्रकार की अवस्था और तरंगें क्षणमें परिणमित होती है। वो सब अवस्था और जानने स्वरूप से ज्ञान में ज्ञान की जो नई नई अवस्था सहज परिणमित होती है वो ज्ञान की सविकल्पता है। ज्ञान की अवस्था और दूसरे सब गुणों की अवस्था एक साथ परिणमित होती है। अनुभव में कर्ता क्रिया और कर्म जो स्वयं के है, उसमें ज्ञान गुण का परिणमन होकर जो ज्ञान की नई अवस्थारूप कार्य आता है, वो भी ज्ञान की सविकल्पता है। स्वयं के ज्ञान की नई अवस्था और दूसरे गुणों की नई अवस्था जाननेरूप जो ज्ञान का कार्य आता है वो ज्ञान की सविकल्पता है।

वीतराग स्वरूप को नमस्कार। श्री सतपुरुषों को नमस्कार

परम उपकारी ज्ञाननिधि कहान गुरुदेव के चरणों में नमस्कार

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव–सर्वज्ञ की व्याख्या तुम्हारी भाषा में किस प्रकार हो सकती है१?

उत्तर—३ सर्व प्रथम प्रश्न का बेन शान्ताबेन द्वारा लिखा हुआ उत्तर

ज्ञान उपयोग के परलक्ष से परिणमन सबसे सर्वथा प्रकार छूटकर ज्ञान उपयोग के ज्ञान उपयोगरूप अखण्ड सहज प्रकट प्रत्यक्ष स्वरूप परिणमन होना वो सर्वज्ञपना। अथवा जाज्वल्यमान ज्योति स्वरूप अखण्ड ज्ञाता द्रव्य की ओर उसके सब भावों को प्रत्यक्षपने एक साथ प्रकटरूप जानने अनुभव करनेरूप सहज ज्ञान उपयोग का परिणमन होना ये सर्वज्ञता है।

पूज्य गुरुदेव—दूसरे वेदांत आदि से जिनका अलगपना मुख्य मुद्दा सहित क्या मानने में आता है।

उत्तर—४ चौथे प्रश्न का बेन शान्ताबेन द्वारा लिखा हुआ उत्तर।

जैन छः द्रव्य को मान्य रखते हैं और उनके निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्धरूप भाव को भी मान्य रखते हैं। तब वेदांत एक ही द्रव्य को मानता है और एक ही द्रव्य ने मानको निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्धरूप भाव का निषेध हो जाता है। उसको निषेध होने से नैमित्तिकरूप जो द्रव्य का स्वभाव उसका निषेध होता है। और स्वभाव के निषेध होने से द्रव्य वस्तु का निषेध होता है। इसलिए जैन के अभिप्राय में वस्तु द्रव्य का अखण्ड अस्तित्व रहता है। तब वेदान्त के अभिप्राय स्वरूप द्रव्य की स्वाधीनता वगैरह सब उड़ जाती है। मतलब वस्तु स्वभाव की कोई भी अवस्था य मर्यादा नहीं रहती। वो पर-द्रव्य का निमित्त पाकर आत्मद्रव्य की पर्याय

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

विकाररूप परिणमित होती है। उसको भी वेदान्त नहीं मानता और विकार को अविकाररूप मानता है। इसलिए अविकार पर्यायपने परिणमन का उसका पुरुषार्थ हो सकता नहीं है। अर्थात् उसके अभिप्राय प्रमाण उसका सम्पूर्ण कार्य सिद्ध नहीं हो सकता, और वे संपूर्ण सुख को अनुभव नहीं कर सकते।

और जैन परद्रव्य के निमित्त से आत्मद्रव्य को जिसमें जितने अंश विकारी पर्याय होती है। उस प्रमाण से उनको मान्य रखते हैं। इसलिए अविकारी पर्याय परिणमन का उनका पुरुषार्थ हो सकता है। इसलिए वे सब कार्य सिद्धि को भी पहुँच सकते हैं। और वे सम्पूर्ण सुख का अनुभव भी कर सकते हैं। इसलिए जैन का अभिप्राय सत्य है। और वेदांत का अभिप्राय वो सत्य नहीं है। इस प्रकार वेदांत और जैन में अन्तर है।

वेदांत आत्मा को सर्वथा शुद्ध मानता है। और जैन भी द्रव्य दृष्टि से सर्वथा शुद्ध मानते हैं। इसलिए उस अपेक्षा से साधारण तरीके से दोनों एक है, ऐसा कह सकते हैं—पर वेदांत शुद्ध मानता है वो शुद्ध का यथार्थ स्वरूप समझे बिना शुद्ध मानते हैं, जब कि जैन शुद्ध यथार्थ स्वरूप समझकर शुद्ध मानते हैं, इसलिए उस तरीके से भी जैन और वेदान्त अलग होते हैं।

पूज्य गुरुदेव—आत्म आनन्द और निर्विकल्पता में भेद अथवा काल का अन्तर क्या है?

उ०–५ पाँचवे प्रश्न का बेन शान्ताबेन द्वारा लिखा हुआ उत्तर

ये प्रश्न पढ़कर तुरन्त लिखा है। १९९३ मागसर मास सोमवार पाँच से लिखने की शुरुआत हुई उसमें यह पहले लिखा है। जिस समय आत्म उपयोग पर लक्ष से छूटकर खुद के ज्ञायक में एकाकार निर्विकल्प

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उपयोगरूप में परिणमता है उस समय ही सही आनंद अनुभव में आता है। उपयोग का निर्विकल्पपने परिणमन और आनन्द का अनुभव ये दोनों एक साथ ही होता हैं उसमें काल का अन्तर जानने में नहीं आता है)

आत्म उपयोग जब निर्विकल्पपने होता है तब ही सही आनन्द का सही स्वरूप अनुभव में आता है, जो सही आनन्द और सही सुख तब ही होता है जब आत्म उपयोग निर्विकल्पपने होता है अब इसमें भेद तो क्या कहना पर उसमें स्वभाव भेद अपेक्षा से भेद ले तो ले सकते है।

बाकी तो अभेद एकाकार परिणमन उसमें भेद तो कैसे कहें ? इन पाँचो प्रश्न के उत्तर : श्री सद्गुरु के प्रताप से यथाशक्ति प्रमाण लिखे है।

卐 卐 卐

जो मनुष्य जन्म की कीमत नहीं करी तो ये राख हो जाएगा। मनुष्य जन्म महँगा है ऊँचा है मनुष्य जन्म में शुद्धात्मा की प्राप्ति कर लो ये ही मनुष्य जीवन का सार है। दूसरा जन्म अब न मिले ऐसा बीज बोओ।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य बेन साथे तत्त्व चर्चा

प्रश्न :—उपयोग को अन्दर ले जाने के साथ विकल्प भी आ जाते हैं?

उत्तर :—ज्ञायक तरफ ही उग्र पुरुषार्थ है, विकल्प में बहुत ध्यान नही है। तब ये विकल्प छिलके जैसे लगते हैं। विकल्प आते तो हैं परन्तु वे सार बिना के है। ये सार वाला खुद बैठा है ये कसवाला दिखता है इसलिए दूसरे विकल्प रहता नहीं है।

प्रश्न :—सम्यग्दर्शन पाने के पहले बहुत पुरुषार्थ किया था। वो किस प्रकार का पुरुषार्थ किया था?

उत्तर :—पुरुषार्थ तो बहुत किया। शान्ति से सोये नहीं। नींद आती ही नहीं और आ भी जाए तो नींद में से उठकर बैठ जाती और मेरा ज्ञायक...मेरा ज्ञायक ऐसा होता था। ये दशा जब प्रकट हुई तब सब एकदम अलग–अलग हो गया ऐसा आनन्द और उछाला आने से ऐसा लगा कि भव का पार आ गया। बेडा पार हो गया। गुरुदेव कैसे भेदज्ञान में खड़े हैं वो भेदज्ञान जानने से जानने में आया। सब उलट-पुलट हो जाता है। जैसे कि कोई रस्ते में जा रहे हो और मार्ग नहीं मिल रहा हो तो कैसी उलझन होती है, उसमें से मार्ग दिखे तो कितना आनन्द होता है, ऐसी ये मोक्षमार्ग की सड़क ही मिल गई। अब अपने हाथ में डोरी आ गई अब चिन्ता नहीं है।

प्रश्न :—पुरुषार्थ उठाने के लिए क्या प्रयत्न करना?

उत्तर :—लगनी लगानी–रुचि बढ़ानी। भगवान के दर्शन का और पूजा का कोई टाईम निश्चित रखते है वैसे ही चिंतन मनन का टाईम भी निश्चित जरुर रखना चाहिए। अरिहन्त भगवान ने खुद के

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

चैतन्य की पूर्णता को प्रकट किया है वैसे ही ये आत्मा को भी खुद के चैतन्य देव की पूर्णता प्रकट करने की ही भावना है। सच्चा आनन्द और सच्चा सुख और शान्ति खुद के चैतन्य में ही है। दूसरी जगह कहीं भी है ही नहीं। खुद के चैतन्य में ही आनन्द और समता शांति अनुभव में आती है वो दशा अपूर्व है।

प्रश्न :—आपकी सम्यग्दर्शनकी पर्याय क्या काम करती है?

उत्तर :—पूज्य गुरुदेव के प्रताप से मेरी आत्मा में सम्यग्दर्शन और सम्यक् ज्ञान की जो शुद्ध धर्मरूप पर्याय प्रगटी है वो निरन्तर धर्म का कार्य करती है। रागादि के विकल्प आते हैं, पर वो ऊपर ऊपर ही रहते हैं। जिस प्रकार तेल की बूंद शुद्ध पानी में ऊपर–ऊपर तैरती है, वैसे रागादि विकल्प है। अब शुद्ध धर्म प्रगट हुआ है। उसमें रागादि विकल्प प्रवेश करते ही नहीं है। कुटुम्ब के प्रति राग है इसलिए विकल्प आ जाते हैं। बाकी खाते पीते बोलते चलते ये सब बाहर की प्रवृत्ति में मेरा प्रगट हुआ शुद्ध धर्म तो निरन्तर परिणमित हो रहा है। और वो शान्ति–समाधिरूप ही निरन्तर परिणमन कर रहा है। मेरे आत्मा में जो धर्म प्रकट हुआ है वो निरन्तर बढ़ रहा है। और उसके द्वारा प्रकट हुई धर्मरूप शुद्ध परिणति कोई रोक सके—ऐसी नहीं है। जो कोई रागादिके विकल्प आते हैं वो भी रसकस रहित होने से तुच्छ होते हैं। दूसरे को इसका ख्याल आना भी मुश्किल है।

प्रश्न :—उसके लिए कितना समय लगता है?

उत्तर :—उसके लिए समय की मर्यादा नहीं है। ये मेरे में ही सब सुख है, इसलिए बाहर में नहीं खोजना। मेरे घर में ही पूरा निधान

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पड़ा है। मैं ही पूर्ण स्वरूप हूँ ऐसा दृढ़ निश्चय है। ऐसे शरीर को धारण करना ये भी कलंक है। अशरीरी हो जाऊँ ऐसा मुझे करना है। मेरा पुरुषार्थ चालू का चालू है। पूरा स्वरूप देख लिया। अब मुझे कहीं भी देखने जैसा लगता नहीं और देखने जाना नहीं पड़ता। अर्थात् मैंने सारा संसार देख लिया है। जब जागो तभी सवेरा। एकबार जागने के बाद अब मुझे सोना नहीं है। मुझे पूर्ण जग जाना है। प्रत्येक आत्मा का स्वरूप ऐसा है। आत्मा की जहाँ वृद्धि होगी वहाँ चारित्र की शुरूआत होगी। तब क्षणभर में सब छोड़कर चले जायेंगे। चक्रवर्ती जैसे भी क्षणभर में छोड़ के चले जाते है। वनराजा के वन में अविचलित ध्यान में लीन रहकर ऐसी स्थिरता आती है कि आत्मा की पूर्णता पानेवाले हों। मुझे मेरे स्वरूप की ही लीनता होने का सुअवसर कब आए। धन्य है महा मुनिराज जिन्होंने ऐसा सुअवसर देखा है।

प्रश्न :—सविकल्प दशा अने निर्विकल्प दशा के आनन्द में क्या अन्तर होता है ?

उत्तर :—बहुत अन्तर है। निर्विकल्पदशा में आनन्द की बहुत ही वृद्धि होती है निर्विकल्प दशा में बहुत ही स्पष्ट और अभेद दृष्टि से वृद्धि होती है। अभेद परिणति बहुत ही वृद्धि को पाती है।

६ सविकल्प दशा में आनन्द कम, पर निर्णय पक्का है। मोक्षमार्ग देखा, स्वयं का सुख और शान्तिका घर देखा निर्विकल्प दशामें बहुत ही आनंद हुआ और खुद के स्वरूप घरमें प्रवेश कर गया। अभेद एक चैतन्य रस का ही आनंद आता है। सविकल्प दशा में शुरुआत में निर्विकल्पदशा के लिए बहुत ही पुरुषार्थ करना पड़ता है, फिर सहज हो जाता है। अब तो घनिष्ट हो गया है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ऐसे सुन्दर सरस आत्मा के पास विकल्प आते हैं वे असुहावने लगते है।

प्रश्न :—नींद में क्या आनन्द रह सकता है?

उत्तर :—सो जाए तब ज्ञायक की परिणति ऐसी की ऐसी ही रहती है। उसे नींद नहीं आती।

मुझे नींद बहुत आई है यह किसने जाना? जाननेवाले ने ही जाना कि मुझे नींद बहुत आई, वह ज्ञायक की परिणति को नींद नहीं आती, परिणति निरन्तर चालू रहती है, वो प्रगट लब्ध है। क्षयोपशम की शक्ति तो अपन याद करते हैं, तब याद आती है और ये तो ज्ञायक की परिणति निरन्तर चालू रहती है। बोलते चलते उठते बैठते निरन्तर प्रगट रहती है। सम्यक्-दर्शन ज्ञान की परिणति निरन्तर चलती रहती है। ये पर के साथ में एकमेक होती नहीं। उपयोग में न हो तो भी चलती रहती है। विकल्प शुद्ध परिणति को कोई नुकसान नहीं करता। परिणति ऐसी अडिग हो जाना चाहिए कि इसको कैसे भी विकल्प कुछ कर नहीं सकते। ये ही पुरुषार्थ करने का है। इसको कोई असर नहीं ऐसी परिणति को अडिगपने रखने का खूब प्रयत्न करना चाहिए।

प्रश्न :—अनुभव के समय कैसे विचार चलते थे?

उत्तर :—उपयोग को स्वयं की तरफ ढालते–ढालते, मोडते–मोड़ते ज्ञायक की तरफ ऐसा वेग पकड़ा कि पक्का अवगाढ हो गया।

इसके परिणाम में बहुत लाभ होता है। शुद्ध चिद्रूप का ध्यान होने से सर्वोत्तम आराधना होती है। सर्वोतम आराधना में सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्र की उत्तम आराधना होती है। आराधना में इतना ही अवश्य कर लो। पूज्य गुरुदेव कहते थे

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कि टूकु ने टच एटलु बस काफी है। ये उत्तम आराधना हुई तो मनुष्य भव की सफलता हुई। और भवों का नाश हो गया। अनुभव होने पर अलग अलग पदार्थ का ज्ञान हुआ। उस सम्यक्‌दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति होने से मनुष्यभव की सफलता हुई, अर्थात् किसी के प्रति रागद्वेष नहीं और सबके प्रति समता भाव है।

ऐसे गुण वाली ऐसी पर्यायवाली चेतना मेरे हृदय में सदा विराजमान हो। ऐसा अचिंत्य पदार्थ चेतना मेरे ज्ञान में हमेशा के लिये विराजमान हो। मेरे ज्ञान में ये चेतना हमेशा के लिए मौजूद रहो। मेरे ज्ञान की दृष्टि में ये चेतना सदा मौजूद रहो कि उस चेतना को सदा निरखा करूँ–निहारा करूँ—इस प्रकार ये ज्ञान चेतना मेरे लिए सदा विराजमान रहो।

जिसके उपर जिसको प्रीति होय वो सदा उसे निहारा ही करते हैं। इसी प्रकार ज्ञानी तो कहते है कि मुझे तो मेरी चेतना के प्रति प्रीति है। इसलिए मेरी चेतना को हमेशा के लिए निहारा करूँ–देखा करूँ। ऐसी चेतना मेरे ज्ञान में सदा के लिए विराजमान हो, मेरे ज्ञान में सदा के लिए मौजूद हो। मेरे ज्ञान में सदा के लिए चैतन्य ज्योति जगमग ज्योतिरूप प्रकाशमान हो—ऐसी ये ग्रन्थ कर्ता भावना भाते हैं। (तत्त्वज्ञान तरंगिणी)

मेरे ज्ञान में मौजूद रूप से साक्षात् रहे। जैसे हाथ में आवलाँ दिखता है वैसे मेरे ज्ञान में प्रत्यक्ष दिखता है, देखते–देखते पूरा देखने में आता है। ज्ञानज्योति की जमावट हो जाती है और पूर्णता को पाती है। ग्रन्थकार ऐसी भावना भाते हैं कि मेरा ज्ञान पूर्ण हो जाय। ये केवलज्ञान पाने की दृढ़ता है। मात्र

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

चैतन्य ज्योति ही रह जाती है बाकी सब कर्मों का सम्बन्ध छूट जाता है।

प्रश्न :—अनुभव के समय आत्मा प्रत्यक्ष दिखती है कि परोक्ष दिखती है?

उत्तर :—उस समय "प्रत्यक्ष–प्रत्यक्ष–प्रत्यक्ष एकदम प्रत्यक्ष दिखती है" वेदन में आती है कि खुद मैं ही हूँ अहा!.... राग होता है वह तो अनुभव के बाद होता है पर पहले नहीं आता—उस समय चैतन्य का अद्भुत स्वरूप दिखता है।

प्रश्न :—गुरुदेव ने कहा अथवा भगवान ने कहा इसलिए आत्मा ऐसा है?

उत्तर :—नहीं बिल्कुल नहीं। 'ये रहा मैं' ये साक्षात् में ही हूँ। भगवान ने कहा कि गुरुदेव ने कहा इसलिए नहीं, ये रहा मैं खुद, साक्षात् केवलज्ञान की अपेक्षा से केवलज्ञानी तो एकदम प्रदेश प्रत्यक्ष देखते हैं। वैसे ज्ञानी प्रत्यक्ष देखते नहीं पर श्रुतज्ञान की अपेक्षा से वेदन में वो प्रत्यक्ष ही है। ऐसा ज्ञानी को अनुभव होता है।

आत्मा की शंका करे, आत्मा है खुद आप;
शंका का करनार ये, अचरज पहीं अमाप।

श्रीमद्जीने कहा कि खुद खुद की शंका करता है, खुद ही जाननेवाला देखनेवाला प्रगट है।

प्रश्न :—कहते है कि आचार्यो के पास में शिष्य बारम्बार यही मांगते हैं, कुंदकुंद आचार्य देव भी देते थे, और आप भी भविष्य में बनो तब देना।

उत्तर :—अपन तो आचार्य के दासानुदास हैं भगवान और गुरुदेव के दासानुदास हैं। भगवान और आचार्यों ने बताया ऐसा आत्मा स्वयं ने देखा है, इसलिए आनन्द है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जिसप्रकार तुम दूध में से मलाई निकालते हो, उसमेंसे मावा–मक्खन होता है, ऐसी दृढ़ता तो है पर दृढ़तर ऐसा कि मलाई का ज्ञान। ऐसी दृढ़तर श्रद्धा कर कि मलाई की कितनी किमत होती है कि बहनें उसमें से मक्खन निकालकर घी बनाती है। इसी प्रकार दृढ़ता में भी मलाई अर्थात् सम्यग्दर्शन ज्यादा दृढ़ता वाला होता है।

चौथे काल में अन्तर्मुहूर्त में हो जाता था इस काल में जीवों की पात्रता कम है। इसलिए ज्यादा पुरुषार्थ करना पड़ता है। परन्तु उसमें एक दिन कोई दो दिन तीन दिन, एक दो, तीन महिने, छः महिने होते हैं। तीन महिने, चार महिने होने पर उसके पहले तो प्राप्त हो ही जाता है। अमृतचन्द्राचार्य देव ने तो मापकर टाईम दिया है ज्यादा से ज्यादा छः महिने। खास तो प्रयत्न उठाना ही चाहिए सविकल्प दशा हाथ में आनी चाहिए। तब ही सम्यग्दर्शन होता है। किसी को मना करने का हक ही नहीं। हर एक आत्मा स्वतन्त्र है। और आत्मा की शक्ति है इसलिए कर सकते हैं और हो सकता है। लगन लगी हो कि मुझे मेरे स्वरूप की बराबर विशेष वृद्धि करनी है। विशेष वृद्धि की ही लगन है। भोजन करते समय वह गले उतरता हो परन्तु उसके उपर ध्यान ही नहीं कि क्या खाया जा रहा है, पेट भराया न भराया तो भी उठ जाए—ऐसी लगनी लगती है।

ढाई महिने तक क्या खाया और क्या न खाया ये खबर ही नहीं पड़ी। पुरुषार्थ करता है तब उलझन होती है, कारण कि कहाँ जाना है ये तो खबर ही नहीं, परंतु लगन है इसलिए लगन लगाते हैं। सम्यग्दृष्टि को तो मार्ग मिल गया है। इसलिए इसको

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पुरुषार्थ करना सरल हो गया है। परन्तु जोरदार करता है। जैसे मोर है वो पृथ्वी पर से उडता है तो जोर से उड़ जाता है और मूँग के ढ़ेर पर से उडाओ तो वह उड़ नहीं सकता। ऐसे ही सम्यग्दृष्टि जोरदार पुरुषार्थ कर सकता है। इसके चैतन्य में जोर आ गया। उलझन तो रही नहीं, स्वरूपको देखने लगा तो उलझन टल गई। अब पुरुषार्थ करना है तो बाद में पुरुषार्थ करे ही। ऐसा कौन मुर्ख होगा कि पुरुषार्थ ही न करे। जिसके लिए रात–दिन एक ही ख्वाहिश थी, वह स्वयं को मिल गया फिर यह पुरुषार्थ नहीं करे ऐसा कौन मूर्ख होय कि नहीं करे, करे करे और करे ही। नींद में भी चमक–चमक के उठे कि मेरा आत्मा मेरा आत्मा। नींद भी नहीं आये, कभी दो चार घन्टे सोए तो फिर वापिस से चमक कर उठे, इससे किसीको ऐसा लगे कि कही उसको भूत तो नहीं लग गया है? हाँ भूत लगा है अन्दर का। आराधना कम करी हो तो बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। अगले भव में आराधना करी होय तो सरल पड़ता है। आराधना कम की हो तो ये भव में बहुत पुरुषार्थ करना पड़े, पुरुषार्थ में स्वयं महेनत करे कि स्वयं है और स्वयं को प्राप्त करना है। इसलिए महेनत करनी पड़े तो ये कार्य होता है होता है और होता है। स्वयं ही है और हाजराहजूर है, फिर क्या? स्वयं हाजिर स्थिर है, ये रहा। ऐसा भी एकांत से नहीं है कि पूर्व में आराधना की हो तो सरल पड़ता है, ऐसा नहीं है। आत्मा की लायकात एकदम प्रगट हुई होती हो तो उसको थोड़े समय में भी हो जाता है। वर्तमान में पूरी तैयारी करनी चाहिए उसकी जो पात्रता वर्तमान में होनी चाहिए, ये होती है तो हो जाता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

महा मुनिराज स्वयं स्वयं के आत्मा को अनुभव करके पुरुषार्थ करके, किमत करके स्वयं के स्वरूप को प्राप्त करके ज्ञायक आत्मा को हथेली में नजरो से देखकर बात कर रहे हैं। अपने स्वयं के निधान को नजरों से देख रहा हूँ। नजर से देखकर बात करता हूँ। दूसरों की बात नहीं, कोई और की बात नहीं मेरी स्वयं की बात है। आचार्यदेव कहते हैं कि नगाड़े बजा बजा के आत्मा का अनुभव करके ये हम यहाँ खड़े है।

ये प्रवचनसार शास्त्र को हीरो–मोती से बधावो; ऐसे भाव आते हैं। मेरे पास हीरे या मोती कुछ नहीं। पर भाव-मोती, भाव-हीरे से बधाई करता हूँ नमस्कार करता हूँ। ये शास्त्र को धन्य है! आचार्यदेव आपकी ऐसी सुन्दर बात है।

मैं, मैं....मैं...करके अहं करता है वो कौन है? ये मैं हूँ मैं.....मैं बहुत कीमत है, मैं.....मैं.....मैं....ये बहुत कीमती वस्तु है। आचार्यदेव 'मैं' कहते हैं वह 'मैं' ही बहुत जोरदार है। अपने आत्मा को समस्त त्रिकाली ध्रुवत्व धारण करनेवाला द्रव्य ही जानता हूँ। मेरा द्रव्य त्रिकाली ध्रुव है जब पूछो तब मैं हूँ मैं हूँ और मैं हूँ। आत्मा और मैं दोनों एक ही है। ऐसा मेरा ध्रुव......ध्रुव और ध्रुव ध्रुवत्व धारण करने वाला द्रव्य उसको मैं जानता हूँ।

चैतन्य को हिला दे ऐसी ये गाथा है कि चैतन्य जागृत हो जाय। इसलिए दूसरों के सामने देखना छोड़ दे। तूं खुद अनन्त गुण का पिण्ड भरपूर भगवान है। गुरुदेव कहते हैं कि सब भगवान है ऐसा तू स्वयं भगवान स्वरूप विराजमान है। तू तेरे सामने देख तो अनन्त गुणों का निधान अनंत शान्ति का धाम

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अनंत निराकुलता सब अन्दर तुझे दिखेगा। सब ऋद्धि तेरे में भरी है, ऐसा तू भगवान है। भगवान में पूर्ण ज्ञान, पूर्ण आनन्द प्राप्त किया और अशरीरी पद प्राप्त किया। जैसा कार्य भगवानने किया है वैसा कार्य तुझे प्रगट करना है कि तेरी ये चेतना को प्रकट करना ये काम करना है, कि तेरी चेतना को प्रकट कर 'इसलिए भगवान को याद' करना है।

आचार्य देव कहते हैं कि मैं ऐसा अनुभव करता हूँ, ऐसा भगवान की वाणी में कहा गया है, ऐसा अनुभव तुम भी करो, तुम भी स्व और पर के विवेक को पाओ, तुम्हारी शक्ति को दबाओ नहीं उसे जगावो, तुम उसको पाओ, इस हेतु से इस शास्त्र की रचना की है, जैसे मैं ध्रुवत्व धरता पदार्थ हूँ, वैसे सब ध्रुवत्व को धारण करनेवाले पदार्थ है।

प्रश्न :—ऐसा पुरुषार्थ जागृत (करने) के लिए क्या करना? इसमें हमारी क्या कमी कमजोरी दिखती है?

उत्तर :—पुरुषार्थ करते करते ऐसा समय एक दिन आ जाता है। और उसकी खोजबीन करते रहना—ऐसा करते-करते पात्रता बढ़ती जाती है खोजबीन है ये ही पात्रता है। ऐसा करते-करते निश्चित हो जाता है तब ज्ञायक पकड़ाता है।

प्रश्न :—खोजबीन में कैसा प्रयत्न करना? और किससे अलग करना?

उत्तर :—ज्ञायक ज्ञान में पकड़ में आना चाहिए, रागादिरूप परिणाम से अलग है, ऐसा प्रयत्न करना। जिज्ञासा तथा प्रयत्न चालू ही रखना —ऐसा करते करते ऐसा शुद्ध समय आ जायेगा।

हम भी पहले कितने वर्ष हुए ऐसा ही करते थे। पूज्य गुरुदेव

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

का परिचय हुआ, तब से गुरुदेव जिसे भेदज्ञान कहते हैं वह ही प्राप्त करना है। ऐसी तीव्र इच्छा थी उसके लिए रात को और सुबह अकेले में बैठकर ये ही करते थे। शुरु में पुरुषार्थ का उठाव कम होता है। पीछे से बहुत अधिक था कि दूसरी जगह कही अच्छा नहीं लगता था। पूज्य गुरुदेव ने बताया और अपन ने पकड़ लिया कि यही करने का है। भेदज्ञान के सूत्र जो प्रवचन में आते, वे मैं लिख लेती फिर उस पर चिन्तन करती।

यह अर्ध समर्पण करके प्रभु! निज गुण का अर्ध बनाऊंगा,
और निश्चित तेरे सदृश्य प्रभु! अर्हंत अवस्था पाऊंगा।

ये पूजा की लाईन मुझे बहुत अच्छी लगती है। मैं एक अखण्ड हूँ। जो यह अलग–अलग दिखते है वो खंड–खंड दिखाई देते है। उसके सामने में एक अखण्ड हूँ। जो खंड–खंड दिखाई देता है वो मैं नहीं हूँ।

अखण्ड ज्ञायक आत्मा अखण्डरूप से जाननेवाला है, अखण्डरूप से वेदन में आता है, अखण्डरूप से रहता है। अनादि अनन्त काल गया, पर आत्मा के एक प्रदेश का भी खण्ड नहीं हुआ। पर्याय में अधूरापन और ओछापन था। पर्याय में खण्डपना था परन्तु मेरे द्रव्य में कि मेरे गुण में खण्डपना नहीं है। मैं तो अखण्ड–अखण्ड ज्ञायक स्वरूप हूँ।

बाहुबली भगवान को देखते हैं तब ऐसा लगता है कि अपने अखण्ड ज्ञायक में बैठे हैं, उनको ज्ञायक दिखने से अखण्ड ज्ञायक में बैठ गए हैं–जम गए हैं। किसी के सामने देखा नहीं, बारह महिने तक एक ही पैर से एक टक खडे रहे पर कहीं नजर डाली नहीं। स्वयं के ज्ञायक स्वभाव में लीन रहे। उन बाहुबली की

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रतिमाजी के दर्शन करते समय इतने सारे भाव आते कि वाह! ऐसा बढ़िया चैतन्य का स्वका वेदन में आ रहा है और अनुभव हो रहा है। बैलें चढ़ गई, सर्प ने बिल बनाये, पक्षी ने सिर पर घोसलें बनाए। परन्तु आत्मा के आनन्द में ऐसे मशगुल थे कि वे अखण्ड एक आत्मा के स्वरूप का अनुभव कर रहे हैं।

ज्ञानियों को भी अन्दर जाने के बाद बाहिर आना जमता नहीं फिर भी पुरुषार्थ की मंदता के कारण बाहर आ जाते हैं। सिद्ध भगवान को तो बाहर आना रहता ही नहीं। अन्दर में लीन हुए तो हुए। पूर्ण हुए तो हुए। अब आनन्द के महल में मस्ती करते हैं, आनन्द के महल में झूलते रहते है। किसी प्रकार का विकल्प नहीं, उपाधि नहीं, आकुलता नहीं, निराकुल आनन्दस्वरूप में शाश्वत आनन्द में निरंतर रहते हैं। आनन्द का समुद्र उछला है उसमें आनन्द के तरंगें उछलती है कि बाहर आते ही नहीं। अशरीरी सिद्ध भगवंतो को नमस्कार हो।

जब शुद्धनय प्रकाश में आता है तब से व्यवहार दृष्टि सच्ची खुलती है। शुद्धनय से तू देख तो तुझे तेरे में अनंत अनंतता दिखाई देगी। भेदरूप से न देखो तो सभी जगह अनन्तता दिखाई देगी। अनन्त अनन्त सामर्थ्यवाला दिखेगा, अकेला शुद्ध चैतन्य अकेला शुद्ध ज्ञायक। जब निमित्त-नैमित्तिक भाव मिट जाये तब जीव पुद्गल अलग जानने में आ जाते हैं।

सिद्ध भगवान असंख्य प्रदेश और अनन्त गुण प्रत्यक्ष देखते है। निर्विकल्पपने अपना और पर का ज्ञान स्वपर प्रकाशक ज्ञान है। भेद-अभेद का ज्ञान तो वर्तता है परन्तु विकल्प नहीं। साक्षात् निर्विकल्प अवस्था सिद्ध भगवान को होती है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रश्न :—अनुभव करने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर :—अनुभव करने के लिए अनुभव पूर्वक उत्कंठा, धीरज पूर्वक पुरुषार्थ करके आगे बढ़ता जाय, बढ़ते–बढ़ते पहले ज्ञान में प्रथम भूमिका को पकड़े, ज्ञायक अस्तित्व में से उठा हुआ निर्णय, ज्ञान है वो मैं 'हूँ' ऐसा सम्यक्‌ज्ञान का निर्णय होता है, वो इसी प्रकार का निर्णय होता है। पाने के पहले बारम्बार अन्दर जाने के लिए प्रयत्न करता है, खूब जिज्ञासा और छटपटाहटपूर्वक उसके पीछे लगता है। लौकिक में कहते हैं कि किसी के पीछे पड़ना अर्थात् उसका जड़ निकाले—ऐसे में मिथ्यात्व के पीछे पड़ता है वो मिथ्यात्व को मूल जड़ निकालता है।

प्रश्न :—आप कहते है कि बहुत पुरुषार्थ किया, तो किस प्रकार का पुरुषार्थ किया था?

उत्तर :—पुरुषार्थ तो ऐसा किया कि एक जैसी नींद नहीं पूर्ण की, नींद आए ही नहीं। नींद में ही बैठ जायें और उपयोग में मेरा ज्ञायक मेरा ज्ञायक ऐसी लगन थी, और ये दशा जब प्रगटी तब अन्दर पूरा अलग ही अलग हो गया।

ज्ञायक आत्मा को जानते हुए सर्वज्ञ भगवान को पहचाना, अभी तक सर्वज्ञ भगवान को मैं परोक्ष नमस्कार करती थी परन्तु आज से ही मैंने सर्वज्ञ भगवान को प्रत्यक्ष नमस्कार किया। 'कहान गुरु कौन है? उनका आत्मा क्या काम करता है, मुनिराज का स्वरूप कैसा होता है, ये सब अपने चैतन्यदेव के दर्शन करने से सबका स्वरूप दिखता है। अंदर से पूरी दिशा ही पलट गई, अंघेरे में से उजाला होता है तो कैसा लगता है, पहले तो कुछ दिखता नहीं कि मैं कौन हूँ, इसमें से एकदम ये रहा ''मैं आत्मा'' एकदम

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अंधेरे में से उजाले की जाज्वल्यमान–ज्योति प्रकाशमान हुई' अहो! ऐसा है चैतन्य देव का स्वरूप! बहुत से पूछते हैं कि सम्यग्दर्शन होता है ऐसी खबर कैसी पड़ती है? अरे भाई! ये जागती ज्योति प्रकटे और खबर न हो ऐसा कैसे हो सकता है, पूरी दशा ही पलट जाती है। ये स्वयं को ख्याल में आ जाती है।

प्रश्न :—दूसरे के आत्मा के स्वरूप का ख्याल आता है?

उत्तर :—हाँ! दूसरे के आत्मा के स्वरूप का ख्याल आ जाता है कि ये आत्मा कैसे परिणमता है, ये भी ख्याल में आ जाता है। सही बात तो यह है कि स्वयं के आत्मा को जाननेवाले को सभी के आत्मा जानने में आते है। जिस प्रकार कोई रस्ते में जा रहा हो और जहाँ जाता है वो रास्ता नहीं दिखे, खूब घनघोर जंगल में चला जाय, रास्ता दीखे नहीं और भूल जाय तो कैसी असमंजस होती है कि कोई रास्ता दिखता नहीं इसमें से सच्चा रास्ता दिखाई दे तो कैसा खुश होता है कि ये तो अंदर की झंझट टल गई, इसमें तो पूरा मोक्षमार्ग ही मिल गया, पूरी दिशा ही मिल गई, हाथ में डोर आ गयी, कि अब अपने को कोई चिंता रही नहीं।

प्रश्न :—पुरुषार्थ करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर :—चैतन्यदेव की लगन लगानी। इसके लिए जैसे तुम श्री जिनेन्द्र देव के दर्शन–पूजा भक्ति के लिए टाईम निकालते हो, स्वाध्याय-पढ़ने का टाईम निकालते हो, उसी प्रकार चिन्तवन–मनन का टाईम निकालना चाहिए। कम से कम आधा घन्टा सुबह शाम एकान्त में बैठकर आत्मा को ढूंढ़ने का टाईम, मनन का टाईम जरूर निकालना कि में देह के अंदर मैं...मैं...मैं...करने वाला कौन हूँ? इसको ढूंढ़ने के लिए ये सब जाननेवाला तो मैं हूँ,

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ये जानने जानते ढूंढ़ते ढूंढ़ते ज्ञान में पकड़ा जाय इस प्रकार का प्रयत्न करना, जिस प्रकार स्वाध्याय का नियम रखते हो, दर्शन पूजन का नियम रखते हो वैसे ही चिंतवन–मनन का नियम भी रखना। मनन तो बहुत अगत्य की चीज है। उसके लिये सुबह–शाम समय जरूर (अवश्य) रखना। एकांत में मनन से एकदम नजदीक आते है, मनन से स्वयं की शांति हो जाती है। खुशी–आनन्द–उत्साह–होश आता है, मनन से बहुत लाभ होता है।

प्रश्न :—ऐसा पुरुषार्थ करने के पहले ऐसे विशिष्ट प्रकार के कौन से शास्त्र पढ़ना?

उत्तर :—शास्त्र पढ़े बिना तो आगे बढ़ नहीं सकते, इसमें ऐसा है कि कुंदकुंद आचार्यदेव के सब शास्त्रों, सभी आचार्यो के शास्त्र तो अनुभव से ही भरे है। पंचास्तिकाय की १७२ वीं गाथा पढ़ते पढ़ते ऐसा हुआ कि सब शास्त्र का तात्पर्य एक ही है कि ''वीतरागता'' और ये वीतरागता'' प्रकट हो; ये मुझे इतना अच्छा लगा कि मुझ से आगे शास्त्र पढना नहीं बने। ये ही बारंबार पढ़ूं। इस प्रकार जिसमें स्वयं को रस चढ़े वो शास्त्र पढ़ना, समयसार प्रवचनसार–नियमसार भी अध्यात्म के लिए बहुत अच्छे हैं। आचार्यदेवने अध्यात्म के कलश चढ़ा दिए है पद्मप्रभमलधारीदेवने अध्यात्मकी धून मचा दी है। ऐसे–ऐसे शास्त्र पढ़ना और उनका ही विचार करना, इसमें से धून लग जाय आचार्य भगवंतो ने कितना अच्छा एक वीतरागता का ही सार बताया है। सब शास्त्रों का सार एक वीतरागता प्राप्त करना उसमें सब आ गया। वीतरागता कैसी? मात्र एक ज्ञायक की वीतरागता। रागद्वेष मन्द करने वो वीतरागता नहीं। चैतन्य का रंग हो इसलिये सामने ऐसा रस चढ़ जाता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रश्न :—उपयोग किसको कहते हैं?

उत्तर :—जो चैतन्य का अनुसरण करके परिणमें वह उपयोग है। उपयोग का काम ही चैतन्य का अनुसरण करना है। आचार्यदेव ने ये सब अनुभव करके ही बात करी है।

प्रश्न :—आपने चिंतवन करने के लिए कहा तो शास्त्र पढ़ते-पढ़ते चिंतवन करना कि शास्त्र पूरा हो जाय फिर चिंतवन करना?

उत्तर :—सब शास्त्र पढ़ने जाय तब तो कितना समय लग जाए, शास्त्र पढ़ते जाना और साथ साथ में चिंतवन करते जाना इसलिए शास्त्र पढ़ने का समय रखना। साथ में चिंतवन का समय रखना। शास्त्रजी में आता है न कि मुझे आज ही करना है इसमें विलम्ब करना नहीं। शास्त्र पढ़कर फिर करूँगा ऐसा वादा तो करना ही नहीं, पूज्य गुरुदेव कहते थे कि वायदा करे वो वाफल जाय, इसलिए वायदा करना नहीं। मुझे तो आज ही करना है। फिर स्वयं के पुरुषार्थ के अधीन है, परन्तु भावना ऐसी रखनी कि इसमें मुझे प्रमाद नहीं करना। हो तो धीरे धीरे हो। इस काल में दुर्लभ है। चौथे काल में तो भगवान के समवशरण में दिव्यध्वनि सुनते सुनते ही सम्यग्दर्शन प्राप्त हो जाता था, ऐसा काल था, ऐसे पात्र जीव थे, अभी सद्गुरुदेव के शासन में भी अच्छा काल है कि सब को स्वाध्याय की रुचि अच्छी है—ये बहुत ही अच्छा है।

प्रश्न :—पात्रता कैसी होनी चाहिए?

उत्तर :—सर्व प्रथम तो देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति, देव के प्रति बहुमान, पंच परमेष्ठी के प्रति बहुमान ये पात्रता आनी चाहिए, बाकी मंद कषायी होना चाहिए, तीव्र कषाय न हो, दूसरा क्रोध, मान–माया–लोभ सब में मंदता हो तथा सरलता होनी चाहिए, सरलता ये पात्रता का बड़ा गुण है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

श्रीमद् राजचन्द्रजीने कहा है कि विशाल बुद्धि, मध्यस्थता, सरलता और जितेन्द्रियपना, इतने गुण जिस आत्मा में हो तो वो तत्त्व प्राप्त करने का उत्तम पात्र है। ये पात्र होने के उत्तम गुण है। श्रीमद्जीको अंदर की लब्धि प्राप्त थी, शक्ति बहुत थी, दूसरों के मन की बात भी जान लेते ऐसी लब्धि थी। आत्मा के अनुभव में श्रुतज्ञान भी जबरदस्त था। श्रुत की लब्धि थी।

पूज्य गुरुदेव के समय काल बहुत अच्छा था, सुनने वालों के झुंड के झुंड थे। पूज्य गुरुदेव का ज्ञान भी बहुत तीक्ष्ण था। कि ये तीक्ष्ण धारा जिनको लगे उनके मिथ्यात्व के चूरे-चूरे होकर सम्यक्त्व ज्योति जग जाय।

आत्मा की तीव्रता की लगन लगी हो, वैराग्यभाव हो, आत्मा की स्थिरता हो, कषाय मंद पड़ गई हो, मात्र वीतरागता वीतरागता झलकती हो और इसकी आराधना हो। मात्र एक आत्मार्थी का ही समागम हो, एक ही ध्यान हो वो जीव पात्र है।

अब सभी के जीवन का समय बहुत थोड़ा है, शरीर के संयोग ढीले हो गए हैं इसके लिए अब साध्य आत्मा की सिद्धि कर लेना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव ने जो भेदज्ञान का मंत्र दिया है वो बराबर पकड़ लेना, प्रवचन में से दो चार सूत्र भेदज्ञान के ऐसे आते हैं उनको लिख लेना। और उनका ही मंथन पूरे दिन करते रहना।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूर्णज्ञ प्राप्त णमो णमो अरिहंताणं णमो अरिहंताणं, अनंतज्ञान–अनंत आनंद और अशरीरी पद को प्राप्त णमो सिद्धाणं, णमो सिद्धाणं, णमो सिद्धाणं, परम रत्नत्रय विशिष्टज्ञान प्राप्त णमो आयरियाणं, णमो आयरियाणं णमो आयरियाणं, परम रत्नत्रय प्राप्त अंग उपांग के ज्ञान धारी णमो उवज्झायाणं, णमो उव्वज्झायाणं। परम रत्नत्रय प्राप्त परम आत्म स्वभाव को प्राप्त णमो लोए सव्वसाहूणं। पंच परम परमेष्ठी के एक–एक गुण को लक्ष में लेकर नमस्कार करे तो बहुत भाव आते हैं। छद्मस्थ के ज्ञान में सब गुण ख्याल में नहीं आते पंच परमेष्ठी में तो बहुत गुण हैं। अपन नमस्कार करते हैं अपन को बहुत भाव आते है।

पूज्य गुरुदेवने आत्मा का स्वरूप बताया है। प्रत्येक जीव को आत्मा का स्वरूप समझने जैसा है। हम देह में ज्वाजल्यमान ज्योति स्वरूप आत्मा हैं। सिद्ध भगवान जैसा ही आत्मा का स्वरूप है। हर जीव को समझने जैसा है। स्वयं चैतन्य आत्मा हाजरा हजूर है। ज्ञानी जीव रत्नत्रय प्राप्त कर, वृद्धि करके अनन्त जीव मोक्ष गए। प्रत्येक जीव को अद्भुत चैतन्य स्वरूप समझने जैसा है। उसकी आराधना करने जैसी है। पंच परमेष्ठी का स्वरूप स्वयं आत्मा के स्वरूप को आराधने जैसा है। पुरुषार्थ करे तो आत्मा जरूर प्राप्त होती है।

प्रश्न :—प्रथम भूमिका में आत्मा के स्वरूप का विचार करके आगे बढ़ते जाय तो उसके पुरुषार्थ का कैसा रूप होगा ? कि जिससे नजदीक हो जाय और प्राप्त हो जाय।

उत्तर :—ज्ञायक आत्मा को जानने की जिज्ञासा हो और उपयोग को बारम्बार ज्ञायक परमात्मा की तरफ ले जाय, दूसरा कहीं उसका लक्ष न जाय। ये पुरुषार्थ जोरदार हो तो प्राप्त कर ले। मुझे तो मेरा ज्ञायक स्वभाव ही दृढ़ करना है। मुझे तो मेरा ज्ञायक भाव

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ही चाहिए है। खाते पीते, उठते, बैठते, चलते, फिरते तीव्र पुरुषार्थ होना चाहिए। मात्र भावना भाये तो नहीं चलेगा। बारम्बार उपयोग को ज्ञायक की ओर ले जाना चाहिए। तीव्र पुरुषार्थ बारम्बार आये, बातें करते खाते–पीते जोरदार पुरुषार्थ चाहिए। भावना में तो मंद पुरुषार्थ है, पर स्वयं की तरफ ही उपयोग कार्य करता है।

प्रश्न :—गुरुने आज्ञा की कि आत्मा प्राप्त कर ले। तो उस पर वजन है कि परीक्षा प्रधानी होना?

उत्तर :—स्वयं स्वयं का परीक्षा प्रधानी हो जाय। पहले आज्ञा प्रधान होय, देव ने कैसा स्वरूप बताया है? गुरु कैसा स्वरूप समझा रहे हैं? उसके अनुसार चले तो आज्ञा प्रधानी फिर स्वयं अंदर पुरुषार्थ करे वो परीक्षा प्रधानी होता है।

परमात्मा आत्मा है। आत्मा वही परमात्मा है। दोनों एक ही चीज है। नाम से अलग कहलाते हैं। स्वयं के आत्मा का अनुभव हुआ ये ही परमात्मा के दर्शन हुए। ज्ञायक आत्मा को ज्ञान में पकड़ सके तो उसको ख्याल आता है कि मार्ग हाथ में आ गया है। फिर स्वयं पुरुषार्थ करे। ज्ञान का अस्तित्व ज्ञान में पकड़ आना चाहिए। फिर ये ही मैं हूँ ऐसा पुरुषार्थ करे। अनन्त काल से नहीं आया हुआ आनंद आता है वेदन होकर निराला हो जाता है।

प्रश्न :—क्या होता है उस समय?

उत्तर :—सबसे पहले ज्ञायक आत्मा को ज्ञान में पकड़ता है उससे फिर पुरुषार्थ करता है तब (इसलिये) उसमें जो हो वो सब दिखता है। सब निधान दिखता है निधान का विश्वास करता है, फिर

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

निधान का फल दिखता है। ज्ञान स्वरूप आत्मा ज्ञान में दिखता है।

प्रश्न :—अनुभव के काल में किससे पकड़ में आता है?

उत्तर :—अनुभव के काल में साक्षात् दिखता है। स्वयं का ज्ञायकपना दिखता है। अनुभव के काल में साक्षात् सिद्ध भगवान जैसा ही दिखता है। उसके पहले नहीं दिखता। प्रतीति आ जाय, ज्ञान से ज्ञायक को पकड़े तो दिखता है।

प्रश्न :—अनुभव के काल में देह की स्थिति कैसी होती है?

उत्तर :—देह की स्थिति किसको पता कैसी होती है? पांचो इन्द्रियां स्थिर हो जाय। उपयोग स्वयं के स्वरूप में लीन हो जाय। शरीर की स्थिति स्थिर हो। उसमें कार्य नहीं होता।

प्रश्न :—ध्यान अवस्था में ही अनुभव होता है ऐसा ही है कि फिर किसी को सोते सोते भी होता है। ऐसा नियम होता है?

उत्तर :—सोते–सोते भी होता है, बैठे–बैठे भी होता है। पर स्वयं को पुरुषार्थ करना चाहिए। सोते–सोते भी ज्ञायक की तरफ उपयोग को ले जाता है।

प्रश्न :—पर ये तो अनुभवी के लिए है? प्रथम जिसने अनुभव नहीं किया उसका क्या?

उत्तर :—उस समय सोते–सोते नहीं होता, पर ये मान लो कि किसी जीव को मरण के समय ऐसे परिणाम आ गए तो सोते–सोते भी होता है। किसी का मरण के समय ऐसा तीव्र पुरुषार्थ हो जाता है कि निर्विकल्प हो जाता है। इसलिए बैठे–बैठे ही होता है ऐसा एकान्त नहीं, अनेकान्त है। पर मुख्यपने बैठे बैठे ही

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जागृत अवस्था में ही होता है। पुरुषार्थ मुख्य है फिर जैसी हम जीव की पात्रता–उस अनुसार से वो करता है। किसी को अल्प पुरुषार्थ से हो जाता है। किसी को तीव्र पुरुषार्थ से होता है ये जीव वीर्य गुण के सामने देखकर थोड़े ही बैठा है। ये तो पूरे ज्ञायक आत्मा के सामने देखकर पुरुषार्थ करने का है। इसमें इकट्ठे अनंत गुण आ गए। पूरा ज्ञायक ज्ञान में दिखाई देता है। जानने में आ जाता है।

प्रश्न :—पर हम को दिखता नहीं, किस प्रकार देखे ?

उत्तर :—सभी को आत्मा दिखती है, ज्ञायक आत्मा में उपयोग रख दे तो हाजिर ही है। उपयोग बदलने की महेनत करने की है। वो ही वास्तविकता में मेहनत है। उपयोग दूसरी तरफ जाता है उसको स्वयं की तरफ बदलना वो ही वास्तविक मेहनत है। जाननेवाला ज्ञान में हाजिर होता है, आदत हो गई इसलिए आता नहीं है इसमें उपयोग को स्वयं की तरफ बदलना ये वास्तविकता में मेहनत है।

आत्मा का स्वरूप देव शास्त्र गुरु ने ही बताया है। उनके प्रताप से ही महिमा आती है। इसलिए पहले पहले देव–शास्त्र–गुरु की महिमा तो आती ही है। जिस प्रकार धर्मचक्र मुख्य चलता है उसी प्रकार देव–शास्त्र–गुरु की महिमा तो मुख्य चलती है। उसका आधार लेकर पूज्य गुरुदेव ऐसा कहते थे ऐसा करके उपयोग को अंदर में ले जाए। उसमें कोई देव–शास्त्र–गुरु की महिमा नहीं घटती है। पर स्वयं की महिमा बढ़ जाती है। इसका उपकार है। उन्होंने जो बताया है अपने को। उपकार किसी को कहान गुरु का किसी को कुंदकुंद आचार्य का तो किसी को

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जिनेन्द्र भगवान का होता है। जिसका उपकार होता है वो उसको मुख्य करता ही है। धर्मचक्र जिस प्रकार आगे–आगे चलता है। आत्मा का स्वरूप क्या है? गुरु कैसा चाहिए? मेरे गुरु क्या कर रहे है?

पहले तो शरीर दिखता था। गुरु का, भगवान का शरीर दिखता है। स्वयं की आत्मा का स्वरूप जानता है इसलिए गुरु आत्मा में क्या करते है वो दिखता है। जानने में आता है भगवान क्या कर रहे है आत्मा में ये कुछ अंश में जानने में आता है पूर्णता से नहीं जानने में आता है पर अमुक अंश में जानने में आता है। मुनिराज का स्वरूप अंश में जानने में आता है। सत्य यथार्थ में जाना जाता है।

प्रश्न :—ऐसे कौन से चक्षु है कि सब जानने में आता है?

उत्तर :—ये चक्षु काम में नहीं आती हैं. अंदर के चक्षु खोलने की है। इसको तत्त्व की रुचि है इसलिए देव–शास्त्र–गुरु ऐसा कहते हैं ऐसा तत्त्व बताते हैं। ये सच्चा है। जैसी स्वयं को मुमुक्षुता है। इस प्रकार थोड़ा थोडा जाने, तो ही इनके वचनों पर आगे जा सकते है। उसमें चैतन्य का स्वरूप कैसा है उसका आत्मा भेदज्ञान रूप से क्या काम करता है वो पहले नहीं दिखता फिर दिखाई देता है। सम्यग्दर्शन होता है तब इतना ज्यादा नहीं होता। पर स्वयं को जो चैतन्य स्वरूप है उसका आनन्द स्वभाव है उसका अनुभव होता है। उसमें कोई लोकालोक की अपेक्षा आती नहीं। लोकालोक की अपेक्षा केवलज्ञान में आती है। ये तो स्वयं के चेतन को जाने तो सभी के पर-चेतन को जान लेता है। ये सब आत्मा क्या करती हैं वह जान लेता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रश्न :—ये अनुभूति के प्रदेश कितना बड़े होते है?

उत्तर :—आठ पंखुड़ीवाले कमल की रचना वाला मन है। वो जगह मुख्यरूपसे होता है। कमल के अन्दर चैन्य भगवान उसमें अनुभव करते हैं।

प्रश्न :—मन को ख्याल तो आता होगा न?

उत्तर :—अनुभव हो गया फिर अनुभव के समय मन खड़ा है, पर इसको ख्याल नहीं होता। फिर ख्याल में आता है कि ऐसा था, ऐसा था, ऐसा था।

जीव को लेकर सब व्यवस्थित चलता है। जीव जैसे परिणाम करता है वैसे कर्म बंधते है, कर्म बंधते है उस प्रमाण से गति मिलती है। सुख-दुःख मिलता है। कर्म का नाश हो तो मोक्ष हो, ये सब व्यवस्थित चलता है। एक जीव न हो तो कुछ व्यवस्थित नहीं होता।

प्रश्न :—बुद्ध किसको कहते हैं?

उत्तर :—एक अखण्ड चीज है। ध्रुव चीज है ऐसे जीव का स्वरूप देखते हुए भी जीव को न माने, पर पर्याय को माने वे बुद्ध और शाश्वत आत्मा है ये मानने के लिए तैयार होय तो बुद्धिमान।

तुम्हारे में है ऐसा भगवान के ज्ञान में आया है ऐसा ही जीव का स्वरूप है। ऐसा आपने जाना है। ऐसे भगवान जैसे विचक्षण कौन हो सकते है? महावीर भगवान की जय हो सीमंधर भगवान की जय हो–कुंदकुंद देव की जय हो–सद्गुरुदेव की जय हो–परम दिगम्बर जैन धर्म की जय हो–मुक्तिमार्ग प्रकाशक गुरुदेव की जय हो.....

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

साधर्मी के प्रति वात्सल्य हो, साधर्मी के प्रति वात्सल्य हो, आत्मा तरफ का पुरुषार्थ तो मुख्य होता ही है। सम्यग्दर्शन हो उसको दर्शन विशुद्धता कहते हैं। उसमें बारम्बार ज्ञान उपयोग रहने से उसके साथ, बहुश्रुत भक्ति, उसका नाम विनय। दर्शन विशुद्धता में जीव तीर्थंकर नाम कर्म को बांधता है। कितनी जवाबदारी है? अपरिग्रहितता, परिपूर्णता शक्ति अनुसार तप का नाम चारित्र विनय कहलाता है।

दर्शन–ज्ञान–चारित्र तीनों का विनय है वो प्रवचन वात्सल्य है, समाधि धारण करके वैयावृत्ति में उपयोग लगाना। अरिहंत और जिनको नमस्कार, उनके गुणानुवाद उसको वन्दना कहते हैं?

प्रत्याख्यान :—व्रत की शुद्धि और प्रतिगृह उसक नाम प्रत्याख्याना

ध्यान :—वचन की प्रवृत्ति हटाकर, ध्येय वस्तु की तरफ एकाग्रता, चैतन्य में एकाग्रता, उसमें उपयोग को लगाना वह ध्यान है।

अरिहंतभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचन वात्सल्यता, प्रवचन प्रभावना अभिक्षण ज्ञानउपयोग, ये सब न होय तो आवश्यक में निरतिचारता नहीं है।

दर्शन–ज्ञान–चारित्र गुण प्रगट होते हैं, वो लब्धि संवेग है। गुणों प्रकटे इसलिए इसको समागम होता है। उसमें सम्प्राप्ति होती है। आत्मा की प्राप्ति हुई और आनंद प्रगटा। चेतना स्वरूप आत्मा को जानना उसका नाम धर्म है। अनन्त काल में व्रत, नियम, संयम, सब लिया पर देह के अन्दर देह से अलग कौन है, चेतना स्वरूप, सुखस्वरूप, अनन्तगुण स्वरूप, आनंदस्वरूप, आत्मा को पहचाने से ही सच्ची शांति होती है। और आत्मा का हित होता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

है, उसके बिना हित नहीं होता। बाहर के चाहो जितने शुभभाव करो तो पुण्य बंध होता है। पर उससे भव का अभाव नहीं होता। आत्मा को पहचानने से ही भव का अभाव होता है। सच्चे ज्ञान और सच्चे सुख की प्राप्ति होती है। मैं चेतन स्वरूप आत्मा कौन हूँ। कैसा हूँ। उसका सच्चा स्वरूप ज्ञान में आने से उसको सम्यग्दर्शन कहते है और उस ज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहते है। सम्यक् दर्शन और सम्यक् ज्ञान बिना जीव ने अनन्तकाल परिभ्रमण किया। उसके बिना धर्म की और सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए आत्मा के स्वरूप को समझने का प्रयत्न करो, उसकी जिज्ञासा करो, रुचि बढाओ, ये ही सच्चा उपाय है।

अरिहंत और सिद्ध भगवान के गुणों का सुंदर स्मरण हुआ इसलिए सुंदर तीर्थयात्रा हुई। उनका बहुमान आया। उनके गुणों का भी बहुमान आया, उनकी भक्ति हुई अर्थात् यात्रा सफल हुई। पूज्य गुरुदेव के साथ गिरनार की यात्रा में गए। वहाँ सहसावन में गए। वहाँ पूज्य गुरुदेव ने साष्टांग नमस्कार किया। नेमिनाथ भगवान पर बहुत बहुमान भाव आ गया। धन्य यह भूमि जहाँ से नेमिनाथ दीक्षित हुए, वैराग्य आया। चार घाति कर्म नाश करके केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। वाह! ये सिद्ध भूमि का बहुमान आते ही साष्टांग नमस्कार किए।

प्रश्न :—उपयोग बाहर आता है तो आनन्द घट जाता है?

उत्तर :—निर्विकल्प दशा के समय जो आनंद होता है वैसा तो बाहर आते है तब नहीं होता। आनन्द तो रहता है पर अनुभव के काल में जो तीव्र था वह नहीं रहता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

प्रश्न :—अकेली धारणा हो और आत्म सन्मुखता का पुरुषार्थ हो तो ये दो में क्या अन्तर है?

उत्तर :—दोनों में अन्तर तो ज्ञानी जान सकते हैं अज्ञानी नहीं जान सकते कि ये धारणावाला जीव है, और ये नजदीक का जीव है। ये सब ज्ञानी जान सकते है। अज्ञानी भी तीव्र जिज्ञासु हो तो वो समझ सकता है। तीव्र मुमुक्षु हो तो उसके ज्ञानचक्षु में उसको खबर हो जाती है।

प्रश्न :—पंच परमेष्ठी का स्वरूप, ज्ञान प्रकटने के बाद विशेषता होती है?

उत्तर :—ऐसा सही तो तब ही जानने में आता है, जैसा मुझे मेरी आत्मा का अंश में अनुभव है वैसा ही अनुभव पूर्ण वीतराग देव को है। ऐसा ही सिद्ध भगवान को है। स्वयं के वेदन द्वारा अरिहन्त सिद्ध आचार्य, उपाध्याय और साधु का सच्चे स्वरूप को जान सकता है।

प्रश्न :—अर्थात् ज्ञान में पंच परमेष्ठी दिखते है?

उत्तर :—हाँ! दिखते है उनका स्वरूप दिखता है।

प्रश्न :—उनकी कृपा से होता है?

उत्तर :—उनकी कृपा से नहीं होता है। ज्ञायक की कृपा हो तो हो, स्वयं पुरुषार्थ करे तो ज्ञायक की कृपा होती है।

प्रश्न :—ज्ञानी की कृपा से होता है कि नहीं?

उत्तर :—कोई किसी की कृपा से नहीं होता। स्वयं के पुरुषार्थ से ज्ञायक की कृपा हो तब होता है, ज्ञानी की कृपा कब होती है, स्वयं पात्रता तैयार करे तब ज्ञानी की कृपा होती है। स्वयं पुरुषार्थ करे। जिज्ञासु ही आत्मा की धगशवाला है, लगनी लगी है। वैसा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ज्ञानी के ज्ञान में आए तब ज्ञानी की कृपा होती है। इसलिए सही में ज्ञानी की कृपा हुई तब उसको स्वयं की आत्मा की कृपा हो गई। दोनों की कृपा साथ में ही है।

प्रश्न :—निर्विकल्प दशा होती है तब अकेली पर्याय परिणमित हुई कि पूरे ज्ञायक में परिणमन हुआ?

उत्तर :—पूरा ज्ञायक में परिणमन हुआ। द्रव्य-गुण-पर्याय पूरा अभेद स्वरूप है। जिससे पूरा ज्ञायक परिणमित हुआ है। वेदन में कहीं भी भेद नहीं दिखता है। ये द्रव्य, ये गुण, ये पर्याय ऐसा कोई भेद दिखता नहीं। अनंत गुण और पूरा ज्ञायक का अभेद अनुभव होता है। कहीं भी भेद दिखता ही नहीं है।

प्रश्न :—त्रिकाल और वर्तमान दोनों के बीच में भेद नहीं रहता?

उत्तर :—कोई भेद नही है। पूरा एकाकार अभेद चैतन्य उछलता है।

प्रश्न :—सबसे पहले हमें सुपात्र होने के लिए क्या करना?

उत्तर :—अरिहंत भगवान का बहुमान करना। सर्वज्ञ जिनेश्वर देवका बहुमान करना। अनंत सिद्ध भगवान का बहुमान करना। देव शास्त्र गुरु का बहुमान करना, ये पात्रता है ये बहुमान आत्मा का प्राप्त करवाने के हेतू से करना ये पात्रता है। अरिहंत भगवान और सिद्ध भगवान जैसा ही मैं हूँ। प्रभु ये गुण आपने प्राप्त किए और मुझे प्राप्त करना है इस हेतु से उनका बहुमान करे, ऐसी भक्ति का भाव उठे, आत्मा की जिज्ञासापूर्वक आत्मा को प्राप्त करने के हेतु पूर्वक करे वो सर्व प्रथम पात्र होता है। अरिहंत-सिद्ध का बहुमान तो आना ही चाहिए। पंच परमेष्ठी का बहुमान आना ही चाहिए। धन्य प्रभु! नाथ धन्य तेरा अवतार! तुने जो दशा प्राप्त की ऐसी दशा मुझे भी प्राप्त करनी है। ऐसे भाव से

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूजा करे, भक्ति करे तो हृदय उछल जाए। उसमें उसकी लायकात प्रकट होती है। आत्मा की जिज्ञासा का धागा तो साथ का साथ पिरोना है। उसके बिना की भक्ति और बहुमान मात्र पुण्य बंध का कारण है। आत्मा का लाभ वो आत्मा की लगनी। आत्मा की जिज्ञासा हो तो ही लाभ का कारण है।

प्रश्न :—आत्मा की जिज्ञासा की डोर साथ में हो ये वस्तु फिर अलग? साथ में भक्ति का भाव फिर अलग?

उत्तर :—दोनों भाव अलग है पर साथ में होते हैं।

प्रश्न :—आप बहुत बार कहते हो ना कि चारों कोने से जीव को तैयार रहना ही चाहिए?

उत्तर :—मंद कषाय, श्रीमद् राजचन्द्र में आता है न कि मन्द कषाय, विशाल बुद्धि, साधर्मी के प्रति प्रेम और देवशास्त्र गुरु के प्रति भक्ति, आत्मा की जिज्ञासा पूर्वक होती है। तो चारों तरफ से सुमेल करके वो जीव लायक और पात्र होता है। खाली जिज्ञासा करे और कषाय की तीव्रता होय, साधर्मी के प्रति प्रेम नहीं होता। देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अपार भक्ति भी नहीं होती। तो उसकी जिज्ञासा सच्ची नहीं है। सच्ची जिज्ञासा हो तो साथ में ये सब गुण आ जाते हैं। विशाल बुद्धि आती है, सरलता आती है, साधर्मी वात्सल्य आता है सब आ जाता है। आत्मा को प्राप्त करने की सच्ची जिज्ञासा प्रकट हो तब ये सब साथ में आ जाता है।

प्रश्न :—ये पंथ है तो उसे कौन बताता है?

उत्तर :—जिसने इसे प्राप्त किया है वह बताता है। जिसने प्राप्त किया, जिसको भेदज्ञान होता है, जिसको दिव्य शक्ति प्रगट हुई और स्व-पर का ज्ञान वर्तता है। ज्ञान ज्योति प्रगट हुई है, दूसरे को

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कह सकते हैं। बता सकते हैं कि तुम प्राप्त करो। कर सकते हो, ऐसे ही हो।

प्रश्न :—प्राप्त न हो उसमें ही हम उदास हो जाते है। ये जाति कौन सी होती है जिसमें आत्मा प्राप्त होता ही है?

उत्तर :—आत्मा को प्राप्त करने की लगन ही मार्ग दिखाती है मुझे तो मेरा आत्मा ही देखना है। उसकी लगन, उसकी धगश, उसकी जिज्ञासा, तीव्र पुरुषार्थ, मात्र मोक्ष अभिलाषा से ही मार्ग मिलता है। दूसरी कोई अपेक्षा से नहीं, मात्र आत्म प्राप्ति की ही अपेक्षा, उसमें काम होता है, निस्पृह पुरुषार्थ, कोई पर-पदार्थ की इच्छा नहीं, वांछा नहीं। ऐसा ये जगत से निराला होकर पुरुषार्थ करता है। ज्ञानी तो निराला हो गया है। पर, जिज्ञासु भी ऐसा निराला हो जाता है कि उसको जगत में कहीं रस नहीं आता है।

प्रश्न :—गुरुदेवकी कृपा और शास्त्र अभ्यास से हमने ऐसा जाना कि शुभ-अशुभ से आत्मा अलग है फिर भी भगवान आत्मा का दर्शन नहीं होता है तो फिर क्या करना?

उत्तर :—भगवान आत्मा के दर्शन करने के लिए जितनी किमत भरनी पड़े उतनी किंमत भरे और पुरुषार्थ करे तो आत्मदेव के दर्शन हुए बिना रहे ही नहीं। ऐसा चैतन्य देव है। ऐसी ही स्वयं की शक्ति है। ऐसा ही स्वयं जाज्वल्यमान देव है कि स्वयं इतनी मेहनत करे और चैतन्य जागृत हुए बिना रहे ही नहीं। पर पूरती किमत भरनी चाहिए।

प्रश्न :—किमत भरना अर्थात् कौन सी किमत भरना और किस प्रकार भरना?

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उत्तर :—पुरुषार्थ करके, लगन लगा के। अन्दर में रात और दिन इसका ही रटन रटे। उसकी ही जिज्ञासा रहे, ये ही इसकी किमत है।

प्रश्न :—रात को भी ऐसा रहे दिन को भी ऐसा रहे?

उत्तर :—हाँ रात को उठे तो भी ऐसी ही अभिलाषा कि मुझे तो मेरी आत्मा ही चाहिए। ये मनुष्य भव तो चला जा रहा है और इस मनुष्य भव में ही मेरा आत्मा समझ में आये ऐसा है। ऐसे महापुरुष के प्रताप से मुझे मेरा आत्मा समझ में आया है। इसलिए मुझे मेरा आत्मा ही समझना है। ऐसी रात दिन इच्छा रहे तो ऐसा जीव बहुत नजदीक आ जाता है। इस भवमें प्राप्त कर लेता है, नहीं तो दूसरे भवमें जल्दी प्राप्त कर लेता है। रात में भी जग जाता है, मेरा आत्मा मेरा आत्मा—ऐसी तड़प होती है।

प्रश्न :—अनुभव पहले की मानसिक स्थिति कैसी होती है कि उसके पीछे अनुभव होता ही है?

उत्तर :—उसकी स्थिति ऐसी होती है कि वह चैतन्य आत्मा के सन्मुख वेग से जाता है, उसको स्वयं को भी ख्याल आ जाता है। भरोसा आ जाता है कि मेरा आत्मा थोड़े ही समय में मुझे जवाब देगा। ऐसा स्वयं को अन्दर में विश्वास आ जाता है। दिन रात ऐसा वेग से पुरुषार्थ करता है कि पुरुषार्थ को भी स्वयं के साथ दौड़ने की आदत हो जाती है। आदत हो अर्थात् इसको इसके सिवाय कहीं चैन नहीं पड़ती। अन्य कहीं चैन नहीं पड़ती। आत्मा के विचार में उसको शान्ति मिलती है। ज्ञानी उसको देखकर समझ जाता है कि यह जीव नजदीक का पात्र हो गया है।

प्रश्न :—आत्मा की तरफ का वेग है, वो विकल्प सहित ही है न? उसमें बल किसका?

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उत्तर :—विकल्प पर वजन नहीं। विकल्प के साथ ज्ञान में पुरुषार्थ का वजन है। विकल्प साथ में होता है पर वहाँ वजन नहीं। पुरुषार्थ का जो जोर है वो जोर ही स्वयं की तरफ ले जाता है। विकल्प आए उसका कोई डर नहीं कारण कि विकल्प तो छूट ही जानेवाला है। निर्विकल्प दशा न हो वहाँ तक आये भी। ये तो छूटने ही वाला है।

प्रश्न :—आत्मा को आत्मा से जाना ये भी भेद है, तो अभेद किस प्रकार है?

उत्तर :—कथन की पद्धति में, समझाने की पद्धति में ऐसा आये कि आत्मा को आत्मा से जानो। पर ये अभेद वस्तु है। आत्मा ने–आत्मा के द्वारा आत्मा को जाने, इसके अनुभव में कोई भेद दिखता ही नहीं। कोई भी ज्ञानी को भेद दिखता नहीं। और दिखेगा भी नहीं मात्र समझने की एक रीत है। सब ज्ञानी को एक अभेद आत्मा ही दिखती है। द्रव्य, गुण और पर्याय का स्वरूप समझने के बीच में भेद आता है। अरे द्रव्य–गुण–पर्याय में भेद है भी सही। पर अनुभव में कोई भेद दिखाई नहीं देता। अनन्त गुणों का अभेद अनुभव में कोई भेद नहीं। भेद जानने में आता है सही पर उसको जानने का उसका कोई प्रयोजन नहीं। दृष्टि भेद में रुकती नहीं।

प्रश्न :—जिसने अभेद आत्मा को देखा नहीं, उसने मात्र कल्पना ही करी है कि उसके गुणों की तरफ उपयोग दौड़ाना?

उत्तर :—मात्र कल्पना नहीं करनी पर आत्मार्थी को उसके गुणों की तरफ उपयोग दौड़ाना। ये ज्ञायक आत्मा है। ये जाननेवाली आत्मा है। जो मैं जानता हूँ, समझता हूँ, ये मैं आत्मा हूँ, जाननेवाली मेरी

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सत्ता भूमि है। ऐसा विचार कर उपयोग को ज्ञायक आत्मा की तरफ दौड़ाना। कल्पना नहीं करनी। भेद कल्पना से ज्ञायक हाथ में नहीं आता है। ये द्रव्य है, गुण है, पर्याय है, ज्ञान है, दर्शन है ये जानने के लिए है। अनुभव में भेद नहीं आता। अनुभव के बाद ये जान सकता है। अनुभव के वेदन में भेद कल्पना की जरा भी जरुरत नहीं, अंश मात्र भी जरुरत नहीं। और जो भेद में चढ़ जाय तो अभेद से भी दूर चला जाता है।

प्रश्न :—ज्ञान मात्र अंश है। उससे कल्पना करे कि ऐसा आत्मा हो सकता है? अंश को अंशी तरफ दौड़ाओ तो किस प्रकार से अनुभव होता है?

उत्तर :—स्वयं स्वयं के अस्ति के पकड़ने उपयोग ले जाना ये मुख्य पुरुषार्थ है। ये अस्ति ज्ञान में पकड़ा गई तो बेड़ा पार हो गया। सब हाथ में आ गया। अस्ति पकड़ाई तो पूरा द्रव्य हाथ में आ गया। भेद तो परेशान कर देता है। उसमें जाना नहीं। भेद तो जानने का एक विषय है। अन्दर तो अभेद ही है। तो उसको ही जानना चाहिए न! भेद में रुकने से क्या फायदा है? कुन्दकुन्द आचार्य देव, अमृतचंद्र देव ने भी ऐसा कहा कि अभेद स्वरूप में उपयोग को ले जा। भेद में मत रुक।

प्रश्न :—ज्ञानी जब उपदेश देते हैं तब उनको ज्ञायक अनुभूति और ज्ञायक सब दिखता है? दोनों ख्याल में होता है?

उत्तर :—खयाल में होय, उपदेश देते हों तब शुद्ध परिणति का वेदन होता है। उपदेश के समय अनुभूति होती ही नहीं। अनुभूति का ज्ञान तो रहता है। अनुभूति में क्या क्या था उस सबका ख्याल तो रहता ही है, अनुभूति किस प्रकार की हुई उसका ज्ञान रहा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

हो तो, सब को कह सकता है। अनुभूति तो रहती ही है।

प्रश्न :—ज्ञायक दिखता है सही ?

उत्तर :—प्रत्यक्ष दिखता है। जब ये बोलता है तब वह जानता है कि यह वचन वर्गणा है। और मैं ज्ञायक हूँ। वचन वर्गणा के सामने ज्ञायक खड़ा है। वचन मेरे नहीं। वचन बोलने में आता है वह मैं नहीं हूँ। मैं तो चैतन्य आत्मा हूँ। दो और दो चार जैसा उसके वेदन में रहता है।

प्रश्न :—ये बहुत बड़ी बात हो गई। उपदेश के समय ज्ञायक दिखे तो बहुत बड़ी बात होती है ?

उत्तर :—उपदेश देते समय भी ज्ञायक दिखे। सब तरफ से ख्याल है कि मैं ज्ञायक हूँ। भोजन करते हुए, उपदेश देते हुए भी कहीं तल्लीन नहीं होते। जो तल्लीन हो जाय तो ज्ञानी की दशा ही नहीं रहे। हरएक क्षण ज्ञायक हाजिर है। पर इसको ऐसा विचार करना पड़ता नहीं। ये तो कृत्रिम दशा हो गई। उसे तो सहज दशा हो गई है कि मैं ज्ञायक आत्मा हूँ। साथ में जो विकल्प आने का हो वो आए।

प्रश्न :—ज्ञानी को आत्मा सम्बन्धी शंका और असमाधान कितने अंश रहा ?

उत्तर :—बिल्कुल नहीं, जरा भी नहीं, आत्मा प्रत्यक्षरूप से दिखता है फिर शंका कैसी ? पूरा–पूरा समाधान हो जाता है। जरा भी कठिन नहीं किसी को पूछने नहीं जाना पड़ता। कोई कहे तो कि उसके साथ मेरा क्या सम्बन्ध है ? मेरा अनुभव मुझे प्रत्यक्ष वेदन में आता है। जैसा सिद्ध भगवान का अनुभव जैसा अरिहंत

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

भगवान का अनुभव वैसा ही मेरा अनुभव है। इसमें किसी को पूछना नहीं पड़ता इसमें शंका और संदेह को कोई स्थान नहीं। शंका और संदेह में अनुभव निःशंक हो नहीं सकता। निःशंक अनुभव है।

प्रश्न :—अस्ति को ग्रहण करना इसमें निस्पृह और निखालस पुरुषार्थ होता है। निस्पृह और निखालस पुरुषार्थ अर्थात् कैसा पुरुषार्थ?

उत्तर :—इसमें कोई पर पदार्थ की अपेक्षा नहीं। पर पदार्थ की इच्छा नहीं। आशा नहीं। ममता नहीं। पुरुषार्थ में आत्मा की ही आशा, आत्मा की ही इच्छा, आत्मा की ही अपेक्षा और आत्मा की ही ममता, पर-पदार्थ की भावना ही नहीं, ऐसा करने पर ऐसा होगा ऐसी भावना ही नहीं होती। आत्मा की उत्तम दशा के लिए प्रयत्न करता है। किसी बाहर के फल के लिए नहीं। स्वर्ग में जाने की वृत्ति और इच्छा नहीं। मेरा तो मोक्ष होनेवाला ही है ऐसा नक्की है। बीच में थोड़े भव हैं। पर उसमें मुझे ऐसा मिले, वैसा मिले ऐसी कोई इच्छा ही नहीं। यहाँ से मुझे व अरिहंत–सिद्ध के शरण में मुझे रखे तो मै मेरी पूर्णदशा प्राप्त करूँ। दूसरा कुछ नहीं चाहिए ये निस्पृह दशा है। पंच परमेष्ठी के स्थान में कुदरत रखे और मेरी आराधना पूरी करके मोक्ष पाए ऐसी एक ही भावना है।

प्रश्न :—शुद्ध उपयोग और शुद्ध आत्मा का तो मनोरथ है?

उत्तर :—शुद्ध उपयोग रूप से परिणमू ऐसा मनोरथ होता है। एक–एक गुण खिल जाता है। अनंत गुणों की बहुत मित्रता है। एक खिले तो सब खिल जाय।

प्रश्न :—आखरी तल तक पहुँच जाय! हम ध्यान में बैठेगे तो आत्मा मिलेगा?

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

उत्तर :—एकान्त में बैठकर उपयोग को पलटने का पुरुषार्थ करे तो आत्मा मिले। फिर ज्ञानी हो जाय। अर्थात् भेदज्ञानी हो गया, फिर वो प्रवृत्ति में हो तो इसको कोई नुकसान नहीं। उसकी अलग बात है। उसकी ज्ञायक धारा चालू की चालू ही रहती है। क्षण में ये तो ध्यान में लीन होकर निर्विकल्प हो जाता है।

प्रश्न :—ज्ञान और राग अलग है ऐसा रटन किया करें तो आत्मा मिले ?

उत्तर :—ज्ञान और राग अलग है ऐसी धारणा अलग चीज है और ज्ञान और राग को अन्दर वेदन से अलग करना ये अलग बात है। धारणा से नहीं अन्दर परिणति से राग को अलग करो। ये बहुत लाभ का कारण है ये ही करना है।

प्रश्न :—प्रथम भूमिका में तो शास्त्राभ्यास ही मुख्य होना चाहिए ?

उत्तर :—शास्त्र अभ्यास हित रूप है। पर शास्त्र अभ्यास में भी स्वयं के आत्मा में भी उपयोग अन्दर कैसे जाय ऐसे शास्त्रों का अभ्यास ज्यादा हितरूप है।भगवान के शास्त्र में भी उपयोग कैसे अंदर जाये, ऐसी बात समझकर स्वयं को वैसा परिणमन होय वो हित का कारण है। जो शास्त्र ही पढ़ा करे और अभेद का अनुभव नहीं करता हो उसको कहते है कि भाई तू एकांत में बैठकर पुरुषार्थ कर। जो शास्त्र को पढ़कर इसमें से भेद–ज्ञान का अनुभव करे उसको लाभ का कारण होगा। ऐसा शास्त्र पढ़ना ऐसा विचार करना ऐसा कोई नियम नहीं। स्वयं को जो हितरूप हो वैसा विचार करे, वैसा होना चाहिए।

प्रश्न :—समाधिमरण किसको कहते है ? कैसे भाव होते हैं ?

उत्तर :—उसको भेदज्ञान धारा निरन्तर वर्तती है। शुद्धोपयोग बारम्बार

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्मा की तरफ जाता हो, शुद्धोपयोग में लीन हो। बाहर का कोई ध्यान न हो। ऐसे शुद्धोपयोग की लीनता में देह छोड़े उसे समाधिमरण कहते हैं।

प्रश्न :—ये तो ज्ञानी की बात हुई। पर सम्यक् सन्मुख हो ऐसे जीव के कैसे परिणाम होते है? मरण के समय उसको क्या करना?

उत्तर :—ऐसे जीवों को भी आत्मा के सन्मुखता का प्रयत्न करते रहना। बारम्बार आत्मा की सन्मुख होने का ही पुरुषार्थ करते रहना। इसमें तुझे इस भव में न हो तो दूसरे भव में लाभ होता है।

卐 卐 卐

हे कृपालु कहान गुरुदेव! ये आत्मा की योग्यता ही ऐसी थी कि ज्ञानी के बहुत निकट समागम होने पर चैतन्य प्रभु तीव्रता से जागे और परम तत्त्व को प्राप्त करे। वो सर्व सुयोग्य प्रभु! आपके प्रतापसे हुआ। आपकी महिमा कोई अद्‌भुत–अपार है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ब्रह्मचर्य के बारे में दोनों बहनों का सम्बोधन

एक ब्रह्मचर्य की रक्षा से अनन्त गुण की रक्षा होती है। एक ब्रह्मचर्य के पालन से अनन्त गुण खिल उठते है, शोभायमान होते है।

पात्र बिना वस्तु नहीं रहती, पात्रता आत्मिक ज्ञान;
पात्र होने के लिए सेवो सदा ब्रह्मचर्यमतिमान.

श्रीमद् राजचंद्रजी

जिस प्रकार वस्तु पात्रता के आधार पर टिकती है, वैसे ब्रह्मचर्य सब गुणों को पात्र है।

जो ब्रह्मचर्य का रंगीला हो उसको सहजपने पांचों इन्द्रियों के विभाव से विरक्तता और स्वभाव की एकाग्रता होती है।

जो ब्रह्मचर्य का रंगीला हो उसको आत्मार्थता प्रगट होती है। एक ब्रह्मचर्य की रक्षा से सब गुण शुद्धता को प्राप्त होते हैं।

सती एक शील से ही शोभा को प्राप्त होती है, और आत्मा को प्राप्त होती है।

जिस प्रकार सोना कसौटी से शुद्ध होता है, वैसे सतिओं की कसौटी से आत्मा विशुद्ध होता है।

एक ब्रह्मचर्य की रक्षा से पूरा आत्मा शौच (पवित्र) है।

जैन शासन ही शौच (पवित्र) है। और आत्मा पवित्र और शौच है।

सब गुणों का पात्र ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य के रंग के बिना सब में शिथिलता आ जाती है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जो निरभिमानपने ब्रह्मचर्य के रंग में रंगा हुआ है उसके अन्तर में पवित्रता प्रकट होती है। एक ब्रह्मचर्य के रंग से बुद्धि शास्त्र के अर्थ निकाल देती है। और थोड़ा पढ़ने से ज्यादा समझ में आता है। बुद्धि विशदता को प्राप्त होती है।

जिसको ब्रह्मचर्य का रंग नहीं उसके सब गुण लूले और पंगु हो जाते हैं।

एक शरीर से ही ब्रह्मचर्य पाले वो ब्रह्मचर्य नहीं परन्तु मन–वचन–काया से नौ–नौ कोटि से पालन करने के साथ साथ चैतन्य की आराधना होनी चाहिए। आत्मार्थता होनी चाहिए।

जिसको ब्रह्मचर्य में मैं ब्रह्मचारी हूँ—ऐसा अहमूपना आता है। उसमें क्रोध, मान–माया प्रकट होती है।

ब्रह्मचर्य मूलगुण है, उससे चैतन्य की रुचि बढ़ती है। ब्रह्मचर्य का रंग न हो उसको भोजन में लोलुपता होती है। पाँचों इन्द्रियों में लोलुपता बढ़ती है।

सती सीता, अंजना आदि सतियाँ एक ब्रह्मचर्य के रंग से शोभती थीं। सती शिरोमणी कहलाती थीं। ब्रह्मचर्य में जिसका चित्त रंगा हुआ है, उसका पुरुषार्थ देव–शास्त्र–गुरु के प्रति उत्साह होता है। ध्यान–स्वाध्याय–मनन विचार में चित्त एकाग्र रहता है। साधर्मी के प्रति प्रेम रहता है।

ब्रह्मचर्य तो निडरपने रहता है। और निःशंकपने घूमता है। शास्त्रजी में तो हरेक जगह, ठिकाने ठिकाने ब्रह्मचर्य की बात आती है।

ब्रह्मचर्य का रंगीला जीवन कोई अलग ही तरह का होता है। ब्रह्मचर्य के जीवन में नम्र–नम्र ही हो जाता है। उसकी वाणी मीठी और

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

गम्भीर होती है। और सर्वांग जो ब्रह्मचर्य में रंगा हुआ होता है, उसकी मुद्रा ही कुछ अलग प्रकार की दिखाई देती है। जिस प्रकार पक्षी को उड़ने के लिए जमीन कठोर होती है तो एकदम उड़ सकता है। उसी प्रकार ब्रह्मचर्यरूपी जमीन मजबूत हो तो इसके ज्ञान-दर्शन स्फुरायमान हो जाते हैं।

जो ब्रह्मचर्य को नव वाड़ सहित पालता है इसका आत्मा निर्मल होता है। उसके विचार उच्च कोटि के होते हैं, ऐसा जीवन आत्मा को शीघ्र प्राप्त करता है।

अरे! नीति में भी स्त्री पतिव्रता ब्रह्मचर्य से रहे तो शोभा प्राप्त करती है। तो ये लोकोत्तर मार्ग है। इसमें कितना रंग होना चाहिए। अरे! ये बात तो जिसने ब्रह्मचर्य का नियम लिया है उसके लिए ही नहीं परन्तु जो जिज्ञासु जीव है, जो आत्मा के दोष निकालना और गुण प्रकट करना चाहता है उन सब के लिए यह बात है।

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य व्रत आत्मा की निवृत्ति के लिए अंगीकार किया है, इसलिए स्वयं संसार के कार्य से निवृत्त होकर आत्मा की साधक दशा के लिए ब्रह्मचर्य व्रत लेना। व्यवहार से मन-वचन-काया से ब्रह्मचर्य पालने की भावना रखनी। ब्रह्म स्वरूप आत्मा में आचरण करना यानी कि आत्मा में लीन होना, कोई प्रकार के राग के विकल्प न आए वो ध्यान रखना। और आत्मार्थता की मुख्यता रखनी। मुझे मेरे आत्मा की प्राप्ति करनी है, इस हेतु से मैंने निवृत्ति ली है मुझे तो मेरा कार्य सिद्ध करना है। इसीका वाँचन करना, विचार करना। में आत्मा ज्ञान स्वरूप हूँ, ज्ञान का पिण्ड हूँ, मैं ज्ञान का अवतार हूँ। मैं ज्ञायक स्वरूपी हूँ-इसप्रकार आत्मा का बारम्बार विचार करना। ये शरीर तो जड़ है वाणी भी जड़ है। मन-वचन-

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

काया में कहीं आत्मा नहीं। मैं ज्ञान ही हूँ। ऐसा विचार बारम्बार करना। आत्मा का अस्तित्व ज्ञान चक्षु से ही दिखता है। मुझे मेरे चैतन्य का अस्तित्व ज्ञान चक्षु में ग्रहण करना है। उसके उपर जोर रखना, कि चैतन्य स्वयं एक वस्तु है, वो विद्यमान है। इसलिए उसको ग्रहण करना। – मैं चैतन्य जाननेवाला हूँ। ज्ञान में अस्तित्व ग्रहण करने के लिए शास्त्र में पढ़कर विचार करना, इसकी लगनी लगानी, इसका पुरुषार्थ कर उसका अस्तित्व ग्रहण करना अस्तित्व से पकड़ा जाय तो काम हो जाय। किस प्रकार स्थिरता करनी, लीनता कैसे करनी सब आ जाता है।

तुम सब ब्रह्मचारी बहनों अपना जीवन उस तरीके से रखना कि कोई भी प्रकार का कोई अपना नाम ले सके नहीं। पुरुषों के साथ वार्तालाप नहीं करना, तथा उनके सामने नहीं बैठना ब्रह्मचर्य की अखण्डपने रक्षा होनी चाहिए।

ब्रह्मचारी बहनों को मन–वचन–काय से रक्षा रहे उसमें अपने माता–पिता और अपने गुरु के शासन शोभे—इस तरीके से जीवन बिताना चाहिए।

श्री पंच परम परमेष्ठी का स्मरण जीवनभर भूलना नहीं। ब्रह्मचर्य अखण्ड तरीके से पालन कर भी देव शास्त्र गुरु की यथार्थ रुचि बढ़ानी।

पूज्य गुरुदेव के वचनों को बारम्बार याद करना। श्री देव–शास्त्र–गुरु की शोभा बढ़ानी।

ब्रह्मचर्य में कोई भी विघ्न आए तो उसे अखण्ड तरीके से पालन करना। जरा भी डिगना नहीं उसका सामना करना।

एकांत में तथा एकांत जंगल में अथवा कोई भी जगह एक–दूसरे के साथ बिना जाना नहीं। कोई भी भाइयों के साथ खड़े नहीं रहना।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

रस्ते में सगे भाई के साथ भी खड़े रहकर बात करना नहीं, क्योंकि कि दूसरे लोगों को तुम्हारे भाई-बहन का सम्बन्ध मालूम नहीं होता।

ट्रेन में या बस में पुरुषों के साथ बैठना नहीं पुरुष के आसन पर बैठना नहीं। जीवनभर ब्रह्मचर्य अखण्ड रहे उसका पालन बराबर करना।

ब्रह्मचर्य व्रत त्याग–वैराग्य से मंदकषाय रूप तथा व्रत-तप-नियमरूप आभूषण से शोभा पाता है। इसलिए व्रत–तप के परिणाम रखना।

ज्ञायक के सामने नजर करो तो ज्ञायक देव स्वयं साक्षात् स्वयं दिखता है। ज्ञायक देव का स्वरूप गुरुदेव अपूर्व तरीके से बता गए हैं। वो मार्ग पर अपन चलें और सिद्धपद को तुरंत प्राप्त करें।

ऐसे युगप्रधान पुरुष गुरुदेवश्री को बारम्बार नमस्कार हो, जयवन्त हो कहान गुरुदेव और उनकी वाणी जयवन्त हो।

सबको अपनी–अपनी आराधना बढ़ाने जैसी है। अशरीरी दशा प्राप्त हो! सर्वथा शरीर रहित हो जाये तब ही धन्य है। अशरीरी दशा तो चौथे गुणस्थान से ही प्रगट होने लगती है। शरीर मिलना सुलभ है। अनन्त अनन्त शरीर मिले हैं परन्तु अशरीरी होना दुर्लभ है। शरीर के साथ सम्बन्ध छोड़ने से ही छुटकारा है तब ही सुखी हो सकते है।

प्रश्न :—शरीर के प्रति सम्बन्ध कैसे छोड़ना?

उत्तर :—शरीर के साथ सम्बन्ध में कोई सुख नहीं, उससे उपेक्षित हो जाय और स्वयं के स्वरूप में लीन हो जाय, तो शरीर का सम्बन्ध छूटता है। उसके सामने देखा करेगा तो सम्बन्ध नहीं छूटेगा। अनन्तानंत शरीर धारण किए अब इससे थकान लगना चाहिए। उसके प्रति राग हटा लेना।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ये चैतन्य स्वरूप आनन्द स्वरूप है। उसमें ही राग करने जैसा है। ये शरीर में क्या राग करने जैसा है? ये शरीर में परम वीतराग भाव प्रकट करने जैसा है। ऐसा सब विचार करके भावना बढ़ाता है। शुद्ध भाव में वृद्धि करता है। आत्मा के चैतन्य सन्मुखता में वृद्धि करता है। पर सन्मुख से विमुख होता है। ऐसा विचार करके परिणाम में एकदम वैराग्य आता है। शरीर से वापस फिर जा।

आत्मा के सन्मुख और शरीर से विमुख हो जा। कितने जन्म–मरण किए, कितने परिभ्रमण किए। कैसी–कैसी जगह उत्पन्न हुआ। फिर भी जीव ने वैराग्य धारण नहीं किया। वीतरागता प्राप्त नहीं की। उसको निरखा नहीं। अनन्त काल से ये शरीर को अपना माना इसलिए कितने कितने शरीर धारण किए। और राग के कारण शरीर धारण होते है। अब तो बस होओ। इस चैतन्य चिन्तामणि की सम्भाल करके आत्मा के आनन्द में लीन हो जाऊँ बस! उसमें लीन होने से ये शरीर नहीं मिले। चैतन्य ज्ञायकमें साम्यभाव हो, इसलिए पर से उदासीनता आती है। साम्यभाव में प्रीति हो इसलिए इसको वैराग्य होता है। संवेग–निर्वेद आदि की भावना करने जैसी है।

संवेग : सम्यक् प्रकार से वेग वो संवेग है।

संसार भ्रमण का भय और मोक्षमार्ग का उत्साह ऐसे संवेग–जनित परिणाम के द्वारा प्रगट हुई निःशल्य और मेरु पर्वत के समान निष्कंप ऐसी दृढ़ जिन भक्ति जिसको है।

निर्वेद : शरीर के प्रति उपेक्षा करनी। और वैराग्य लाने की भावना रत्नत्रय में वृद्धि करनी। हर्ष–मोक्षमार्ग में उत्साह, वीतराग भाव की वृद्धि करनी, मुनिराज के समान मौन रहना। मौन रहने से उपयोग की स्थिरता कर सकते है। ''वचन बोलने में उपयोग का खण्डन हो जाता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

है।'' मुनिराज को मुख्य रूप से मौन होता है। 'एकान्त सुखी मुनि वीतरागी'

मौन रहने से कितनी स्थिरता रहती है कि उसके ढाल पर स्वरूप में लीन होकर श्रेणी प्रारंभ कर, चढ़कर केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है।

मुझे मेरे दुःख को शान्त करने के लिए मेरे में प्रीति करनी। किसी के सामने देखने से राग–द्वेष का कारण होता है इसलिए मुझे तो मेरे सामने देखने से वीतरागता प्रगट होती है। मैंने एकत्व की भावना भाई नहीं, इसलिए अनन्त काल से परिभ्रमण होता है। मात्र स्वरूप का चिन्तन परम कल्याणकारी होता है। सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र प्राप्त करके वीतराग धर्म को प्राप्त होता है। कर्म के सामने हठ करके ही जीत प्राप्त करनी है। उसमें धीरज रखने की मर्यादा नहीं होती। धीरज तेरा स्वभाव है। स्वभाव की क्या मर्यादा? राग–द्वेष, कहाँ तक करना उसकी मर्यादा है। राग–द्वेष बहुत किए अब नहीं करना। धैर्य तेरा गुण है। उसकी कोई मर्यादा नहीं। तेरा स्वभाव प्राप्त करे तो अविनाशी पद को प्राप्त करेंगे। तो सादि अनन्त के लिए धीरज प्रकट हो। तेरा स्वभाव शांति और धीरज रखना वो ही आत्मिक सुख है। निराकुलता की भावना हमेशा रखनी। ध्यान स्वयं की आत्मा का ही करना। ये शरीर तो उपाधि करने वाला है। शरीर का नाश होने पर मेरा नाश होता नहीं। इसके लिए देह की ममता त्यागनी।

हे आत्मन! मेरे चैतन्य को उज्ज्वल करना है, जिसको आत्मा की लगन लगी है उसको सुगम है।

जब तक पूर्ण मोक्ष नहीं होता वहाँ तक श्री देव–शास्त्र–गुरु का शरण हो। गुरु की नजदीक जाय तो आत्मा की आराधना होती है। उनकी भक्ति मेरे हृदय में होती रहे।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

किसी भी प्रतिकूल संयोग में आत्मा समता रख सकता है। तो समता आत्मा का मूल ज्ञायक स्वभाव है। अनुकूलता के संयोग में भी प्रतिकूलता लानी, और ये समय भी समता शान्ति कैसी रहे उसका पुरुषार्थ आत्मसन्मुख करना। पूज्य गुरुदेव ने कहे सूत्र का चिन्तवन करना, मनन करना–बारम्बार मनन करना वो ही ये मनुष्य जन्म में आत्मा के लिए हितरूप है। इसके लिए बारम्बार चिन्तवन मनन करना योग्य है।

वैराग्य प्रेरक प्रसंग में प्रेरणा

जीव ने ये अनित्य शरीर धारण किया है उसका त्याग तो होना ही है, परन्तु चैतन्य आत्मा की आराधना पूर्वक देह छूटे तो ये मनुष्य भव की सफलता है।

ऐसे प्रसंग से सभी को आत्म प्राप्ति करने की रुचि बढ़ाने योग्य है। आत्म प्राप्ति हो और पूर्णदशा को प्राप्त करके आत्मा शरीर रहित दशा को प्राप्त करे। और अविनाशी आनन्द को भोगे वो ही ये मनुष्य भव में करना है।

साक्षात् शुद्धात्मा प्राप्त हो, केवलज्ञान हो, इसलिए जैसा ज्ञान में जाना, श्रद्धा में श्रद्धेय किया, वैसा ही आचरण किया। वैसे ही साक्षात् प्रगट हुआ। ऐसी साक्षात् चेतना। जो साध्य लक्ष्य में लिया है, वो साक्षात् पूर्ण न हो वहाँ तक व्यवहार भी प्रयोजनवान है, ऐसा स्याद्वादरूप गुरु का उपदेश है।

सुप्रभात

निर्विकल्प स्वभाव, ही सच्चा सुप्रभात है और केवलज्ञान पूर्ण सुप्रभात है। प्रभु! हमारा ऐसा सूर्य उगे कि जो फिरसे अस्त ही न हो। सम्यग्दर्शन आंशिक सुप्रभात है, और केवलज्ञान पूर्ण सुप्रभात है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

सत्समागम

तुझे तेरे जीवन की रक्षा करनी हो तो विवेकी पुरुष के समागम में रहना, उसका ही सत्‌समागम करने योग्य है।

सच्चे साधर्मी के संग में रह कर तेरी रुचि कर। वैसा निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध है। श्रद्धा बराबर करना, मुझसे नहीं हो सकता—ऐसा नहीं कहना। विभाव के गुण तेरे नष्ट हो गये, स्वभाव की तरफ मुड़ना और सच्ची पात्रता प्रगट होने पर स्वभाव सन्मुख होना।

दुष्ट परिणाम की संगति नहीं करना रागी-द्वेषी जीव की संगति कभी नहीं करना, आचार्यदेव तो कहते हैं कि तू भूल से भी उसकी संगति मत करना। जो सिद्धि करने तू निकला है, वहाँ तू मोह को छोड़ दे, तो ही तेरी सिद्धि होगी। जिस ध्येय को पकड़ने का निश्चय किया उस ध्येय को तू बराबर पकड़ कर आत्म सन्मुख होकर सम्यक् अनुभव कर। आत्मा की पुष्टि में ही ज्ञान और ध्यान है।

जिस प्रकार तीर्थंकर भगवान मोक्ष गए हैं उसी प्रकार तू भी जा और चारों गति का भ्रमण छोड़। नरक के दुःख सुन नहीं सकते तो फिर भोग कैसे सकते हैं? अब ऐसे कारण खड़े कर कि जिससे ज्ञान दर्शन प्रगट हो–ऐसा कार्य आएगा। इष्ट में से अनिष्ट कार्य खड़े होते है, तो ऐसे कार्य किसलिए करता है? स्वतन्त्रपने आत्मा का ऐसा कार्य कर कि तुझे अवश्य मोक्ष मिले, इसलिए दुःख के कार्य मत कर।

वास्तविक तरीके से जो भगवानको स्वीकारा हो तो शुद्धात्मा के कारण खड़े होते है और निर्वाण की तैयारी होती है। जैसी भावना भावो वैसी ही फलीभूत होती है।

जो मनुष्य जीवन में आत्मा को न प्राप्त कर सके तो उसने आत्मा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

को ठगा है। महा महंगे काल में महादुर्लभ मनुष्य जीवन मिला है और ये आत्मा को प्राप्त न करे तो आत्मा को ठगता है लूट लेता है। जो आत्मा को प्राप्त करना था वह नहीं किया। उससे तू दूषित है। एकेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय से मनुष्य भव पाया वो महा दुर्लभ है। उत्तम कुटुम्बीजन मिलना वो भी महा दुर्लभ है। उसमें सत्यधर्म श्रवण करानेवाले गुरु मिलना ये भी महा दुर्लभ है। धर्म श्रवण तो मिला परन्तु धर्म धारण करना वो महादुर्लभ है, धर्म श्रवण और गुरु श्रवण से धर्म धारण होता है।

तू तेरी गरज कर और चैतन्य की पहचान कर। चिन्तामणि आत्मा प्रगट कर। मनुष्यपने में से केवलज्ञान मोक्ष मिलता है।

हे प्रभु! अनन्तकाल से अपनी भेंट हुई नहीं अब आप जैसे प्रभु मिले फिर आपको कैसे अब छोडूं? नहीं छोडूंगा।

संसार का संगम छोड़ के अब मोक्ष का संगम कर,

चैतन्य की भावना कभी भी निष्फल होती नहीं।

हे भव्य! तु शुद्ध आत्मारूपी हंस का चारा चर, शिव संगम आत्मा का ध्यान कर और उसका चारा चर, अच्छे में अच्छा आत्मा का परिचय कर, ये एक ही उपाय है।

जो मनुष्य जन्म की कीमत नहीं की तो यह राख हो जायेगा। मनुष्य जन्म ऊँचा है। मनुष्य जन्म में शुद्धात्मा की प्राप्ति कर। ये ही मनुष्य जन्म का सार है, दूसरा भव अब न मिले वैसा बीज बो दे।

शुद्धात्मा की साधना करनी वो ही सच्चे में सच्चा जीवन है, वो पवित्र आत्मा की ही आराधना करनी चाहिए।

शुद्धात्मा में ऐसा गुण है कि वो केवलज्ञान प्राप्त करेगा। वो ही करने जैसा है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

तु स्वयं ही जाज्वल्यमान ज्ञान स्वरूपी शुद्ध स्वरूपी ज्योति है। जैसे आत्मा में निर्मल औषधि डाले तो निर्मल पवित्र भगवान आत्मा बराबर अनुभव में आता है।

शरीर पर से एकत्वपने की ममता छोड़ तो आत्मा की महिमा जरूर आयेगी।

ये शरीर तो दुःख का विधाता है, दुःख का पिण्ड है, अशुचि का पिण्ड है, और पाप का पिण्ड है, इसलिए ऐसा कर कि शरीर रहित दशा प्राप्त करने के लिए तु ऐसे शरीर को छोड़। ये देह भी व्यवहार में है। शरीर का स्वभाव विपरीत है। अशुचि है, देह पापरूप है। तीन लोक के पाप से भरा हुआ ढेर ये शरीर है।

चिदानन्द चिद्रूप आत्मा देह से अत्यन्त भिन्न है। आत्मा महा परम पवित्र है। आत्मा महा परम शुचि रूप है। देह में विराजमान भगवान आत्मा अत्यन्त भिन्न है। ये शरीर में आनन्द मानना वो तो शरमाने की बात है, वो दुर्गंधमय है। ये सब विकल्प छोड़ दो और आत्मा की वीतरागता की भावना भाने जैसी है।

आत्मा का स्वभाव स्वसंवेदनमय है, इसलिए आत्मा में संतोष कर। स्वसंवेदन में आत्मा प्रत्यक्ष दिखता है। आत्मा की प्राप्ति के लिए चित्त को स्थिर कर।

वीतरागी संतों मुनिओं को देखते ही मैं समरस भाव से मन–वचन–काय से सभी प्रकार से वन्दन करता हूँ। ऐसे निर्ग्रन्थ के प्रति बारम्बार नमस्कार करता हूँ। सुख अमृत रस का स्वाद–अतीन्द्रिय आनन्द रस जिसने चखा है। उनका खुराक वो ही है, और सुधा अमृत रस में मेरी पुष्टि है। ऐसी गुप्ति को धारण करने वाले समाधिस्वरूप को बलिहारी है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

''तप की शोभा आत्मज्ञान पूर्वक ही होती है।''

ज्ञानी को जब कर्म का उदय तीव्र आता है, तब शान्ति रखकर और चित्त को शान्त रखना ये उसका उपाय है।

उदय में आए कर्म पर समभाव रखता हूँ। जिससे कर्म का क्षय होता है। कर्म के उदय में आने पर समभावनापूर्वक वृद्धि करता है। जिससे कर्म खिपाता है, उदय में जो कर्म आते हैं वे भोगना ही पड़ते हैं। परन्तु उसमें राग द्वेष नहीं करते और पुरुषार्थ में वृद्धि करते हैं। उग्र तपश्चर्या करते है। और निर्विकल्प ध्यान की भावना भाते हैं।

ये जगत में ऊँचे में उँचा ''ज्ञान'' ही प्रधान है। 'ज्ञान'का स्वभाव ही शाश्वत है। ज्ञान कभी भी चैतन्य का साथ छोड़ता नहीं साथ ही में रहता है।

ये जगत में जाननेवाला श्रेष्ठ पदार्थ आत्मा है वो आत्मा सच्चा जिनवर का दास सम्यग्दर्शन के बिना हो सकता नहीं।

श्री वीतराग जिनेन्द्रदेव के प्रति जिसके भक्ति के भाव होते हैं उनके पुण्य भी अलौकिक बंधते है। वीतराग के प्रति भाव अलौकिक तो उसके पुण्य भी अलौकिक।

हे मृग! तेरी सुवास से हुए वन चकचूर,
कस्तूरी तुझ पास है क्या ढूँढत है दूर।

हे मृग! ये तेरी सुवास की कस्तूरी तेरे पास है, इसे बाह्य में कहाँ ढूँढने जाता है। तू दूर-दूर ढूँढ रहा है।

वैसे भगवान आत्मा आनन्द का दल स्वयं के पास है। आनन्द लेने बाहर फिरता है, परन्तु भाई आनंद तो तेरे पास ही है। वो आनन्द तेरे में से ही आ रहा है। प्राप्त की प्राप्ति होती है। बाहर से आनन्द

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आता नहीं। आनन्द का दल तू स्वयं है। ये दल का आनन्द लेने जैसा है। मुनिराज को जब उपसर्ग परिषह आता है, तब मुनिराज तो शान्ति और समता के सागर हैं। मेरे से सहन नहीं होता ऐसे भाव नहीं आते। शान्ति समता से उपसर्ग सहन करते हैं। पांडव महा मुनिराज शत्रुंजय पहाड़ पर आत्मा में लीन थे, तब दुर्योधन के भानजे ने लोहे के गहने पहनाये तब शान्ति-शान्ति कितनी समता। उसमें तीन मुनिराज तो केवलज्ञान को प्राप्त हो गए। शान्तिरूपी बर्फ के ढेर में लीन हो गए। शान्ति पर दृष्टि रखी हो अप्रतिहत धारा में लीन हो गए। जो दृष्टि अब वापिस नहीं घूमे। और क्षपक श्रेणी मांडकर केवलज्ञान लिया। दो पांडवो को जरा विकल्प आ गया कि गुरुराज को क्या होता होगा? इतना ही विकल्प दोनों को आते ही सर्वार्थ सिद्धि का बंध हो गया। उनको सहन होता नहीं ऐसा भाव नहीं था, परन्तु प्रशस्त राग आया वहां देह छूट गया, सर्वार्थ सिद्धि में गए। तीन मुनिराज अप्रतिहत धारा से चढ़े तो ऐसे-चढ़े कि फिर कभी संसार में नहीं आए। तुरंत केवलज्ञान पाकर के सिद्ध पद को पाया, शाश्वत आनन्द, शाश्वत सुख को प्राप्त हो गए।

अब मुझसे सहन नहीं होता—ऐसे बोलने के जो भाव आते हैं वो भाव कलंक रूप हैं। तू तो तेरे गुण को दोष लगाता है। ये तेरा गुण तो अमाप है, क्षमारूप अमर्यादित है। तू तेरे गुण को कलंक लगाता है।

शरीर में वेदना हो वहाँ कहे अरे भाई! शान्ति रखो तब कहे कि बहुत शान्ति रखी, अब नहीं रहती। भाई तेरी शान्ति अमर्यादित है। तू शांति का पिण्ड है, शान्ति का सागर है, बरफ का ढेर है।

श्री सीमंधर भगवान के पुण्य प्रताप से पग-पग पर पूरे सौराष्ट्र में देश-विदेश में भी श्री जिनेन्द्र देव पधारे। गुरुदेव के परम प्रताप से गाँव गाँव में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा हुई, गुरुदेव ने जिनेश्वर का स्वरूप

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

समझाया। जिनेन्द्रदेव का माहात्म्य समझा इससे जो कोई थोड़ी बहुत भक्ति अपने हृदय में आयी, ऐसी भक्तिपूर्वक श्री जिनेन्द्र भगवान के चरणों में जल्दी–जल्दी जाएं और दिव्य वाणी सुने ऐसी भावना भाते हैं। सीमंधर भगवान का बहुत प्रताप है। अपने यथा शक्ति पूर्वक भक्ति करते हैं उसका फल हमको प्राप्त हो।

सबके परिणाम में अन्तराय का नाश हों, एक मात्र आत्मा का काम करना। दूसरे सब से क्या प्रयोजन है?

ज्ञायक का अस्तित्व पकड़ाया इसलिए ज्ञायक ही पूरा का पूरा ख्याल में आये न! फिर राग मेरे में नहीं ये तो अपने आप भिन्न ही हो जाता है। ''ज्ञायक'' पकड़ाया अर्थात् उसमें वृद्धि के लिए बारम्बार उपयोग को ज्ञायक में जोड़ने के लिए पुरुषार्थ बहुत करने का है।

सविकल्प में ज्ञायक बराबर पकड़ाता है, भले निर्विकल्प अनुभूति न हुई हो, तो भी ज्ञायक का अस्तित्व बराबर पकड़ाता है। उसके बाद अन्दर में लीन होने के लिए बारम्बार उपयोग को ज्ञायक में लीन करने का प्रयत्न करे। एकदम साक्षात् स्वरूप आत्मा के अनुभव का वेदन हो जाता है। ज्ञायक देव ख्याल में आया वो ही वेदन है। वो ही निर्विकल्प अनुभूति है।

ज्ञान में सत्तागुण को ग्रहण करने जैसा है। वहाँ पूरी दशा बदल जाती है। बाद का चिन्तवन उसके सामने देखकर होता है। अज्ञानरूपी अंधकार था वो ज्ञान प्रकाश के द्वारा दूर होता है। ज्ञायक का प्रकाश प्राप्त हुआ।

''जीवन'' की दिशा–चैतन्य की दिशा ही बदल गई, तब पहले स्वरूप जैसा था ही नहीं। पर रूप ही था। ये तो ''स्व'' सहित ही सब हो गया। जब तक वीतरागी न हो तब तक केवलज्ञान न हो, अकषाय भाव न हो वहाँ तक वीतरागता नहीं होती।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अनुभव प्रकाश में अनुभव का रहस्य बहुत ही अच्छा आया है, जैसे है वैसे ही व्याख्या बहुत ही अच्छी आयी है।

''अनेक संत समाधि धरि–धरि पार भयो है'' ये शब्द सुनते अनुभविओं को प्रशस्त उल्लास आ जाता है, उस उपयोग का वर्तन अनुभव तरफ से विशेष करके परिणमने लगता है। उसमें कई बार उपयोग बिल्कुल निर्विकल्प उपयोग रूप से परिणमता है। और कोई समय सविकल्प स्थिरता विशेष होती हैं। जो कि अनुभवी आत्मा की सहज स्थिति ही ये प्रकार की होती है। इसके बाद भी ऐसे ग्रन्थ कितनी बार विशेष लाभ का कारण बन आते हैं। सम्पूर्ण समाधिस्थ परिणामी आत्मा को धन्य है एवं सर्वसंग परित्याग स्वरूप महा समाधिस्थ हुए आत्माओं को भी बारम्बार धन्य है।

पढ़ना विचारना चलते चलते ज्ञाता परिणति सहज होने से आत्मध्यान अपने आप होता है। ज्ञाता का स्वभाव होने से पुरुषार्थ धारा जिस प्रकार होती है उस प्रकार वो हुआ करती है और ज्ञाता धारा सहज खड़ी होती है। वहाँ उस प्रकार का पुरुषार्थ भी होता है। उसके द्वारा ज्ञान ध्यानकी श्रेणी के द्वारा बारम्बार स्वयं के स्वरूप का अनुभव करते करते आगे जाता है। इस प्रकार आगे जाते जाते ज्ञाता अखण्ड उछलकर उस स्वरूप को पूर्णता से अनुभवे वो 'दिवस धन्य होगा' कृतार्थ होगा।

धन्य है वो महात्मा जो सर्वांश रूप से ज्ञाता के उफान का वेदन कर रहे हैं। अनुभव कर रहे है। सर्व लोकालोक के भाव ज्ञानमें झलकते होने पर भी स्वयं के निज भाव के सर्वांश अखण्ड एक स्वरूपका वेदनकर आनन्द ले रहे हैं। उन महात्माओं को बारम्बार धन्यवाद नमस्कार हो। स्वरूप के सर्व अंश सुख दाता हैं। कार्माण अंश बिल्कुल सुखदाता नहीं है।

ये स्वरूप अनुभवी आत्माओं को ही यथा प्रकार से समझमें आता

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

है। श्री सद्गुरु के प्रताप से ज्ञान पूर्ण होता है, यही बारम्बार भावना है। निरूपाधि की इच्छा करनेवाले को निरूपाधि ही मिलती है। वस्तु का जो स्वभाव जिस प्रकार हैं वैसे ही वो स्वभाव के वेदन को चाहता है। अर्थात् स्वभाव तरफ जाय तो वो स्वभावमय परिणाम जाता है। ये बात निःसंशय निःशंक है। पर संयोग से जो छूटना चाहता है, वो छूटता है, और जो बंधा रहना चाहता है वो बंधता है, ये बात सर्व ज्ञानियों की सर्वथा प्रकार सत्य है, सही में सत्य है। अनंत शक्तिवान चैतन्य देव जागे फिर जड़ की कितनी शक्ति होती है।

धन्य है वे महापुरुष जो बाह्य और अभ्यन्तर सर्व उपाधि से सर्वथा विरक्त होकर ज्ञाता की सुख और शान्ति की–आनन्द की लहर में जो आत्मायें विराजमान है, उनको धन्य है। बारम्बार नमस्कार है।

सर्वथा राग का अभाव होकर वीतरागता प्रकट हो तो ही सर्वथा सुख हो। ऐसा अवसर जल्दी प्रगट हो ये ही अंतर की भावना है। स्वरूप में सर्वथा लीन जब होगा वो दिवस धन्य होगा। थोड़ी लीनता तो होती है पर अब पूर्ण लीनता मैं रहूं ये ही 'भावना है, कि कब मुनिपना प्रकट करके आत्मलीनता में बढ़कर पूर्णता प्राप्त हो। हे प्रभु! आपके प्रताप से अब मुनिपने की वनवासी स्थिति में आत्मदशा में लीन होकर निस्पृह ही रहे, तब सब विकल्प छूटकर एकमात्र आत्म स्वरूप की ही श्रेणी में रहे और पूर्णानंद प्राप्त हो, ये ही प्रगट हो। महापुरुषों के परम प्रताप से जरूरत हो वैसी दशा प्रगटे, परन्तु विलम्ब रहित त्वरित दशा प्रकट हो ऐसा समय कब देखूंगी।

श्री समयसार पढ़ते हुए इतनी महिमा आती है कि 'समयसार' के एक–एक शब्द के रहस्य के ऊपर दृष्टि डालते ही जैसे उसमें बहुत रहस्य–आशय भरे है—ऐसा अनुभव हुआ ही करता है। उसमें सद्गुरु देव ने

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

अनमोल रहस्य बताया है, उसमें जितनी प्रकट शक्ति उछलती है, इतना आनन्द आता है, बाकी तो ज्ञान अनन्त शक्तिवाला है। इसलिए वो सम्पूर्ण प्रकट हुए बिना पूर्ण ज्ञान तो कहाँ से हो? श्री सद्गुरुदेव के उपकार का क्या कथन करें, सद्गुरु तो पहले से आखरी तक उपकार ही कर रहे हैं। 'गुरुकृपा से होंगे यही स्वरूप जो', वो ही वस्तु का नियम है।

सर्वांश समाधि हो तब ही सर्व प्रकार से शान्ति होने योग्य है, अमुक अंश में समाधि होने पर जहाँ तक सर्वांश समाधि न हो, तब तक संतोष कोई भी प्रकार से होगा—ऐसा नहीं है।

पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में श्रीमद् राजचन्द्रजी के पत्रों में तैतीसवें साल का पत्र उपयोग लक्षण से सनातन स्फूरित का जो पत्र है, वो पढ़ने से स्पष्टीकरण बहुत अच्छा हुआ था। तीव्र असाता के उदय में वीर्य विशेष जागृत रूप होता है। वो ज्ञानी की स्थिति है। वो असाता का न्याय जिस प्रमाण में अनुभव में आता था उस ही प्रमाण में श्रीमद् तथा गुरुदेव स्पष्टीकरण करते थे।

सम्पूर्णता में आत्मा आत्मा और आत्मा ही चाहिए। दूसरा कोई चाहिए नहीं। और दूसरी जगह कहीं दृष्टि देना जमती नहीं। फिर भी उदय के कारण सब क्रिया होती भी है।

(पूज्य गुरुदेव के उपकार कहाँ से भूल सकते है?) गुरुदेव ने तो ऊँची से ऊँची वस्तु दी है। जो कोई न दे ऐसी अद्भुत चैतन्य निधि दे गए हैं जो चेतना स्वयं है, सभी आत्मा चैतन्य स्वरूप हैं स्वयं नजर करके देखे तो हाजरा हजूर ज्ञायक देव दिखता है। ऐसे ज्ञायक देव का स्वरूप गुरुदेव ने स्वयं के अनोखे श्रुतज्ञान के द्वारा सूक्ष्मता से स्पष्ट रूप से समझाया है, ऐसा ज्ञायक देव का मार्ग स्पष्ट करके भक्तो के ऊपर अपार उपकार कर गए हैं। जिससे आत्मार्थीओं को सरल हो गया हैं।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव का जन्म चैतन्य आत्मा का चमत्कार बताने के लिए है। देह से भिन्न ज्वाज्वल्यमान ज्योति स्वरूप वर्तमान में विराज रहे हैं। उनका ध्वज फहराने के लिए जन्म हुआ है।

卐 卐 卐

पूज्य गुरुदेव प्रवचन में समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पंचास्तिकाय, श्री धवलराज, अष्टपाहुड, पंचाध्यायी, द्रव्यसंग्रह, मोक्षमार्ग प्रकाशक, समाधिशतक, पुरुषार्थ सिद्धि उपाय, स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा, पद्मनंदी वगेरे दिगम्बर आचार्यों के शास्त्र पढ़ते हैं और उसमें से इतना अच्छ समझाते हैं और आचार्यों के हृदय बताते हैं। ये बात जब समझ में आती है तब ऐसा लगता है कि आचार्य भगवंतों ने कितना अच्छा और साफ मार्ग बताया है। एकदम जड़–चेतन अलग और एकदम भेदज्ञान की बात–स्पष्ट दिपक सी स्पष्ट बताई है। वैसे तो अभी इस काल में तो पूज्य गुरुदेवने तीर्थंकर का मार्ग एकदम साफ बताया है, जरा भी मिली जुली नहीं एकदम स्पष्ट भेदज्ञान का मार्ग पू. गुरुदेव अभी बता रहे हैं। अभी के जीवों का बड़ा सद्भाग्य है कि ऐसी भेदज्ञान की स्पष्ट दीपक जैसी बात प्रत्यक्ष सुनने को मिलती है। पू. गुरुदेव के परम प्रताप से बहुत जीव अभी इस काल में मुक्ति पाने की योग्यता प्रकट कर लेंगे।

परम पूज्य कृपालु देव का परम–परम उपकार है। जो भव का अन्त साक्षात् तीर्थंकर देव के समीप नहीं आया उसे भव का अन्त एकदम नजदीक में जिनके प्रताप से हुआ वो परम कृपालु देव को अत्यन्त अत्यन्त भक्ति से बारम्बार नमस्कार हो।

साक्षात् तीर्थंकर देव के पास में भव का अन्त न आया, उसमें इस आत्मा की ही योग्यता–पात्रता नहीं थी, उसमें स्वयं का ही कारण

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

था। साक्षात् तीर्थंकर देव तो साक्षात् मोक्ष पाने के परम परम निमित्त हैं, उनके साक्षात् योग में जीव समझा नहीं। उसमें स्वयं की ही कमी है। (कमजोरी)

भेदज्ञान होने के बाद ऐसा लगे कि मैं स्वयं ज्ञायक आत्मा हूँ। मेरा ज्ञायक, मैं सुख से भरा हुआ हूँ। मेरे में ही सुख है। मेरे में से ही सुख प्रगट होता है। ज्ञायक में ही लीन रहने से सुख और शान्ति लगती है। ज्ञायक के सिवाय दूसरे विकल्पों में जरा भी सुख लगता नहीं। दुःख ही लगता है।

जिसमें सुख ही नहीं हो उसमें सुख कहाँ से भासे? जैसे जैसे ज्ञायक में लीन होते है, वैसे–वैसे ज्ञायक की तीव्रता होती जाती है। ज्ञायक की तीव्रता वो ही रुचिकर लगती है। प्रवचन के बाद सुबह मंदिर में बैठते हैं तब तो ज्ञायक में एकदम लीन हो जाते है।

व्याख्यानमें से पू. गुरुदेव के पास से चैतन्य आनंद का घोलन सुनकर सबेरे मंदिर में बैठते हैं, तब ध्यान में एकदम लीन हुआ जाता है। श्री जिनेन्द्रदेव की ध्यानस्थ मुद्रा की छत्रछाया में यह आत्मा भी चैतन्य स्वरूप में एकदम लीन हो जाता है।

卐 卐 卐

वास्तविक रुचि उसको कहते हैं कि जो अनन्तगुणों सहित प्रगट होती है। अभेद के लक्ष्य से प्रगटी हुई रुचि अभेदता लेती हुई प्रगट होती है। उस स्वरूप का कोई अद्भुत अपूर्व माहात्म्य आता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्यबेन शान्ता बेन के जीवन की कथा

शान्ता बेन का जन्म मोसाळमें (मामा के घर, मां के पीहर में) ढसा ढोलरवा अमरेली के पास गाँव में वि.सं. १९६६ में फागुन सुदी ११ के शुभ दिन पिता श्री मणीलाल भाई और मातु श्री दिवाली बा के यहाँ हुआ था। खारा परिवार में ये दीपक प्रकाशित होने से कुल धन्य हुआ। भाई बहनों में सबसे बड़े शान्ताबेन थे। उनके चार बहनें और एक मुकुन्द भाई थे। बहनो में (१) शान्ताबेन, (२) कान्ताबेन, (३) मंजुलाबेन, (४) सविताबेन, (५) लाभुबेन।

बचपन से ही उनका जीवन वैराग्यमय और आदर्श था। पूज्यबेन दिखने में एकदम रूपवान, तेजस्वी, वीर्यवान, सौम्यमुद्रा और वात्सल्य युक्त थे। बालपन से ही वे श्री विचारशील और जो कार्य करे वो व्यवस्थित ही करते। जो काम करने का स्वयं तयकर लेते वो काम पूरा करे तब ही चैन से रहते। ऐसी उनकी तीव्र लगन थी। बालपन से ही वैरागी थे। और तीक्ष्ण बुद्धि होने से पूज्य बेन के प्रति कुटुम्बीजनों में उनका खूब सम्मान था।

छोटी उम्र होने पर भी सब उनकी सलाह लेकर ही काम करते। और उनके पिताश्री को तो पूज्य बेन के प्रति अगाध प्रेम था जिससे प्यार से उन्हें बहन कहकर ही बुलाते थे।

पूज्य बेन ने कलकत्ता में पांचवी तक अभ्यास किया था। उसके बाद मूल गांव अमरेली में रहे। उनके छोटेपन से ही धार्मिक रुचि विशेष थी, जिससे नियमित मन्दिर जाते थे और सामायिक, प्रतिक्रमण कराते और शास्त्रों का अभ्यास करते। तीक्ष्णबुद्धि होनेके कारण हजारों श्लोक कंटस्थ करते। एक ही बार पढ़ते ही तभी कंटस्थ हो जाता था स्वयं भक्ति

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

और वैराग्य के भजन बना बना के गाते थे। कंठ एकदम मीठा और मधुर होने से सब उनके पास गवाते थे। कढ़ाई–बुनाई तथा मोती के तोरण बनाने में निपूण थे।

वे व्रत–तप, नियम में संयमित थी, उपवास, एकासन, स्वयं करती और कराने में अनुमोदना भी वात्सल्यपूर्वक देते, उपवास के दिन आरम्भ परिग्रह का त्याग करके मन्दिर में दिन बिताती। साधर्मी के साथ मनन–वाचन भक्ति सहित समय बितातीं, दूसरे दिन साधर्मी को पारणा करवाने में बहुत प्रेम रखते। उसी प्रकार सब को स्वयं के घर बुलाकर पारणा करवाते। पूज्य बेन छोटेपन से वात्सल्य की मूर्ति थे।

१६ वर्ष की उम्र में दीक्षा की भावना

पूज्य बेन को वैराग्य तथा त्याग के और ब्रह्मचर्य से रहने के भाव इतने उत्कृष्ट रूप से थे कि मन–वचन–काय से अखण्ड सभाले रहे। उसकी निरन्तर चिन्ता हुआ करती। जैसे आत्म प्राप्ति का वेदन रहता वैसा ही ब्रह्मचर्य अखण्ड रहे वैसा वेदन रहता। और दीक्षा लेने की भावना छोटेपन से ही थी।

पूज्य बेनने स्वयं के माता–पिताजी को कहा था कि पिताजी इस भव में ऐसा कार्य करना है कि इस भव में कोई कर्म का उदय ऐसा आयेगा ही नहीं। तुम मेरी चिन्ता कोई भी प्रकार से करना नहीं। मुझे अन्दर से ऐसी आवेग आती थी कि मुझे तो आत्मा का कल्याण करना है। मैं स्वतन्त्रपने रहकर मेरी आत्मा की हित करनेवाली हूँ। मैं तो कोई अलग ही प्रकार से जीवन बितानेवाली हूँ। उस समय पूज्य गुरुदेव भी मिले नहीं थे। बापुजी से कहा कि तुम मेरी कोई भी प्रकार की चिन्ता मत करना। ''मैं सब प्रकार से वर्द्धमान रहनेवाली हूँ।''

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

मेरा शरीर रूपवान था उसका डर था कि कोई भी मुझ पर नजर करे। ऐसा शरीर क्या कामका? मैं सिर इस प्रकार ढकूं कि कोई मेरे सामने देख सके नहीं। अति रूप होना भी कलंक रूप लगता है। उपसर्ग रूप लगता है।

पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने की झंखना बहुत ही थी। पिताजी ने भी सम्प्रदाय में भी गुरु तरीके कानजी स्वामी को ही स्वीकारा था, जिससे पिताश्री को विचार आया कि बेन दीक्षा लेने का बहुत कहती है तो अपन सब कानजी स्वामी के दर्शन करने चलें, पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास तब गढडा गाम में था। तब कुटुम्ब के (पचहत्तर) ७५ जितने आदमी सहित दर्शन करने गए। (वि. सं. १९८१)

संवत् १९८१ के साल में गुरुदेव के दर्शन सर्व प्रथम किए तब बहन की उम्र १६ साल की थी। दर्शन करते हुए ऐसा लगा कि ये कोई महा पुरुष जैसे लगते हैं, ये महापुरुष के दर्शन करते हुए बहुमान आया कि ये पुरुष का मानो कोई पूर्व में परिचय न हो? ऐसा हृदय में हुआ करता। उनके प्रति बहुमान बहुत आया करता। उसके बाद स्वप्न में भी कितनी बार आते थे। ये कोई परमेश्वर स्वरूप हैं कि क्या? ऐसा हुआ करता। ये गुरु से ही मेरा हित होगा ऐसा हुआ करता। अ...हो...हो...! ये तो कोई महापुरुष गजब है। और इनकी वाणी में सर्वप्रथम आया कि ''आत्मा-मन-वाणी और देह से उस पार है'' पहेली बार सुना कि आत्मा उस पार है।'' और दूसरा ये कहते कि ''जैसे पहाड़ में बिजली पड़े और दो टुकड़े हो जाते है तो वह वापिस नहीं मिलते एक नहीं होते वैसे आत्मा में भेदज्ञान प्रज्ञारूपी बिजली गिरने उपर, पर से जुदा हुआ वो अब वापिस से पर के साथ एकत्व बुद्धि के साथ एकमेक होता नहीं। ऐसी बात सुनकर हृदय उछल जाता कि ऐसा आत्मा कहाँ

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

होगा ? ऐसा पहलीबार सुनते हुए ऐसा आश्चर्य लगा कि ऐसी बात तो कोई करता ही नहीं। इन महापुरुष के चेहरे पर ऐसा तेज और पुण्य उछलता है कि अहाहा! इनकी वाणी ऐसी मीठी और मधुर लगती है कि जैसे शेरडी (गन्ना)।

पूज्य गुरुदेव मूल प्रयोजनभूत जो कहते वो मैं ग्रहण करती, वह ग्रहण करके पूरा व्याख्यान लिख लेती और उसमें से विचार करने जैसा और आत्मा के लक्ष करने जितना अलग लिख लेती। पूज्य गुरुदेव कहते कि दोनों जुदा हो जाय ये बात बहुत पसंद आती। वह कहते कि–आत्मा मन से–वचन से–काया से उस पार है, तब ज्ञान चक्षु नहीं थे इसलिए होता कि मन से–वचन से काया से पेले पार है उस आत्मा को मुझे देखना है। और उसका ही प्रयत्न करना है। पूज्य गुरुदेव बहुत कहते कि मन–वचन–काया में शुद्धात्मा नहीं वो बहुत अच्छा लगता।

पिताजी को मैंने कहा कि अब मैं दूसरे किसी के प्रवचन नहीं सुनुंगी। जहाँ कानजी महाराज का चातुर्मास होगा वहाँ ही सुनने जाऊँगी। पिताजी ने कहा कि भले, तुमको जो ठीक लगे वैसा करना। उसके बाद हरेक चौमासे में जाने लगे। पूज्य गुरुदेव का जहाँ चौमासा होता वहाँ जाते, बाकी तो फिर कहीं जाते नहीं।

संवत १९८२ में पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास वढ़वाण शहेर में होने से उनकी बहुत भावना थी, पर जा न सके उसका मन में क्षोभ रहा करता।

संवत १९८३ में पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास दामनगर में हुआ। वहाँ जाने की भावना बहुत ही थी। इससे उनके पिताश्री उन्हें दामनगर छोड़ गये। दामनगर में तीन महिने पूज्य गुरुदेव की वाणी का लाभ मिला। पहेले पहेले वाणी सुनने के लाभ मिला था अतः हर बार बहुत ही लाभ हुआ।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

संवत १९८४में शेषकाल के लिए (१ महिना) पूज्य गुरुदेव अमरेली पधारे। स्वयं के गाँव आए इसलिए आनन्द हृदय मे समाता नहीं था। वहाँ लायब्रेरी में दिगम्बरों के शास्त्र होने से बारम्बार गुरुदेव पधारते। उनश्रीको दिगम्बर शास्त्र पढ़ने की बहुत धुन थी। और उसमें से व्याख्यान में भी आत्मा के भेद ज्ञान ही देते। तब पूज्य बेन को तो भेद ज्ञान की बात सुनते ही चैतन्य पूरा उछल जाता–अनन्त गुण उछल जाते, ऐसा उल्लास आता। अमरेली से चातुर्मास करने के लिए गुरुदेव राणपुर पधारे। तब पूज्य गुरुदेव दीक्षा के लिए इतना प्रहार करते कि दीक्षा का ये स्वरूप है, वो सब प्रवचन में सुना। उसके बाद मेरी माँ की तबियत नरम हो जाने से मुझे अमरेली बुलाया।

पूज्य बेन के पिताश्रीने गुरुदेव से कहा कि हे गुरुदेव! बेन को दीक्षा लेनी है तो आप समझाओ। दीक्षा लेने की बहुत ही तैयारी में है, उनका बा तो रोती हैं, घर में पात्रा भी आ गये हैं।

पूज्य गुरुदेव ने बहुत ही करुणा से दीक्षा का स्वरूप समझाया और कहा कि ''आत्मा के अनुभव के सिवाय जीवन की धन्यता होती ही नहीं'' अनुभव के बिना दीक्षार्थी जीवन सार्थक होता नहीं वगैरह बहुत बहुत कहा। वो सुनकर मन का पलटना हुआ और दो हाथ जोड़कर कहा कि हे प्रभु! अब मुझे दीक्षा नहीं लेनी। आपने जो भेदज्ञान का स्वरूप बताया वैसा भेदज्ञान शीघ्र प्राप्त करना है।

उस समय पूज्य गुरुदेव अमरेली पधारे थे, तब गुरुदेव ने मुझसे कहा कि क्यों बेन अब दीक्षा लेनी है न? मैंने कहा नहीं साहब दीक्षा नहीं लेनी। गुरुदेव ने कहा कि ''मणीभाई (बापुजी) एकान्त में कह गए थे कि शान्ताबेन दीक्षा–दीक्षा लेने का कहते हैं, त्यारे (गुरुदेव) मैंने कहा कि तुम चिंता मत करो, चौमासा पूरा होने दो फिर कहे तो मुझसे

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कहना।'' पूज्य बहन कहते कि साहब! आप जो कहते हैं वो सत्य ही होता है। मैंने दीक्षा की पूरी तैयारी की थी, शास्त्र भी ले लिए थे। हाथ के लिखे हुए आचारांग–सुयगडांग ये दो शास्त्र में आत्मा की बात आती थी, इसलिए ये दो शास्त्र लिए थे। इसलिए मेरी मां को हुआ कि बेन दीक्षा लेगी ही। जिससे बा बहुत रोते थे।

गुरुदेव मिले तब मैंने बा से कहा कि बा! तुम चिन्ता मत करना। मुझे अब दीक्षा नहीं लेनी है परन्तु कानजी स्वामी का जहाँ चौमासा हो वहाँ मुझे चार महिना भेजना। तब बा ने कहा 'बेन' जैसा तू कहे वैसा, तूं जो मागें वो सब तुझे दूँ पर दीक्षा मत लेना। मैंने (पू. बेन) बा को कहा कि गुरुदेव ने बहुत समझाया है। अब मुझे दीक्षा नहीं लेनी। मुझे तो आत्मा को पहचानना है।

पूज्य गुरुदेव ने समझाया कि दीक्षा में सार नहीं। पहले सम्यग्दर्शन प्राप्त करना चाहिए उसके बाद दीक्षा लेनी चाहिए। तब मुझे ऐसा लगा कि मुझे सम्यग्दर्शन है नहीं, इसलिए दीक्षा नहीं लेनी। तब बा का चित्त ऐसा शांत हो गया। तब से गुरुदेव के साथ चौमासा करने मेरे मासीबा को साथ में भेजते थे। साथ में त्याग और वैराग्य की भावना बहुत होती थी। पूर्व के संस्कार भी थे।

संवत् १९८५ में (ई.स. १९२८) लाठी में चातुर्मास हुआ। वहाँ भी पूज्य बहन ने लाभ लिया। और पुरुषार्थ में वृद्धि हुई। और मन में निर्णय करते थे कि पूज्य गुरुदेव के साथ साथ आत्म साधना साधनी है। और भविष्य में आत्म कल्याण करके सिद्ध पद प्राप्त करना है। ऐसे महान संत के प्रति उनको बहुत बहुमान आता। और ये ही सच्चा सन्त है—ऐसा दृढ़ निश्चय किया था।

ऐसे सन्त की हाजरी में ही सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेना है। ''मुझे

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

तो इस भव में ही ऐसा कार्य करना है कि ये स्त्री पर्याय का छेद हो जाय।''

संवत १९८६ (ई.स. १९३०) में पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास फिर अमरेली में हुआ। तब नारणभाई के होने से तत्त्व की रेलमछेल बहार चलती थी। बाहर गाँव से बहुत आदमी आए थे। उससे पूज्य गुरुदेव को उल्लास बहुत था। और ऐसे रसिक तत्त्वज्ञान से भरे हुए प्रवचन होते और प्रवचन में अध्यात्म पद भी गा कर बोलते थे। जिससे प्रवचन सुनते ही तत्त्व के रसिकजन् श्रोता तो झूम उठते थे। नारणभाई के साथ तत्त्व की चर्चा चलती होने से पूज्य बेन के दिवस आनन्दमय धर्ममय बीतते थे।

वहाँ से पूज्य गुरुदेव वींछिया पधारे। वहाँ भी पूज्य बेन दर्शन करने गए थे। तब पूज्य चम्पाबेन भी दर्शन करने आए थे। वहाँ दोनों बहनों का प्रथम मिलन हुआ। तब पूज्य बेन का चम्पाबेन को देखते ही उनके हृदय में उनके प्रति आकर्षण हुआ। और जैसे पूर्व के सम्बन्धी हों ऐसे उनके प्रति हृदय एकत्वभावसे जैसे खिंचाया। एक दूसरे को आमने–सामने टक–टक देख रहे थे। फिर विशेष परिचय नहीं हुआ। इस प्रकार वींछीयां में पूज्य गुरुदेव और दोनों बहनों का संगम हुआ। और महा विदेह से बिछड़ी हुई त्रिपुटी यहाँ फिर से इकट्ठी हो गयी। पूज्य बेनश्री ने पूज्य बहेन को पहले कभी देखा नहीं था, तब वांकानेर में सपने में पूज्य बेन को देखा था, उसमें पूज्य बेन....जैसे सुन्दर...वैसा चेहरा....वैसा ही पहनावा.... था वैसे ही देखे....पूर्व प्रेम के कारण इस प्रकार की कुदरती आगाही आयी....और फिर तुरन्त ही मिलन हो गया। तब बेनश्री भी बोले कि मैंने स्वप्न में आपको ऐसे ही देखा था।

पूज्य गुरुदेव ने पूज्य बेन को (शान्ता बेन को) बुलाकर कृपादृष्टि से कहा कि तुम को ये चम्पाबेन का परिचय करने जैसा है। ऐसे आदेश

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

से, पूज्य बेन को पूर्वभव की प्रीति और स्वयं आत्मा की तैयारी....फिर क्या कमी रहे!! और हर्ष–उमंग से परिचय शुरु हुआ। दोनों सखी जैसे मिली हों, वैसे अन्दर की बात एक दूसरे को कहना शुरु की। पूज्य चम्पाबेन कहते कि मुझे भी ऐसा विचार आता था कि मैं भी पूज्य गुरुदेव के चौमासे में रहकर वहाँ शान्ताबेन के साथ रहूंगी। इसप्रकार पूज्य चंपाबेन को भी पूज्य बेन (शान्ता बेन) के प्रति बहुत कृपा थी। इसप्रकार साथ में रहे।

संवत १९८७ (इ.स. १९३१) में पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास पोरबंदर में हुआ। वहाँ भी पूज्य बेन गए। वहाँ गुरुदेव की वाणी में आया कि भेदज्ञान सम्यग्दर्शन बिना सब ही व्यर्थ है। ऐसी पहले से ही पुरुषार्थ प्रेरक पूज्य गुरुदेव की वाणी थी। और सम्यग्दर्शन के उपर पहले से ही वजन देते थे।

संवत् १९८८ (ई.स. १९३२) में पू. गुरुदेव का चातुर्मास जामनगर में हुआ। वहाँ भी पूज्य बेन गए। महाराज साहब के प्रवचन अपूर्व आते थे। स्वयं को तीव्र आत्म प्राप्ति की इच्छा से रात में नींद भी नहीं आती, खाने–पीने से भी रस उठ गया। और एक ही लगनी कि कब मैं आत्मा का असली स्वरूप प्राप्त करूं। और ऐसे गुरु मिले हैं उनसे ही मेरे आत्मा का हित होगा ऐसी निःशंकता आ गई।

सं. १९८९ (इ.स. १९३३) राजकोट चातुर्मास में पूज्य श्री गुरुसाहेब के कहे हुए न्याय !

पूज्य शान्ताबेन के ग्रहण किये हुए न्याय :—

जो कुछ भी कार्य आत्मा के हित के हेतु से होते हैं वो लाभ है। और आत्मा के हित के हेतु सिवाय जो कोई भी कार्य होता है वह

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

स्वच्छन्द है। अनादि काल से जीव चढ़ना चाहता है पर चढ़ नहीं सका। इसका कारण यह है कि ''मैं कुछ हूँ'' वैसे चाहे जो प्रकार से भी ''मैं कुछ हूँ'' ऐसे अभिप्राय से 'स्वच्छन्द है' वो स्वच्छन्द को मुख्य करके चढ़ना चाहता है, इसके कारण वो आगे बढ़ नहीं सकता।

चैतन्य की जितनी कीमत है उतनी कीमत लक्ष्य में आये बिना जैसा चाहिए वैसा पुरुषार्थ उठता नहीं।

पुरुषार्थ न हो तब ऐसा विचारना कि मुझे क्यों पुरुषार्थ होता नहीं, क्यो मुझे अभी पूरी कीमत लगती नहीं, ऐसा विचारते हुए पूरी कीमत जानने में आती है। प्रथम से ही पुरुषार्थ करने में प्रमाद आये और पुरुषार्थ वापिस फिरे, तब फिर से पुरुषार्थ करना और फिर प्रमाद आए तो फिर पुरुषार्थ करना। वैसे फिर फिर पुरुषार्थ करते ही रहना तो अवश्य कार्य होता है।

संवत १९८९ (ई.स. १९३३) में राजकोट शहर में चातुर्मास था तब एक आश्चर्यकारी घटना घटी कि पूज्य चंपाबेन सम्यग्दर्शन प्राप्त करके पधारे। तब उनको देखकर पूज्य बेन को हुआ कि पू. गुरुदेव के थोड़े से परिचय में भी पुरुषार्थ करके सम्यकदर्शन प्राप्त कर लिया। अहो धन्य दशा!

पू. बेन शान्ताबेन के पुरुषार्थ के बारे में पूज्य बेन श्री चंपाबेन कहते थे कि ये बेन की तो भक्ति और अर्पणता बहुत.....इनका तो पुरुषार्थ ऐसा था कि मैं जो न्याय कहूँ, वह झेल के उस प्रकार का उनका आत्मा परिणमन हो जाय। मैं ऐसा कहूँ वैसी उनकी पर्याय उस रूप परिणमन हो जाय...... उनको देखकर तो मुझे आश्चर्य होता कि ये कैसे पात्र जीव हैं कि जैसा कहा तुरन्त वही ही भावरूप से परिणमन हो जाता है।

''धन्य है ये परिणमाने वाले... धन्य है ये परिणमने वाले'' पू. बेन को जैसा कहते हैं वैसा उनका द्रव्य परिणमन करता है। उतनी उनमें

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

योग्यता मृदुता और पात्रता है.....'' जिससे वे अनुभव का सूक्ष्म से सूक्ष्म रहस्य देते। स्वसन्मुख विचारधारा में प्रोत्साहन देते और मार्ग सुगम कर देते। पूज्य चंपाबेन के सानिध्य में पूज्य बेन ने पुरुषार्थ और आत्मा के प्रति लगनी में इतनी जोरदार वृद्धि पा ली कि कहीं भी चैन पड़ता नहीं, खाते–पीते उदासीनता होती, नींद आती नहीं और एकान्त में बैठे तीन तीन घन्टे तक आत्मा की खोजबीन किया करती। कोई समय उन की माताश्री आते तो भी उनके सामने नहीं देखते तब उनके मातुश्री कहते कि बेन! तुमको क्या हो गया है कि हमारे सामने भी नहीं देखते, ऐसा कह कर वो रोने लग जाती'' पूज्य बेन एक ही जवाब देते कि मुझे मेरा करने दो।

एक बार श्रीमद् राजचन्द्रजी का शास्त्र पढ़ते ऐसा विचार आया कि जैसा इस में कहा है कि उसरूप में मेरी परिणती कब परिणमेगी? तब अन्तरंग में खोजबीन करते और पढ़ते और वहीं ही अटक जाते। पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन में जहाँ क्षमा का स्वरूप आये कि समता का स्वरूप आये कि सच्ची क्षमा और समता तो आत्मा का स्वभाव है। वो बात तो इतनी मीठी लगती कि ऐसी स्वभावरूप मेरी परिणति कब होगी? मुझे तो ऐसा क्षमा स्वभाव चाहिए। ये ऊपर–ऊपर से क्षमा के शुभ भाव रूपी क्षमा के भाव से मुझे संतोष नहीं होता। वो स्वभाव भाव प्रकट करने के लिए तो इतना ज्यादा वेदन होता कि जिसका वर्णन हो सके नहीं। ''ये तो वेदन करनेवाला स्वयं जानता है।'' आत्मा के वेदन के आगे अच्छा नहीं लगता।

संवत १९९० (ई.स. १९३४) में चातुर्मास राजकोट सदर में था। वहाँ पूज्य बहनश्री तथा पूज्य बेन गई थी। उस समय गुरुदेव एक ही समय प्रवचन करते होने से निवृत्ति बहुत मिलती होने से सुबह में एकान्त में पढ़ते थे।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पू. गुरुदेव के प्रवचन चलते थे, तब पू. बेन कहते थे कि बुद्धि धारण की थी, इसलिए घर आकर रात को पूरा प्रवचन जो हुआ था सभी बंधुओं के साथ उसकी चर्चा करते, वे तो शब्द के शब्द पूरे बोल जाती। उस समय धारणा की लगनी थी। फिर जो गुरुदेव पढ़ते, वे भाव आत्मा के साथ मिलाने का प्रयत्न चलता। पू. गुरुदेव जो स्वरूप बताते थे, वो ये चैतन्य के साथ मिलाने का प्रयत्न करते इसलिए धारणा की बुद्धि छुट गई और आचार्यदेव कहते उसरूप में आत्मा की बुद्धि मिलाने की हो गई। गुरुदेव कहते है शास्त्र के आधार पर, शास्त्र सामने हो तब गुरुदेव क्या भाव बताते हैं, शास्त्र में क्या कह गये हैं, उस प्रमाण से आत्मा के साथ मिला लेते, वो मिलाने की बुद्धि मुख्यपने रहती और दूसरा गौण हो जाता। मुख्यपने ये चैतन्य परिणति है। ये परिणति के साथ आचार्यदेव की बात तथा गुरुदेव की बात किस तरीके से मिलती है–यह बात मुख्यता रूप हो गई। वो मुख्यता तो करने जैसी है।

ऐसी वाणी सुनकर मुझे ऐसा कब भेदज्ञान प्राप्त हो ऐसी झंखना हुआ करती और भेदज्ञान प्राप्त करने के लिए अन्तर में मंथन चला करता।

वर्तमान में जो चैतन्य परिणति परिणमन कर रही है वो चेतना रूप परिणति को वर्तमान कहते हैं।

प्रवचनसार में पूज्य गुरुदेव बहुत प्रफुल्लित होते थे, तब फिर हम दोनों बहनें घर आकर चर्चा करते कि ओ....हो....हो! पूज्य गुरुदेव कितना अच्छा अर्थ निकालते हैं कि आँख बन्द करके बोलते ही जाते हैं तब धारणा पर दृष्टि नहीं, परन्तु ये आत्मा के साथ मिलाने की दृष्टि और फिर तो धारणा तरफ की अपेक्षा ही छूट गई। आत्मा के साथ मिलाने की दृष्टि बढ़ गई। धारणा की अपेक्षा थोड़ी हो गई और कम हो ही जाना चाहिए। एक आत्मा की मुख्यता होनी चाहिए। पू. गुरुदेव

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कहते थे कि आचार्यदेव अनुभव में कलम डुबा डुबा कर लिखते हैं।

वैसे अमृतचन्द्र आचार्यदेव ने ये गाथा में तो कमाल कर दिया है।

सब पदार्थ के बीच में एक ऊँचे में ऊँचा तत्त्व है, पर ये तत्त्व पकड़ाये कि तब तत्त्व को पकड़ने की अन्दर एक समझने के तरीके हैं। वह समझने की रीति जो आ जाये तो वो तत्त्व है–ऐसा आत्मा समझ में आए ऐसा है।

पंचेन्द्रिय को मारने का अभिप्राय जिसके हृदय में वर्तते है, उस भूमिका में अच्छे परिणाम कहाँ से आएंगे। श्री गुरुसाहब कहते हैं कि तू विद्यमान साक्षात वस्तु को उड़ाता है। वो उड़ाते उड़ाते ऐसा टाइम आ जायेगा कि तू एक तेरे आत्मा की मौजूदगी भी नहीं माने, इसलिए साक्षात् वस्तु को देखकर तु उसका इन्कार मत करना।

पूज्य बेनश्री के समागम से भी पुरुषार्थ बढ़े–ऐसी अच्छी चर्चा होती थी। एक समय दोनों बहने घूमने जाती थी, तब पूज्य बेनश्री ने राग के समय भी आत्मा को किस तरीके से देखना उसका दृष्टान्त दिया कि जिस प्रकार स्फटिक मणी स्वभाव से तो सफेद है। परन्तु उसके सामने जासौन का फूल रखने से ललाश दिखाई देती है। फिर भी लालाश के समय स्फटिक तो सफेद ही है। उसी प्रकार शुद्धात्मा को स्वभाव से देखे तो शुद्ध ही है। पर उसमें होती राग–द्वेष की परिणति को लेकर वर्तमान में अशुद्धि दिखती है। परन्तु उसकी अशुद्ध परिणति के समय उसके सामने न देखकर शुद्ध चैतन्य तरफ दृष्टि देने पर शुद्धात्मा शुद्ध ही दिखती है। ऐसी चर्चा से मेरी विचार श्रेणी जोर शोर से चलने लगी। तब आत्मा का निर्णय हुआ। ऐसा निर्णय हुआ कि कुछ समय में निर्विकल्प अनुभव होगा।

उस दिन पूज्य चंपाबेन ने मुझे कहा कि ये तरीके से विचार करो– आत्मा के थोड़े विचार करने को कहा था, उसके ऊपर विचार करते–

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

करते अन्दर से आत्म स्पर्शी–निर्णय हुआ। सामान्यरीति से लोग जैसा करते है, वैसा नहीं, पर अलग ही प्रकार का निर्णय हुआ। उसके बाद तो अभी बहुत प्रयत्न करना बाकी है। ''मुझे ऐसा करना है, ये वस्तु पकड़नी है'' ये निर्णय होते ही ऐसा आनन्द उल्लास हुआ, मैं तो नाच उठी। सिद्ध क्या? मुनिराज क्या? महाराज साहेब! बेन क्या? वो सब तब मालुम हुआ। इससे पहले तक निर्णय तक तो ऊपरी का था, और सही खबर हुई तब बहुत आनन्द हुआ।

सिद्ध के सुख की आज खबर हुई। अहा! उस समय तो अन्दर से आत्मा में एक उल्लास होता था। ''ये मैं'' ऐसा अन्दर से निर्णय हुआ। अभी निर्विकल्प अनुभव का प्रयत्न तो बाकी था। उसके बाद निर्विकल्प अनुभव के लिए अन्दर से बहुत प्रयत्न करना होता था। अन्दर से निर्णय आया कि अब सम्यग्दर्शन होना ही है। इसलिए उसको 'कारण' कहा। ऐसा निर्णय होते ही स्वयं को खबर हो अब तो अल्पकाल में सम्यग्दर्शन होना ही है। फिर भी अभी बहुत तीव्र पुरुषार्थ करना होता है। किसी को निर्णय करने के बाद तुरन्त अनुभव हो जाता है, कोई को थोड़ा समय लगता है पर ये निर्णय ऐसा कि अमुक काल में सम्यग्दर्शन जरुर होता है। परन्तु उसके लिए अंतर में बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। निर्णय के प्रयत्न करते हुए भी निर्विकल्प अनुभव का प्रयत्न तो अलग अपूर्व है। शाम को लगभग चार बजे राग–द्वेष की परिणति से अलग शुद्ध चैतन्य, एकदम लक्ष्य में आया कि ''अहा! ये शुद्ध चैतन्य मैं स्वयं ही हूँ। ऐसे पूरा आत्मा प्रतीति में आया। शुद्ध आत्मा और राग द्वेष के भाव का भिन्नपना एकदम हो गया। ये मैं आत्मा हूँ जिसका वेदन अभी तक हुआ नहीं था और आत्मा आत्मरूप से ख्याल में आता नहीं था, वो आत्मा ख्याल में आया। अभी तक देह और आत्मा के एकपने में अंधेरा ही दिखता था। ये आत्मा ख्याल में आते ही ''एकदम चैतन्य

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ज्योति प्रगट हुई'' उपयोग की दशा उलट–पुलट हो गई, अज्ञान की दशा और ये ज्ञान की दशा में अन्तर में एकदम पलटना हो गया। केवलज्ञानी का स्वरूप समझ में आया। मुनियों का स्वरूप जानने में आया। गुरुदेव का स्वरूप जानने में आया।

अभी तक ऐसा होता था कि नमो अरिहंताण बोलते हैं, परन्तु अर्हंत के आत्मा का स्वरूप कैसा होता है वो कोई खबर नहीं है। तो ये आत्मा लक्ष में आते ही अर्हंत का पूर्ण स्वरूप—ऐसा होता है ऐसा बराबर समझमें आया। पूर्णता के लक्ष्य से शुरुआत जो पू. गुरुदेव कहते हैं वो अभी समझ में आया। पूज्य गुरुदेव का बहुत उपकार ऐसा होता था, पर पूज्य गुरुदेव का आत्मा क्या करता है तो समझ में नहीं आता था, वो अब समझ में आया। अज्ञानता में पुरुषार्थ करने जाते थे पर एकदम अंधाधुंधी लगती थी। कोई मार्ग ही दिखता नहीं, तो अब आत्मा का स्वरूप लक्ष में आने से मोक्ष का मार्ग एकदम स्पष्ट हो गया। मोक्ष का मार्ग हाथ में आ गया। मैंने बेनश्री को कहा कि आप के आत्मा का स्वरूप मुझको समझ में आया। आप अन्तर में क्या करते हो वो मुझे अब समझ में आया।

आत्मा की पूर्ण ज्ञान–आनन्द दशा जल्दी से प्राप्त हो और निजस्वरूप में पूर्ण स्थित जल्दी से हो जाय ये ही भावना

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव के हृदयोद्गार

मैं क्षमा स्वरूप ही हूँ, इसलिए मुझे मेरा स्वरूप देखना है; कषाय को मंद करना, समता स्वरूप में लीन होना।

आज आत्मा के साथ क्षमा होने का दिन है। मैंने पर से लाभ माना हो कि पर को मेरा माना हो तो "मेरे आत्मा के तरफ से आज क्षमा है।" भाई! अब संसार के साथ क्षमा कर अतीन्द्रिय नाथ में जान!! इससे भेंट कर न! "मैं परमात्मा का नाथ हूँ' ये ही मेरा जीना सफल हुआ।"

स्वयं स्वयं के सहज भाव से क्षमारूपी समता भाव में लीन होते हैं। एक गुण प्रगटे इसलिये सब गुण प्रगट होते हैं। सर्व गुणांश वो सम्यक्त्व, सब गुण एक अंश एक साथ प्रगट होते हैं।

भेदज्ञान होते ही सब गुण एक साथ उछलते हैं। मैं शान्त स्वरूप ही आत्मा हूँ। इसलिए भेदज्ञान करना। आत्मा का जो ज्ञानोपयोग है उसमें अन्दर राग और ज्ञान में भेद करना। ज्ञान स्वरूप मैं हूँ, राग मेरा स्वरूप नहीं. ऐसा सिर्फ विकल्प से ही नहीं। यथार्थ तल में से इसका स्वरूप समझकर "राग को रागरूप और ज्ञान को ज्ञानरूप" समझना, वस्तु का स्वरूप ये ही है।

प्रतिकूल संयोगों में अकंप ज्ञानी

संसार में जीवों को हंमेशा अनुकूल प्रसंगों की प्राप्ति नहीं होती। उत्तम मनुष्य भव में भी अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं। पूर्व कर्म के उदय के अनुसार कभी जीव को साता का उदय मुख्य रूप से होता है। कभी असाता का उदय मुख्य रूप से होता है। हमेशा एकरूप स्थिति नहीं होती। धर्मी जीव को भी असाता का उदय देखने मिलता है। पूर्व

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

कर्म के उदय के निमित्त से, धर्मी जीव को भी अनेक प्रकार के प्रतिकूल संयोग आ जाते है। संसारी जीव को कंपानेवाला कड़ा असाता का उदय आ पड़ता है। फिर भी धर्मात्मा की परिणति अकंपपने ही रहती है।

कैसे भी कड़े असाता के संयोग काल में भी धर्मात्मा ऐसा विचार करते हैं कि इस प्रसंग में तो सत्ता में रहने वाला असाता कर्म खिर गया है और स्वयं की परिणति स्वभाव सन्मुख वृद्धि को प्राप्त होती है। उदासीन वृत्ति में रहती है। इससे बाहर में प्रतिकूलता आते हुए भी सही में तो प्रतिकूलता टल जाती है। और जितना असाता कर्म खिरा उससे उतना ऋण मुक्त हो जाते हैं। तो इस प्रसंग में मेरा अनिष्ट क्या हुआ है? कुछ भी नहीं?

इस प्रसंग में धर्मी जीव कर्म निर्जरा का विचार करते हैं और स्वयं की परिणति में धैर्य और शान्ति का समाधान रखते हैं। इस समय परिणामों में शुद्धि की वृद्धि कर रहे हैं।

प्रतिकूलता के प्रसंग में अज्ञानी क्या न करे? अज्ञानी की दृष्टि ही विपरीत है, इसलिए अज्ञान से कषायवश हो जाता है और कषाय का जोर बढ़ाता है।

कर्म का तीव्र उदय आने से प्रतिकूलता के समय में शान्ति और समभाव रखने के लिए पूज्य चैतन्य स्वरूपी बेन ने अमृतमयी शान्ति मंत्र दिये थे।

प्रभु जिन भजो प्रभु जिन भजो
चिन्तामणि चित्त सदा ही भजो.

चिन्तामणि जैसे प्रभु को नित्य भजो जिससे तुम्हारा चित्त चिन्तामणि जैसा निर्मल हो जाय।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

हे भगवान! सभी को सद्‌बुद्धि प्राप्त हो जिससे पूज्य श्री कृपालु गुरुदेव के जिन शासन में अप्रभावना नहीं हो।

पू. बेन आत्मार्थी बहनों को सम्बोधन करते हुए कहते—तुम्हें ऐसी दृष्टि से देखना कि राग-द्वेष नहीं हो, एक आत्म उन्नति की ही दृष्टि रखनी। जिससे तुम्हारे आत्मा में लाभ होगा और जैसा बने वैसा मिथ्यात्व मंद पड़ जाये। ऐसा करना कि जिससे सम्यग्दर्शन नजदीक आ जाए।

तुम कहते हो न कि हमें आपके साथ मोक्षपुरी में आना है तो किस प्रकार आवे?

ये वस्तु कोई ऐसी नहीं कि तुमको हाथ में दे दे। जो विधि बताई है उस तरह से करो तो हमारे साथ रह सकोगे। आत्मा की आराधना ऐसी करो कि सम्यग्दर्शन प्राप्त हो तो साथ में जरूर आ सकोगे। आत्मा की भावना करते करते प्राप्त कर लो तो बहुत ही अच्छा, परन्तु कदाचित् ये भव में प्राप्त न हो, पूरी जिन्दगी चली जाए फिर भी ये सत् के संस्कार छोड़ना नहीं। जिससे दूसरे भव में जल्दी और सुगमता से मिल सके। हम भी पूर्व में आत्मा की आराधना करके आए हैं जिससे परम पू. गुरुदेव के प्रताप से इतनी कम उम्र में 'आत्मा' 'आत्मा' करते हुए खड़े हुए और आत्मा मिला।

प्रश्न :—हमको आत्मा की खोज करने के लिए क्या करना?

उत्तर :—एक आत्मा का ही विचार करो कि ये मैं जाणनहार कौन हूँ। देखनेवाला कौन हूँ। ये देह से अलग आत्मा कौन है? अन्दर जाकर खोजबीन करो। ये विचार हमेशा करो जिससे कोई समय ऐसा आएगा कि उस समय आत्मा जाननेमें आ जाएगी। ऐसा विचार करते करते मिथ्यात्व बहुत मंद पड़ता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

इसके सिवाय पूजा–भक्ति आदि में भी प्रभु के गुणों का स्तवन कीर्तन करते हुए विचारना कि जैसे प्रभु के गुण हैं वैसे ही मेरे में है। भगवान के गुणों का बहुमान आता है तो मिथ्यात्व मंद पड़ जाता है।

पग पग पर प्रभु के गुण सम्भालता
अन्तर में न भूलू उद्वेग रे
मोक्षगामी भव से उबारना

हे प्रभु! पग पग पर तेरे गुणों का स्मरण करते करते अंतर के सब उद्वेग भूल जाता हूँ। हे प्रभु! जैसे आप अनन्त गुणों से विराजमान हैं, वैसे अनन्त गुण मेरे में है। वो सब मुझे प्रगट होवो।

भगवान की भक्ति सिर्फ अकेले गाने के लिए है? या अन्दर में उतारने के लिए?

परम पूज्य श्री गुरुदेव के प्रवचन सुनते ही बस चैतन्य चैतन्य ही होता है जैसे कि एक चैतन्य आत्मा ही झलक रहा है। वैसा ही होता है। इसलिए तुम्हें भी इस लक्ष्य से व्याख्यान सुनना।

हम मन्दिर में ध्यान में बैठते हैं तब सामायिक रूप हों—ऐसी भावना भाते हैं। हमने सम्यग्दर्शन तो प्राप्त कर लिया है उसमें कुछ भी अन्तर नहीं और चारित्र प्राप्त करने के पुरुषार्थ की वृद्धि में हैं। निर्जरा भी होती जाती है। यहाँ तो आत्मा में शीतलता ही वर्तती है। और बहुत शान्ति है। मौन सेवने से आत्म आराधना में वृद्धि होती है।

प्रतिकूलता के संयोग में आत्मा बहुत वृद्धि को प्राप्त हुआ है। इसलिए तुम कोई हमारे निमित्त से राग–द्वेष करना नहीं। जैसे बने वैसे मिथ्यात्व के रस को मन्द करना।

तुम देव-शास्त्र-गुरु के शरण में आए हो, इसलिए देव-शास्त्र-गुरु

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

की प्रतीति भक्ति भाव से करना। उसका बहुमान करो जिससे तुम्हारे आत्मा में लाभ होगा। ''मैं तो तुम्ही को ही एक आशीर्वाद देती हूँ कि सम्यग्दर्शन पाओ पाओ।''

तुम्हारा कसौटी का समय आया है। कर्म को छोड़ने का काल आया है। हम तो कर्म छोड़ते हैं, फिर तुम क्यों कर्म बांधते हो।

तुम ये समूह पूजा करते हो वो हमें बहुत ही अच्छी लगती है, जिनेन्द्र भगवान की पूजा भक्ति उल्लास भाव से करना, ऐसी महिमा से करनी की कोई समय ऐसे भाव हो जाये कि उसमें आत्मा के भव का अन्त हो जाय।

पं. बनारसीदासजी कहते हैं कि 'जिन प्रतिमा जिन सारखी कही जिनागम मांही'। जिनेन्द्र भगवान की महिमा ही ऐसी है कि जीव के उल्लास भाव होते परिणाम उत्कृष्ट हो जावे तो जरूर आत्मा का भव सुधर जाए। भव का अन्त नजदीक आवे। उल्लसित वीर्य से भगवान की पूजा करनी।

छोटे रहने में गुण है। जिस प्रकार बने उस प्रकार छोटे रहना इसमें ही लाभ है। अच्छे परिणाम से उत्कृष्ट परिणाम से स्वयं को ही लाभ होता है, स्वयं ही आत्मा के नजदीक होता है। अच्छे गुण की असर लेना कि जिससे तुम्हारी असर दूसरे अच्छी ही लेवें।

तुमको किसी की अपेक्षा रखनी ही नहीं। निरपेक्ष भाव रखना। यहाँ तो आत्मा को कुछ नहीं, बस शान्ति-शान्ति और शान्ति ही है। अन्दर आत्मा में तो शीतलता शीतलता ही है। जैसे काश्मीर का हिम हो, जैसे बरफ का ढेर हुआ हो।

शास्त्र स्वाध्याय को वैराग्य से सुनने से मिथ्यात्व का रस मंद पड़ता है। इससे जैसे बने वैसे शास्त्र, स्वाध्याय, भक्ति और वैराग्य बढ़ाओ।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ये प्रसंग ऐसे हैं कि मिथ्यात्व कर्म के बंधे होते भी हैं और मिथ्यात्व के रस घटते भी है। इसलिए मिथ्यात्व का रस मंद पड़े ऐसा करना।

इस आत्मा में तो मुझे बहुत शान्ति है, तुम सब भी शान्ति और धीरज रखो, किसी के प्रति भी दोष–दृष्टिसे देखना नहीं, उपेक्षा भाव ही सबके प्रति रखो।

पू. बेनने प्रतिकुलता के ऐसे प्रसंग में भी धीरज और शान्ति रखने की प्रेरणा देते हुए निम्नानुसार अनुसार पद्य रचना की है—

धीरज स्वभावी देव,
चेतन धीरज धरो
धीरज में शान्ति अपार चेतन धीरज धरो

धीरज में है साथ में गुण अनन्त
जगमगता प्रगटे अपार.....चेतन धीरज धरो

प्रभु उपदेश देते है रे भव्य को
प्रभु सेवक को समझाते है, चेतन धीरज धारो.

ज्ञायक स्वभावी तुं देव है शाश्वत,
आकुलता व्याकुलता का नाश..... चेतन धीरज धरो

धीरज में आनन्द आनन्द अपार है,
शरण है तेरे में ही....चेतन धीरज धरो

धीरजका पिंड तूं चेतनराजा,
ज्ञायक स्वभाव में देख रे देख....चेतन धीरज धरो

आनन्द से करो रे प्रयत्न जी,
धीरज से पहुचोंगे भवपार रे......चेतन धीरज धरो।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ध्येय को ज्ञान में लेना रे, चेतन,
एक उपाय है तरने का रे......चेतन धीरज धरो
धीरज स्वभावी देव रे.....चेतन धीरज धरो

मनवांछित कार्य सिद्ध होते है,
प्रभु की शरण में तुम आओ रे.....चेतन धीरज धरो

समय नहीं अब ज्यादा रे मेरा,
भगवंत और भक्त मिल जाय रे...चेतन धीरज धरो

अल्प कुछ समय में मैं आऊँ प्रभु द्वारे,
दास को प्रभु समझाते हैं.....चेतन धीरज धरो

卐 卐 卐

कर्मो का तीव्र उदय आने पर फिर भी ज्ञानी की अकंप दशा

संवत २०३२ के साल में अचानक गिर जाने से पैर में फ्रेक्चर होने से तीव्र वेदना के समय पैर की पीड़ा के समय भी ज्ञायक देव स्वयं हाजिर होने से आत्म शान्ति का वेदन अधिक होता था, ये ज्ञानियों की विशेषता है। वो ही भाव पूज्य बेन के शब्दों में—

जेठ मास में यह शरीर गिर जाने से, बायें पैर की हड्डी में फ्रेक्चर हुआ और पैर का ओपरेशन भी हुआ, उस समय पैर की पीड़ा के वेदन के समय पीड़ा से ज्यादा आत्म शान्ति का वेदन बहुत था। ''ज्ञायक देव स्वयं हाजराहजूर जागता था उसमें ज्ञायकदेव को सुख का वेदन ही मुख्य था। ज्ञायक देव ही ज्ञान में तैरता था। उसमें कितनी बार तो पीड़ा का ख्याल भी रहता नहीं था।''

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

आत्मा स्वयं अशरीरी है वो अशरीरीपना ही नजर में दिखता था। द्रव्य और भाव से अशरीरी होना ही है। शरीर मिलने वाला ही नहीं फिर रोग कहाँ आने वाला है।

शरीर का योग है तब तक जो उदय होयगा वो आएगा। ओपरेशन के कारण से शरीर में बहुत कमजोरी हो जाती थी और कभी शरीर छूट भी जाय ऐसा भी लगता था, तो शरीर छूटे उसका भय जरा भी नहीं था। शरीर का संयोग छूटे, आत्मा तो हमेशा टिकनेवाला है। स्वयं ही ध्रुव स्वभाव से शाश्वत है। जहाँ तक ज्ञान आनन्द स्वभाव की पूर्ण प्राप्ति नहीं होती तब तक दूसरा भव तो मिलेगा और वह देव का ही भव है।

ज्ञान आनन्द आदि अनन्त गुण की पूर्णता करके चैतन्य पिण्ड शरीर रहित अकेला चैतन्यदेव स्वयं के अनन्त गुण में केली करे उसकी बलिहारी है।

श्री जिनेन्द्र देव और श्री गुरुदेव के परम प्रताप से वो पद प्राप्त होने में ज्यादा देर नहीं है। उसकी आराधन चलती है।

卐 卐 卐

एक बार कर्मों का उदय बहुत ही कठिन आया था पर वो उदय के समय ज्ञायक का साम्यभाव अच्छी तरह से वृद्धि को प्राप्त हुआ है।

कर्म के कड़े उदय के समय में भी आत्मा में शांति समाधि की प्राप्ति अच्छी हुई है। उदय ने उदय का काम किया, आत्मा ने आत्म शान्ति का कार्य किया।

ये शरीर में छाती में दबाव आने से दर्द बहुत बार आता, तब

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

जैसे जोर से दर्द बढ़ता वैसे ज्ञायक भाव की भी तीव्रता का सच्चा जोर बढ़ता। वो भेदज्ञान का परम प्रताप है।

इस आत्मा को भेदज्ञान हुआ, तब से साथ–साथ शरीर में भी असाता का उदय था। पेट में वायु, गैस, छाती में दुखना, ये असाता जब ज्यादा दिखती तब आत्म समाधि आत्म–शान्ति ज्ञायकभाव की वृद्धि भी ज्यादा होती। ये प्रत्यक्ष अनुभवशील बात है।

卐 卐 卐

इन गुरुदेव के परम प्रताप से इस आत्मा ने स्वयं स्वयं के स्व स्वरूप को पहचाना। स्वयं का ज्ञायक स्वयं ज्ञान का ज्ञाता, तीनों स्वयं के एकरूप अभेदरूप होकर परिणमित हुए। अनंतगुण उछल कर आत्मा प्रत्यक्षपने दिखता है, वैसे आत्मा का दर्शन हुआ आनन्द का अनुभव हुआ।

ज्ञायक मन-वचन-काया की क्रिया में हर समय परिणमन करता है, राग-द्वेष के भाव ज्ञायकदेव के वेदन में है ही नहीं।

आत्मा ज्ञान का अवतार है। ज्ञान पिंड है। समता स्वरूप है। आनन्द स्वरूप आदि अनन्त गुण स्वरूप है। आत्मा स्वयं पर से निरपेक्ष है। निरपेक्ष स्वरूप ही स्वयं है। पर की अपेक्षा ये आत्मा को कलंकरूप है। स्वयं स्वयं के गुण से भरपूर है। फिर पर की अपेक्षा इसमें कहाँ है ही। ऐसे निरपेक्ष स्वरूप को निहारते शान्ति समता और आनन्द उछलता है।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन में चैतन्य आनंद का घोलन सुनकर सुबह मन्दिर में दोनों बहनें बैठते हैं, तब ध्यान में एकदम लीन हो जाते हैं। श्री जिनेन्द्र देव की ध्यानस्थ मुद्रा की छत्रछाया में ये आत्मा भी चैतन्य स्वरूप में एकदम लीन हो जाता है।

पूज्य कृपालु गुरुदेव के परम प्रताप से शाश्वत तीर्थधाम श्री सम्मेद शिखरजी की यात्रा भी बहुत बार हुई। पू. गुरुदेव के साथ में यात्रा करते, शाश्वत तीर्थ के दर्शन होते ही रोम रोम में उल्लास हो जाता, जैसे कि कोई सिद्ध भगवान के धाम में आये हों ऐसा उल्लास आता था। जैसे मानो साक्षात् सिद्ध भगवान के दर्शन होते हों। जैसे मुनिवरों के दर्शन हो गए हों ऐसे भाव भासन होता था। वन जंगल देखकर मुनिराज याद आते और अपने को ऐसी दशा कब प्राप्त हो सके कि सर्व उपाधि से मुक्त होकर आत्म समाधि में लीन होकर संयम भाव प्राप्त करके वन जंगल में आत्म साधना साधे। ऐसा उत्तम सुअवसर कब आएगा। यात्रा करते समय ऐसे संयम भाव की भी अच्छी खूब पुष्टि होती है।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ॐ

सहज चिदानन्द

सहज ॐ चिदानन्द

पूज्य गुरुदेव के स्वाध्याय में से चुने हुए प्रमुख बिन्दु

१. क्रमबद्ध पर्याय।

२. उपादान–निमित्त, उपादान–ध्रुव और क्षणिक उपादान।

३. मुख्य वो निश्चय–गौण वो व्यवहार।

४. द्रव्य दृष्टि–शुद्ध दृष्टि।

५. सम्यग्दर्शन–आत्म धर्म।

६. पारिणामिक भाव–स्वभाव।

७. सिद्ध समान सदा पद मेरो–ध्रुव स्वभाव।

८. प्रत्येक कार्य–पांच समवाय पूर्वक होता है।

९. भूतार्थ आश्रित—मोक्ष तत्त्व।

१०. सुद्धणयं वियाणीहि—हे शिष्य! तुं शुद्धनय से जान।

११. पस्सदि जिणसासणं सव्वं—जिनशासन बाह्य।

१२. जिनशासन बाह्य द्रव्यश्रुत और अभ्यंतर ज्ञानरूप भावश्रुत वाला है।

१३. कारण शुद्ध पर्याय—पूजित पंचम भाव परिणति।

१४. स्वरूप प्रत्यक्ष–अनुभव प्रत्यक्ष।

१५. कारण परमात्मा–त्रिकाली आत्मा।

१६. सामान्य द्रव्य–विशेष पर्याय दोनों स्वतन्त्र सत् है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

१७. उत्पाद–उत्पाद के आश्रय है।

१८. अलिंग्रहण में द्रव्य और पर्याय–आत्मा द्रव्य से नहीं आलिंगित ऐसी शुद्ध पर्याय है।

१९. महासत्ता–अवांतर सत्ता

२०. शास्त्र और सूत्र का तात्पर्य–वीतरागता है।

२१. मोक्षमार्ग एक ही है और उसके कथन दो प्रकार से है। (निश्चय से–व्यवहार से)

२२. कारण शुद्ध जीव–कार्य शुद्ध जीव।

२३. ज्ञायक ज्ञायक भाव से अनादिकाल से रहा हुआ है।

२४. षट्कारक निरपेक्ष है–पंचास्तिकाय में आता है।

२५. चार अभाव भाव।

२६. छः सामान्य गुण।

२७. निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध।

२८. उत्पाद–व्यय–ध्रुव युक्त सत्।

२९. सत् द्रव्य लक्षणं।

३०. प्रवचनसार गाथा–९९ हार के (माला) दृष्टांत से द्रव्य को परिणमित होने वाला सिद्ध करना है।

३१. पर्याय का कारण पर्याय ही है। पर्याय की सत्ता गुण बिना ही पर्याय का कारण है।

३२. निमित्त धर्मास्तिकायवत् है।

३३. भैय्या भगवती दासजी के ४७ दोहे, बनारसीदासजी के ७ दोहे, ४७ शक्ति, ४७ नय।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

३४. सम्यक्त्व में ज्ञानी ही निमित्त होते है।

३५. विकार भी पारिणामिक भाव से (जय धवल प्रथम पा. ३१९)

३६. मतिश्रुतज्ञान में केवलज्ञान का निर्णय हो जाता है।

३७. साधु सल्लेखना के समय फिर से पच्चखाण करते है।

३८. कर्म प्रकृति की स्थिति भी स्वतन्त्र है।

३९. स्व–पर प्रकाशक ज्ञान का स्वभाव ही है।

४०. छः द्रव्य की काल लब्धि, पर्याय की स्वतन्त्रता दर्शाती है।

४१. जं जस्स जम्मिदेसे, जेए विहाणेण जम्मि कालम्मि।
वादं जिणेण णियदं, जम्मं वा अहव मरणं वा।
(कार्तिकेयानुप्रेक्षा गाथा ३२९)

४२. दोनों मोक्षमार्ग ध्यान में प्रकट होते है (द्रव्यसंग्रह की ४७ गाथा)

४३. स्वामी कार्तिक अनुप्रेक्षा–काल के अधिकार में कारण कार्य एक ही समय में होते है।

४४. द्रव्य-गुण-पर्याय के कर्ता-कर्म और कारण।

४५. स्वचतुष्टय–परचतुष्टय स्वयं के काल में होने से शक्तिरूप जो स्वभाव है उसके द्वारा सत्पना है।

४६. एकत्व विभक्त आत्मा को मैं आत्मा के निज वैभव के द्वारा दिखाता हूँ।

४७. भेदविज्ञानतः सिद्ध।

४८. पूव्व परिणामजुतं दव्वं कारणं। उत्तर परिणामजुतं दव्वं कार्य।।

४९. परमार्थ से देखने में आए तो पर भाव के त्याग का कर्तापने का नाम स्वयं को नहीं।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

५०. स्वभाव में क्षायोपक्षमिकभाव का भी अभाव है।

५१. छ द्रव्य रूप लोक जो ज्ञेय है और व्यक्त है उससे जीव अन्य है। वो अव्यक्त है। (समयसार गाथा ४९)

५२. आत्मा और क्रोधादि के प्रदेश भिन्न है। उससे वस्तु भिन्न है। (समयसार गाथा १८१-१८३)

५३. आत्मा स्वयं को जानता है उससे भी स्व-स्वामी अंशरूप व्यवहार है। ज्ञायक–ज्ञायक ही है।

५४. जो पर द्रव्य है वो ग्रहण किया जा सकता नहीं, और छोड़ भी नहीं सकते, ऐसा ही कोई आत्मा का प्रायोगिक उसीप्रकार वैस्त्रसिक गुण है— (समयसार गाथा ४०६)

५५. अनादिरूढ व्यवहार में मूढ–प्रौढ़ विवेक वाला निश्चय पर अनारुढ़ (समयसार गाथा–४१३)

५६. स्वयमेव छः कारकरूप होता होने से स्वयं भू कहलाता है (प्रवचनसार गाथा–१६)

५७. अनादि अनन्त अहेतुक और असाधारण ज्ञान स्वभाव को ही कारणपने ग्रहण करनेसे तुरन्त ही प्रगटते केवलज्ञानोपयोगरूप होकर परिणमता है। (प्रवचनसार गाथा–२१)

५८. तिर्यंच–मनुष्यों के प्रति करुणा बुद्धि ये मोह का चिह्न होने से प्रेक्षायोग्य है। (प्रवचनसार गाथा–८५)

५९. अविचलित चेतना विलासमात्र आत्म व्यवहार से च्युत होकर ही अज्ञानी समस्त क्रियाकलाप को भेटनें से मनुष्य व्यवहार का आश्रय करता है (प्रवचनसार गाथा–९४)

६०. मैं अकेला ही कर्ता-कर्म-करण और कर्म फल था कि जो उपरोक्त

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

चैतन्यरूप परिणमित होने को स्वभाव के द्वारा निपजाने में आता था। (प्रवचनसार गाथा १२६)

६१. वो संसार अवस्था में आत्मद्रव्य से उत्पन्न होते स्व परिणाम का कर्ता होता हुआ कर्मरज के द्वारा ग्राह्य होता है और कदाचित मुक्त–छूटता है। (प्रवचनसार गाथा-१६७)

६२. निश्चयनय साधकतम होने से ग्रहण करने में आया है, और व्यवहार नय साधकतम नहीं इसलिए ग्रहण के योग्य नहीं। (प्रवचनसार गाथा–१८९)

६३. शुद्धात्म तत्त्व प्रवृति लक्षण विधि के द्वारा मोक्षमार्ग प्राप्त करके सिद्ध हुए, वो एक ही मार्ग है। (प्रवचनसार गाथा–१९९)

६४. कारण स्वभाव दर्शन उपयोग–स्वरूप श्रद्धान मात्र ही कारण दृष्टि है। (नियमसार गाथा–१३)

६५. शुद्धज्ञान चेतना परिणाम वो नियम। कारण नियम है। (नियमसार गाथा–३)

६६. कार्य परमात्मा और कारण परमात्मा में शुद्ध ज्ञान चेतना होती है। (नियमसार गाथा—४५-४६)

६७. जिस काल विषे जैसी होनी होती है वैसी ही होती है, जो भी जिस जिस भाव की जैसी जैसी रीती करी प्रवर्तता है। वैसी–वैसी रीति पाय परिणमे वो भी निश्चय। (चिद् विलास–५३)

६८. पर्याय का कारण पर्याय ही है। (चिद् विलास–पा. ४०)

६९. पर्याय की व्याख्या–अगुरुलघु अखण्डित त्रिकाल समयवर्ती है।

७०. कर्म बिना चार भाव नहीं— पंचास्तिकाय गाथा–५८

७१. मुक्तजीव एक समयवर्ती अविग्रह गति के द्वारा स्वाभाविक उर्ध्वगमन करता है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

७२. द्रव्य पुण्यास्त्रव के प्रसंग का अनुसरण करके वो शुभ परिणाम भाव पुण्य है। (पंचास्तिकाय गाथा–१३२)

७३. मोक्षमार्ग सही में एक संवर ही है। (प. गाथा–१४१)

७४. दौड़ता आयात सामान्य समुदाय = आयात मतलब लम्बाई अर्थात् काल अपेक्षित प्रवाह।

७५. व्रतादि जैनधर्म नहीं पुण्य है।

७६. व्यवहारनय उस काल में जाननेवाला प्रयोजनवान है।

(समयसार गाथा–१२)

७७. मैं देह नहीं, मन नहीं वैसे ही वाणी नहीं, उसका कारण नहीं, कर्ता नहीं, कारयिता नहीं कर्ता का अनुमोदक नहीं।

(प्रवचनसार गाथा-१६०)

७८. अनेकान्तमय आगम द्रव्यश्रुत। वैसे ही भावश्रुत ज्ञानरूप परिणमता है। (प्रवचनसार गाथा–२३५)

७९. स्व–पर प्रकाशक ज्ञान को आत्मरूप करता हुआ प्रकट देदीप्यमान होता है। (प्रवचनसार गाथा–२०० का कलश–११)

८०. शुद्धोपयोगी को ही मोक्षतत्त्व का साधनतत्त्व जानना।

(प्रवचनसार गाथा २७४)

८१. मिथ्यात्वादि भावों के ज्ञान के समय ज्ञान अज्ञानत्व पैदा करता है।

८२. ''सामान्य शास्त्र तो नूनं विशेषो बलवान भवेत''

''सामान्य शास्त्र से विशेष बलवान है''

मोक्षमार्ग प्रकाशक सातवा अधिकार पाना नं. २०८

८३. साधु पुरुषों को रत्नत्रय नित्य सेवन करने योग्य है, उसी प्रकार

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

व्यवहार में दूसरे को भी ये ही उपदेश देना (समयसार गाथा–१६)

८४. अनन्त पर्यायमाला से आलिंगित स्वरूप द्वारा सूचित (प्रवचनसार गाथा २३)

८५. शुद्ध चिद्रूपोहं।

८६. स्वाधीन ते सुख पराधीन ते दुःख।

८७. सही में आगम बिना, पदार्थो को निश्चय किया जा सकता नहीं, कारण कि आगम ही जिसको तीनों काल तीनों लक्षण प्रवर्तते है। ऐसे सकल पदार्थ के साथ के यथातथ्य ज्ञान के द्वारा सुस्थित तरंग से गम्भीर है (प्रवचनसार गाथा–२३२)

८८. निश्चय से सत्यार्थ ऐसे ही है, व्यवहार वो ऐसा नहीं।
(मोक्षमार्ग प्रकाशक)

८९. ज्ञातृतत्त्व निश्चयनय द्वारा सूत्रों का और पदो का अर्थो का निश्चय वाला होता है।

९०. स्वयं का गुरु स्वयं है।

९१. दोनों नय समान और सत्यार्थ मानना वो भ्रम है।

९२. सम्यक् एकान्त + अनेकान्त = अनेकान्त

९३. अभेद–भेद।

९४. शुद्ध–अशुद्ध

९५. निरपेक्ष–सापेक्ष

९६. समयसार कलश २११ शिल्पी के दृष्टांत अधिकार से परिणाम स्वयं के आश्रय भूत परिणामी का ही होता है।

९७. द्वादशांगज्ञान वो भी विकल्प है। (समयसार कलश–१३)

९८. स्वभाव में विकार का अत्यन्त अभाव है।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

९९. आदि–मध्य–अंत सहित और रहित।

卐 卐 卐

१. एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को छूता नहीं स्पर्शता नहीं।

(समयसार गाथा–३)

२. हरेक द्रव्य की हरएक पर्याय क्रमबद्ध ही होती है।

(समयसार गाथा–३०८–३११)

३. उत्पाद, उत्पाद से है। व्यय या ध्रुव से नहीं।

(प्रवचनसार गाथा–१०१)

४. उत्पाद स्वयं के षट्कारक के परिणमन से होता है।

(पंचास्तिकाय गाथा–६२)

५. पर्याय और ध्रुव के प्रदेश भिन्न हैं। (समयसार गाथा–१८१-१८३)

६. भाव शक्ति के कारण पर्याय होती ही है, करनी पड़ती नहीं।

(समयसार शक्ति–३३)

७. भूतार्थ के आश्रय से सम्यग्दर्शन होता है। (समयसार गाथा–११)

८. चारों अनुयोग का तात्पर्य वीतरागता है। (पंचास्तिकाय गाथा–१७२)

९. स्वद्रव्य में भी द्रव्य–गुण–पर्याय के भेद करना वो अन्यवशपना है।

१०. ध्रुव का आलम्बन है पर वेदन नहीं, और पर्याय का वेदन है, पर आलम्बन नहीं।

११. स्वद्रव्य अर्थात् निर्विकल्प मात्र वस्तु।

परद्रव्य अर्थात् सविकल्प भेदकल्पना।

स्वक्षेत्र अर्थात् आधार मात्र वस्तु के प्रदेश।

परक्षेत्र अर्थात् प्रदेश में भेद डालना (करना)।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

स्वकाल अर्थात् वस्तुमात्र की मूल अवस्था।

परकाल अर्थात् एक समय की पर्याय।

स्वभाव अर्थात् वस्तु की मूल सहज शक्ति।

परभाव अर्थात् गुणभेद (गुण में भेद रखना वो)।

(कलश टीका कलश—२५२)

१२. पर्याय की सत्ता पर्याय का कारण है।
पर्याय का सूक्ष्मत्व पर्याय का कारण है।
पर्याय का वीर्य पर्याय का कारण है।
पर्याय का प्रदेशत्व पर्याय का कारण है। (चिद्‌विलास पाना–८९)

१३. अनेकान्त–एक वस्तु में वस्तुपने की निपजानेवाली परस्पर विरुद्ध दो शक्तिओं का एकसाथ प्रकाशन वो अनेकान्त है।

(समयसार कलश २६३, समयसार पाना ६०९)

१४. (१) एक द्रव्य में अनन्त गुण हैं।
(२) एक गुण की अनन्त पर्याय हैं।
(३) एक पर्याय में अनन्त नृत्य हैं।
(४) एक नृत्य में अनन्त घट हैं।
(५) एक घट में अनन्त कला हैं।
(६) एक कला में अनन्त रूप हैं।
(७) एक रूप में अनन्त सत हैं (सत्ता)
(८) एक सत्ता में अनन्त भाव हैं।
(९) एक भाव में अनन्त रस हैं।
(१०) एक रस में अनन्त प्रभाव हैं।

(अध्यात्म पंचसंग्रह पाना-१ ज्ञानदर्पण पाना–२६)

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

१५. एक गुण में अनन्त गुण का रूप है। (चिद्विलास पाना–७५)

१६. (१) स्वद्रव्य अन्य द्रव्य भिन्न भिन्न देखो।
(२) स्वद्रव्य के रक्षक तत्काल होओ।
(३) स्वद्रव्य के व्यापक तत्काल होओ।
(४) स्वद्रव्य के धारक तत्काल होओ।
(५) स्वद्रव्य के रमनेवाले तत्काल होओ।
(६) स्वद्रव्य के ग्राहक तत्काल होओ।
(७) स्वद्रव्य की रक्षकता पर लक्ष रखो।
(८) परद्रव्य की धारकता तत्काल छोड़ो।
(९) पर द्रव्य की रमणता तत्काल तजो।
(१०) पर भाव से विरक्त होओ। (श्रीमद् राजचन्द्र पाना–१३)

१७. भावशक्ति–विद्यमान अवस्थावाले! (अमुक अवस्था जिसमें विद्यमान हो ही ऐसे रूप भावशक्ति)

भावशक्ति–(कर्ता–कर्म आदि) कारकों के अनुसार जो क्रिया जिससे रहित भवनमात्र मयी) (होने मात्रमयी करने मात्रमयी)

भावाय–आत्मद्रव्य, पुरुष समान 'प्रवर्तती स्त्री की तरह, तत्त्वकाल के पर्यायरूप उल्लसित हो प्रकाशित है, प्रतिभासता है।

(प्रवचनसार नय–१५)

१८. नित्य स्वाध्याय—

(१) समयसार गाथा १ से १६ (२) समयसार ४७ शक्ति (३) प्रवचनसार परिशिष्ट–४७ नय (४) प्रवचन सार अलिंग ग्रहण–२० बोल गाथा १७२ (५) अव्यक्त के छे बोल (६) श्रीमद् राजचन्द्रजी के १० बोल (स्व द्रव्य अन्य द्रव्य भिन्न भिन्न देखो) (७) पांच बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर (८) २४ तीर्थंकर।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

१९. पर में अकिंचित्कर होने से ये अध्यवसान स्वयं की अर्थ क्रिया करनेवाला नहीं। (समयसार गाथा–२६७)

२०. दसणभट्ठा भट्ठा दसणभट्ठस्य णत्थि णिव्वाणं।
सिज्झंति चरियभट्ठा दसणभट्ठा ण सिज्झंति।। (दर्शनपाहुड़ गाथा–३)

२१. जीवादिबहितच्च हेममुवापदेयमप्पणो अप्पा।
कम्मोपाधिसमुभ्भवगुणपज्ञाएहिं वदिरित्तो।।
(जीवादि सात तत्त्वों को समूह पर द्रव्य होने के कारण वास्तवमें उपादेय नहीं) (नियमसार गाथा–३८)

२२. पुव्वत्तसयलभावा परदव्वं परसहावमिदि हेयं।
सगदव्वमुवादेयं अतरतच्च हवे अप्पा।।
(जो कोई विभावगुण पर्याय है वे शुद्ध निश्चय नय के बल से हेय है कारण कि वे पर-भाव है और इसलिये ही पर द्रव्य है।) (नियमसार गाथा–५०)

२३. एक ही समयमें सर्वदर्शित्व शक्ति और सर्वज्ञशक्ति है ये अद्भुत रस है। अध्यात्मपंच संग्रह (परमात्मपुराण पेज–५२)

२४. प्रवचनसार पृ. १५० अनुभव प्रकाश पृ. ६, राजवार्तिक पृ. ५५९, पद्मनंदी पंचविशंतिका पृ. १८१, परमात्मपुराण पृ. ३५ के आधार से दूसरी शक्तियाँ।

(१) समकित
(२) चारित्र
(३) स्वयंसिद्धत्व
(४) अज
(५) अखंडता
(६) विमल
(७) भेद
(८) अभेद
(९) नास्ति
(१०) साकार

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

(११) निराकार
(१२) वस्तुत्व
(१३) अचल
(१४) उर्ध्वगमनत्व
(१५) सत्
(१६) असत्
(१७) सूक्ष्म
(१८) स्थूल
(१९) अप्रमेयत्व
(२०) अन्यत्व
(२१) अनन्त अगुरुलघुत्व
(२२) भव्य
(२३) अभव्य
(२४) सर्वगतत्व
(२५) द्रव्यत्व
(२६) अवगाहन
(२७) सूक्ष्म
(२८) अगुरुलघु
(२९) अव्याबाध
(३०) विभाव
(३१) योग
(३२) अवगाहन
(३३) क्रियावती
(३४) भोक्तृत्व
(३५) असर्वगतत्व
(३६) अनादिसंतति वनंधबद्धत्व
(३७) पूर्ण
(३८) नित्य
(३९) परमभाव
(४०) निजधर्म भाव
(४१) ध्रुवभाव
(४२) केवल भाव
(४३) शाश्वत भाव
(४४) अतुलभाव
(४५) अछेद्यभाव
(४६) अमित भाव
(४७) प्रकाशभाव
(४८) अपार महिमा भाव
(४९) अकलंक भाव
(५०) अकर्मभाव
(५१) अधर भाव
(५२) अरवेदभाव
(५३) निःसंसार भाव
(५४) कल्याण भाव

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

२५. अब अनेकान्त की विशेष चर्चा करते हैं।

१. क्रमरूप और अक्रमरूप अनंत धर्म समूह जो कोई जैसा जितना लक्षित होता है वो सभी सही में एक आत्मा है।

२. ज्ञान मात्र एक भाव में अंतःपातिनी अनन्त शक्ति उछलती है।

३. क्रमवर्तीरूप और अक्रमवर्तीरूप वर्तन जिसका लक्षण है।

४. एक-एक शक्ति अनन्त में व्यापक है।

५. एक शक्ति अनन्त का निमित्त है।

६. एक शक्ति द्रव्य-गुण-पर्याय में व्याप्त रहती है।

७. एक शक्ति में ध्रुव–उपादान क्षणिक–उपादान है।

८. एक एक शक्ति में व्यवहार का अभाव है।

९. वो ही अनेकान्त है स्याद्वाद है।

१०. शक्ति पारिणामिक भाव से है।

११. कर्ता आदि छः कारक अभिन्न हैं और निरपेक्ष है।

१२. एक–एक शक्ति में अनन्त शक्ति का रूप है।

१३. जन्मक्षण वही नाशक्षण है।

१४. उत्पाद, उत्पाद के कारण होता है।

१५. काल लब्धि

१६. स्वयं स्वयं के अवसर में होता है।

१७. निश्चय = व्यवहार

१८. शक्ति और शक्तिवान का भेद भी दृष्टि का विषय नहीं है।

१९. क्रमवर्ती ज्ञानपर्याय, ये पर को जाने ये भी व्यवहार।

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

२०. जाननेवाला जाननेवाला ही है ऐसे स्वस्वामी अंश से क्या साध्य है।

२१. राग को उपादेय माने, वो आत्मा को हेय मानता है। आत्मा को उपादेय माने, वो राग को हेय मानता है।

२२. हरेक शक्ति में अकार्य–कारण का रूप है।

२३. हरेक शक्ति में त्याग–उपादान शून्यत्व है।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

ॐ

नमो चतुर्विध आराधनाय नमो नमः

(१) णमो जिणाणं
(२) णणो ओहिजिणाणं
(३) णमो परमोहिजिणाणं
(४) णमो सव्वोहि जिणाणं
(५) णमो अणंतोहिजिणाणं
(६) णमो कोट्टबुद्धिणं
(७) णमो बीजबुद्धिणं
(८) णमो पदाणुसारीणं
(९) णमो संमिण्णसोदाराणं
(१०) णमो उदुमदीणं
(११) णमो विउलमदीणं
(१२) णमो दसपुव्वियाणं
(१३) णमो चोद्दसपुव्वियाणं
(१४) णमो अट्ठंगमहाणि मित्तकुसलाणं
(१५) णमो विउव्वणपत्ताणं
(१६) णमो विज्ञाहराणं
(१७) णमो चारणाणं
(१८) णणो पण्णसमणाणं
(१९) णमो आगासगामीणं
(२०) णमो आसीविसाणं
(२१) णमो दीट्ठिविसाणं
(२२) णमो उग्गतवाणं
(२३) णमो दित्ततवाणं
(२४) णमो तत्ततवाणं
(२५) णमो महातवाणं
(२६) णमो घोरतवाणं
(२७) णमो घोरपरक्कमाणं
(२८) णमो घोरगुणाणं
(१९) णमोऽघोरगुर्णबमंचारीणं
(३०) णमो आमोसहिपत्ताणं
(३१) णमो खेलोसहिपत्ताणं
(३२) णमो जल्लोसहिपत्ताणं
(३३) णमो विट्ठोसहिपताणं
(३४) णमो सत्वोसहिपत्ताणं
(३५) णमो मणबलीणं
(३६) णमो बचिवलीणं
(३७) णमो कायबलीणं
(३८) णमो खीरसवीणं
(३९) णमो सप्पिसवीणं
(४०) णमो महुसवीणं
(४१) णमो अमडसवीणं
(४२) णमो अक्खीणमहाणसाणं
(४३) णमो लोस सव्वीसद्धायदणाणं
(४४) णमो बद्धमाणबुद्धरिसिस्स

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थितिमें हुई दिगम्बर जैन मन्दिरो की प्रतिष्ठा

				विक्रम संवत	
(१)	सोनगढ़	जिनमन्दिर	फागण सुद–२	१९९७	श्री सीमन्धर भगवान पंचकल्याणक
(२)	सोनगढ़	समवसरण मंदिर	वैशाख वद–९	१९९८	श्री सीमंधर भगवान पंचकल्याणक
(३)	वींछीया	जिनमन्दिर	फागण सुद–७	२००५	श्री चंद्रप्रभु भगवान पंचकल्याणक
(४)	लाठी	जिनमन्दिर	जेठ सुद–५	२००५	श्री सीमंधर भगवान पंचकल्याणक
(५)	राजकोट	जिनमंदिर	फागण सुद–१२	२००६	श्री सीमंधर भगवान पंचकल्याणक
(६)	सोनगढ़	मानस्तंभजी	चैत्र सुद–१०	२००९	श्री सीमंधर भगवान पंचकल्याणक
(७)	पोरबंदर	जिनमंदिर	फागण सुद–३	२०१०	श्री पार्श्वनाथ भगवान पंचकल्याणक
(८)	मोरबी	जिनमंदिर	चैत्र सुद–२	२०१०	श्री महावीर भगवान पंचकल्याणक
(९)	वांकानेर	जिनमंदिर	चैत्र सुद–१३	२०१०	श्री वर्द्धमान भगवान पंचकल्याणक
(१०)	वढ़वाण	जिनमंदिर	चैत्र वद–८	२०१०	श्री सीमंधर भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(११)	सुरेन्द्रनगर	जिनमंदिर	वैशाख सुद–३	२०१०	श्री शान्तिनाथ भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(१२)	राणपुर	जिनमंदिर	वैशाख सुद–१३	२०१०	श्री महावीर भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(१३)	बोटाद	जिनमंदिर	वैशाख वद–७	२०१०	श्री श्रेयांसनाथ भगवान वेदी प्रतिष्ठा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

(१४)	उमराळा	जिनमंदिर	जेठ सुद–४	२०१०	श्री सीमंधर भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(१५)	सोनगढ़	नूतन जिनमंदिर	कारतक सुद–१२	२०१३	श्री नेमिनाथ भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(१६)	पालेज	जिनमंदिर	मागशर सुद–११	२०१३	श्री अनन्तनाथ भ. वेदी प्रतिष्ठा
(१७)	लींबडी	जिनमंदिर	वैशाख सुद–१३	२०१४	श्री पार्श्वनाथ भ. पंचकल्याणक
(१८)	मुंबई	जिनमंदिर	महा सुद–६	२०१५	श्री सीमंधर भगवान, पंचकल्याणक
(१९)	खेरागढ	जिनमंदिर	चैत्र सुद–१	२०१५	श्री शान्तिनाथ भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(२०)	वडिया	जिनमंदिर	चैत्र सुद–६	२०१६	श्री नेमिनाथ भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(२१)	जेतपुर	जिनमंदिर	महा सुद–११	२०१६	श्री श्रेयांसनाथ भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(२२)	गोंडल	जिनमंदिर	महा सुद–१५	२०१६	श्री शान्तिनाथ भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(२३)	जामनगर	जिनमंदिर	महा सुद–७	२०१७	श्री महावीर भगवान पंच कल्याणक
(२४)	सावरकुण्डला	जिनमंदिर	फागण सुद–१२	२०१७	श्री शान्तिनाथ भगवान वेदी प्रतिष्ठा
(२५)	जोरावरनगर	जिनमंदिर	वैशाख सुद–१३	२०१९	श्री आदिनाथ भ. पंचकल्याणक
(२६)	दहेगाम	जिनमंदिर	वैशाख वद–८	२०१९	श्री महावीरस्वामी वेदी प्रतिष्ठा
(२७)	रखियाल	जिनमंदिर	फागण वद–३	२०२०	श्री नेमिनाथ भ. वेदी प्रतिष्ठा
(२८)	भोपाल	जिनमंदिर	जेठ सुद–५	२०१९	श्री महावीर स्वामी वेदी प्रतिष्ठा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

(२९)	बोटाद	जिनमंदिर ऊपर	चैत्र सुद–८	२०२०	वेदी प्रतिष्ठा
(३०)	दादर	जिनमंदिर	वैशाख सुद–११	२०२०	श्री महावीर स्वामी तथा
		समवशरण			सीमंधर भगवान पंचकल्याणक
(३१)	उज्जैन	जिनमंदिर	महा वद ६	२०२१	श्री सीमंधर स्वामी वेदी प्रतिष्ठा
(३२)	भोपाल	जिनमंदिर		२०२१	श्री आदिनाथ वेदी प्रतिष्ठा
(३३)	राजकोट	समवसरण और			
		मानस्तंभजी	वैशाख सुद–१२	२०२१	श्री सीमंधर स्वामी पंचकल्याणक
(३४)	जसदण	जिनमन्दिर	पोष वद–८	२०२३	श्री महावीर स्वामी वेदी प्रतिष्ठा
(३५)	आंकडिया	जिनमंदिर	महा सुद–१	२०२३	श्री महावीर स्वामी पंचकल्याणक
(३६)	हिंमतनगर	जिनमंदिर	महा सुद–११	२०२३	श्री पार्श्वनाथ भगवान पंचकल्याणक
(३७)	जयपुर	जिनमंदिर	फागण सुद–२	२०२३	श्री सीमंधर स्वामी वेदी प्रतिष्ठा
(३८)	उदयपुर	जिनमंदिर	चैत्र वद–८	२०२३	श्री चन्द्रप्रभु वेदी प्रतिष्ठा
(३९)	अहमदाबाद	जिनमंदिर	फागण सुद–५	२०२५	श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक
(४०)	रणासण	जिनमंदिर	फागण वद–२	२०२५	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक
(४१)	मलाड	जिनमंदिर	वैशाख सुद–७	२०२५	श्री आदिनाथ पंचकल्याणक (वीस विहरमान)

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

(४२)	घाटकोपर	जिनमंदिर	वैशाख सुद–८	२०२५	श्री नेमिनाथ पंच कल्याणक
(४३)	इन्दौर (तिलक नगर)	जिनमंदिर	वैशाख वद–५	२०२५	श्री वेदी प्रतिष्ठा
(४४)	मक्सी(पार्श्वनाथ)		वैशाख वद–७	२०२५	श्री पार्श्वनाथ वेदी प्रतिष्ठा
(४५)	अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ शीरपूर		फागण सुद–२	२०२६	श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक
(४६)	जलगाँव	जिनमंदिर	फागण सुद–६	२०२६	श्री वेदी प्रतिष्ठा आदिनाथ भ.
(४७)	कानातळाव	जिनमंदिर	चैत्र वद-११	२०२६	श्री धर्मनाथ वेदी प्रतिष्ठा
(४८)	भावनगर	जिनमंदिर	वैशाख सुद–३	२०२६	श्री सीमंधर स्वामी पंच कल्याणक
(४९)	अमरेली	जिनमंदिर	फागण सुद–५	२०२८	श्री शान्तिनाथ वेदी प्रतिष्ठा
(५०)	घाटकोपर	जिनमंदिर(सर्वोदय)	फागण वद–३	२०२८	श्री आदिनाथ स्वामी पंचकल्याणक
(५१)	फतेपुर	समवशरण	वैशाख सुद–३	२०२८	श्री सीमंधर स्वामी पंचकल्याणक
(५२)	रामपुरा	जिनमंदिर	वैशाख वद–५	२०२८	श्री आदिनाथ वेदी प्रतिष्ठा
(५३)	बामणवाडा	जिनमंदिर	वैशाख सुद–६	२०२८	श्री आदिनाथ वेदी प्रतिष्ठा
(५४)	जाम्बूडी	जिनमंदिर	कारतक सुद–१३	२०३०	श्री वेदी प्रतिष्ठा
(५५)	सोनगढ़	परमागम मंदिर	फागण सुद–१३	२०३०	श्री महावीर स्वामी पंचकल्याणक
(५६)	गढ़डा	जिनमंदिर	वैशाख वद–२	२०३०	श्री पार्श्वनाथ वेदी प्रतिष्ठा

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

(५७)	जुनागढ़	मानस्तंभ	महा सुद–५	२०३१	श्री नेमिनाथ वेदी प्रतिष्ठा
(५८)	भोपाल	जिनमंदिर पीपलानी	महावद–३	२०३१	श्री महावीर स्वामी पंचकल्याणक
(५९)	खूरई	मानस्तंभ	महावद–७	२०३१	श्री आदिनाथ वेदी प्रतिष्ठा
(६०)	सनावद	समवसरण	महा वद–११	२०३१	श्री सीमंधर स्वामी वेदी प्रतिष्ठा
(६१)	बेंगलोर	जिनमंदिर समवसरण	चैत्र सुदी १३	२०३१	श्री महावीर स्वामी पंच कल्याणक
(६२)	वढ़वाण	जिनमंदिर	फागण सुद–८	२०३२	श्री वर्धमान स्वामी पंच कल्याणक
(६३)	मद्रास	जिनमंदिर	फागण सुद–३	२०३४	श्री महावीर स्वामी पंच कल्याणक
(६४)	कुरावड़	जिनमंदिर	वैशाख सुद–१३	२०३४	श्री सीमंधर स्वामी पंच कल्याणक
(६५)	नाईरोबी	जिनमंदिर	महा सुद–२	२०३६	श्री महावीर स्वामी पंच कल्याणक
(६६)	वडोदरा	जिनमंदिर	फागण सुद–१३	२०३६	श्री आदिनाथ पंच कल्याणक

पूज्य गुरुदेव के द्वारा ३३ पंचकल्याणक और ३३ वेदी प्रतिष्ठा हुईं थी।

卐 卐 卐

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com

Version 001: Updates at http://www.AtmaDharma.com & http://www.AtmaDharma.org

दंसण मूलो धम्मो

श्री जैन मुमुक्षु महिला मंडळ. देवलाली

Please report errors to Ramaben Parekh: WhatsApp +91 90115 91078 or email ramabenparekh45@gmail.com